

असोज - २

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष ३३, अङ्क १२

२०८१ असोज १६-३०

पूर्णाङ्क ७७४



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७१२, ४२००७२९, ४२००७५०, Ext.२२६९ (सम्पादक), २२७० (सम्पादन शाखा), २१७० (छापाखाना), २२७४ (बिक्री)

टोल फ्री : १६६०-०१-३३३५५, फ्याक्स: ४२००७४९, पो.ब.नं.२०४३८

Email: [info@supremecourt.gov.np](mailto:info@supremecourt.gov.np), [admin@supremecourt.gov.np](mailto:admin@supremecourt.gov.np) / Web: [www.supremecourt.gov.np](http://www.supremecourt.gov.np)

सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

|  |              |
|--|--------------|
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत                      | - अध्यक्ष    |
| माननीय न्यायाधीश श्री सुनिलकुमार पोखरेल, सर्वोच्च अदालत                    | - सदस्य      |
| मुख्य रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्रराज ढकाल, सर्वोच्च अदालत                    | - सदस्य      |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री टेकबहादुर घिमिरे, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय   | - सदस्य      |
| रजिस्ट्रार श्री भद्रकाली पोखरेल, सर्वोच्च अदालत                            | - सदस्य      |
| अधिवक्ता श्री सुरज खत्री, उपाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन                    | - सदस्य      |
| वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरि शंकर निरौला, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन | - सदस्य      |
| डा. कृष्णप्रसाद बस्याल, डिन, त्रिभूवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय           | - सदस्य      |
| सहरजिस्ट्रार श्री अर्जुनप्रसाद कोइराला, सर्वोच्च अदालत                     | - सदस्य सचिव |

सम्पादक : श्री कालीबहादुर साम्यु लिम्बू

सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत्  
कर्मचारीहरू

शाखा अधिकृत श्री सुजता उप्रेती  
शाखा अधिकृत श्री सुकराम मोक्तान  
शाखा अधिकृत श्री विनिता महर्जन  
शाखा अधिकृत श्री समिता श्रेष्ठ  
नायब सुब्बा श्री सन्तोष घिमिरे  
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा  
कम्प्युटर अपरेटर श्री विदुर खड्का  
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी  
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युतप्रसाद दाहाल

भाषाविद् : श्री रामचन्द्र फुयाल

बिक्री शाखा

नायब सुब्बा श्री खिमा पोखरेल

मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल  
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल  
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी  
सिनियर कम्पोजिटर श्री श्यामकृष्ण प्रजापति  
सिनियर प्रेसम्यान श्री सविता पोखरेल  
सिनियर प्लेटमेकर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने  
सिनियर बुकबाइन्डर श्री तारा वाग्ले  
सहायक कार्टोग्राफर श्री विपिन अधिकारी  
बुकबाइन्डर श्री सरिता चक्रधर  
बुकबाइन्डर श्री मदन तिमल्सिना  
बुकबाइन्डर श्री कृष्णप्रसाद घिमिरे  
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला  
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी  
कार्यालय सहयोगी श्री धनमाया नगरकोटी  
कार्यालय सहयोगी श्री रमेश नेपाल

विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा  
प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू

|               |           |              |           |
|---------------|-----------|--------------|-----------|
| पूर्ण इजलास   |           | इजलास नं. ७  | १२        |
| संयुक्त इजलास |           | इजलास नं. ८  | ११        |
| इजलास नं. १   | ५         | इजलास नं. ११ | ४         |
| इजलास नं. ४   | ७         | इजलास नं. १५ | ३         |
| इजलास नं. ६   | १२        | इजलास नं.    |           |
| <b>जम्मा</b>  | <b>२४</b> | <b>जम्मा</b> | <b>३०</b> |

कूल जम्मा २४ + ३० = ५६

# नेपाल कानून पत्रिकामा

प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि हालसम्म)  
हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)

मा जानुहोला ।

## खोज्ने तरिका

सर्वप्रथम [www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np) लगइन गरेपश्चात् देखिने पृष्ठमा **शब्दबाट** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गरी हरियो बटनमा रहेको खोज्नुहोस् भन्ने बटनलाई थिची खोजी गर्न सक्नुहुनेछ । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा मुद्दाको किसिम, मुद्दाको नाम एवं निर्णय नं. तथा ने.का.प. विवरणमा रहेका विविध शीर्षकबाट आफूले चाहेअनुसार फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेतबाट हेर्न सक्नुहुनेछ ।

यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्ने छः

सअ बुलेटिन, २०८०, ... - १ वा २, पृष्ठ ....

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०८१, असोज - २, पृष्ठ १

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

## सूचना

"नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन" को "वार्षिक ग्राहक" बन्न चाहनेका लागि २०७६ वैशाख अङ्क देखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई नेपाल कानून पत्रिका रु.१५० र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रु.४० कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ ।

मूल्य रु.४०।-

मुद्रक: सर्वोच्च अदालत, छापाखाना

## विषयसूची

| क्र.सं.            | विषय  | पक्ष / विपक्ष  | पृष्ठ          |
|--------------------|---|--|----------------|
| <b>इजलास नं. १</b> |   |  | <b>१ - ४</b>   |
| १.                 | कर्तव्य ज्यान                                 | नेपाल सरकार वि. तिर्थ घले  | १              |
| २.                 | निषेधाज्ञा                                    | मिनादेवी वैश्यसमेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय, बबरमहल, काठमाडौंसमेत           | १              |
| ३.                 | जबरजस्ती करणी                                 | नेपाल सरकार वि. सुरेशबहादुर विश्वकर्मा   | २              |
| ४.                 | जबरजस्ती करणी उद्योग                          | नेपाल सरकार वि. दिनेश ढकाल   | ३              |
| ५.                 | कर्तव्य ज्यान                                 | माया मगर शेर्पासमेत वि. नेपाल सरकार  | ३              |
| <b>इजलास नं. ४</b> |   |  | <b>४ - ११</b>  |
| ६.                 | कर्तव्य ज्यान                                 | नेपाल सरकार वि. आइतबहादुर तामाङ  | ४              |
| ७.                 | उत्प्रेषण / परमादेशसमेत                       | डा.गणेश रेग्मी वि. नेपाल सरकार प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत | ५              |
| ८.                 | बन्दी प्रत्यक्षीकरण                           | नवल किशोर साह वि. जिल्ला सरकारी वकिलको कार्यालय, मोरङसमेत                                | ६              |
| ९.                 | जबरजस्ती करणी                                 | नेपाल सरकार वि. अमुल थापा मगरसमेत  | ७              |
| १०.                | निर्णयसमेत बदर                                | सरिता ठाकुर वि. देवनारायण चौधरी  | ८              |
| ११.                | उत्प्रेषण                                     | सुनिलभक्त श्रेष्ठ वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय सिंहदरबारसमेत           | ९              |
| १२.                | उत्प्रेषण                                     | सरोजकुमार सिंह वि. मध्यक्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय हेटौंडा, मकवानपुरसमेत                   | १०             |
| <b>इजलास नं. ६</b> |   |  | <b>११ - २०</b> |
| १३.                | उत्प्रेषण                                     | ज्ञानु पौडेल अर्याल वि. प्रिमियर फाइनेन्स कम्पनी लिमिटेडसमेत                             | ११             |
| १४.                | उत्प्रेषण                                     | सुन्दर कार्की वि. रामेश्वर मानन्धर   | १२             |
| १५.                | उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत                    | कस्तुरीमैया श्रेष्ठ वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय डिल्लीबजार, चारखाल, काठमाडौंसमेत | १३             |
| १६.                | दूरसञ्चार सञ्चार प्रणालीमा प्रतिकूल असर परेको | नेपाल सरकार वि. अकवर मोहम्मद गद्दी   | १३             |

|     |  |  |    |                    |   |  |    |
|-----|--|--|----|--------------------|---|--|----|
| १७. | कर्तव्य ज्यान  | शान्ता प्रजापति वि. नेपाल सरकार, शिव भन्ने कृष्णकुमार प्रजापति वि. नेपाल सरकार                   | १४ |                    |   | तनुजादेवी वि. शान्ति देवीसमेत, शान्ती देवीसमेत वि. तनुजा कुमारी मुखिया भन्ने तनुजा देवीसमेत                                |    |
| १८. | उत्प्रेषण  | नवराज गिरी वि. सशस्त्र प्रहरी बल, सशस्त्र प्रहरी प्रधान कार्यालय, हलचोक, काठमाडौंसमेत            | १४ | २३.                | कर्तव्य ज्यान / ज्यान मार्ने उद्योग       | नेपाल सरकार वि. कालु भन्ने संजोग लिम्बूसमेत, चैते भन्ने सुनिल किस्कु वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. परिवर्तित नाम ४-०१-त | १८ |
| १९. | दर्ता बदर सार्वजनिक कायम                                       | विजयप्रताप पुरीसमेत वि. राजेन्द्रकुमार वर्मा, अखिलेश्वर पुरीसमेत वि. राजेन्द्रकुमार वर्मा        | १५ | २४.                | खिचोला मेटाई दिवाल घर भत्काई चलन चलाइपाउँ | अछेवर अहिर वि. काशिराम अहिरसमेत  | १९ |
| २०. | लिलाम बदर टिप्पणी आदेश बदर, जग्गा खिचोला हक कायम, लिखत बदरसमेत | गणपति चौधरी थारूसमेत वि. घुरनीदेवी थरुनी   | १६ | <b>इजलास नं. ७</b> |   | २० - ३०  |    |
|     |  |  |    | २५.                | वैदेशिक रोजगार कसुर                       | नेपाल सरकार वि. अल्लाहकोन गेडारा अमिला गिहानसमेत   | २० |
| २१. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण समेत                                       | गणेश गौतम वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहल, काठमाडौंसमेत  | १७ | २६.                | कर्तव्य ज्यान                             | जेठा अम्बर भन्ने ध्रुवबहादुर तामाङ वि. नेपाल सरकार   | २१ |
| २२. | धितो बदर रोक्का पत्र बदर                                       | कृषि विकास बैंक लि. शाखा कार्यालय, गौर, रौतहट वि. शान्तिदेवी गिरीसमेत, तनुजा कुमारी मुखिया भन्ने | १७ | २७.                | उत्प्रेषणसमेत                             | कल्पना कपाली वि. नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत   | २१ |

|     |  |   |    |
|-----|--|---|----|
| २८. | कर्तव्य ज्यान  | नरेन्द्र थापा मगर भन्ने<br>नरबहादुर थापा वि.<br>नेपाल सरकार, किशोर<br>थापा मगर वि. नेपाल<br>सरकार | २२ |
| २९. | जबरजस्ती<br>करण  | नेपाल सरकार वि. फेकु<br>सिंह वि. फेकु सिंह वि.<br>नेपाल सरकार                                     | २४ |
| ३०. | निषेधाज्ञा   | रसुल मियाँ वि. कासिम<br>मियाँसमेत   | २५ |
| ३१. | जालसाज   | भुटी खातुन भन्ने सविस<br>खातुनसमेत वि.<br>गमकलाल चौधरीसमेत  | २६ |
| ३२. | कर्तव्य ज्यान  | नेपाल सरकार वि.<br>मनोजकुमार साह सुडी   | २६ |
| ३३. | घर पर्खाल<br>भत्काई जग्गा<br>खिचोला मेटाई<br>चलन<br>चलाइपाऊँ | विष्णुदेवी पाण्डे वि.<br>रमेशकुमार पाण्डेसमेत   | २७ |
| ३४. | डाँका चोरी<br>(प्राचीन<br>स्मारक बुद्धको<br>मुर्ति चोरी)     | कुमार (थिङ) लामा वि.<br>नेपाल सरकार   | २७ |
| ३५. | उत्प्रेषण  | रामपुकार रौनियार वि.<br>जिल्ला अनौपचारिक<br>शिक्षा समिति, पर्सासमेत                               | २८ |
| ३६. | कुत मोही   | चन्द्रवती देवी कोइरीन<br>वि. भोला सहनी मलाह   | २९ |

| इजलास नं. ८ |  |   | ३० - ४१ |
|-------------|--|---|---------|
| ३७.         | परमादेशसमेत                              | निरकुमार राई वि.<br>षडानन्द नगरपालिका<br>दिङ्ला, भोजपुरसमेत                                       | ३०      |
| ३८.         | कर्तव्य ज्यान<br>तथा<br>जबरजस्ती<br>चोरी | दिनेश राउत वि. नेपाल<br>सरकार, नेपाल सरकार<br>वि. दनेश राउत                                       | ३१      |
| ३९.         | कर्तव्य ज्यान                            | नरेश राई वि. नेपाल<br>सरकार   | ३२      |
| ४०.         | लिखत बदर<br>दर्ता बदर दर्ता<br>कायम      | पुरुषोत्तम लामिछाने वि.<br>प्रकाशमान शाक्य  | ३३      |
| ४१.         | निषेधाज्ञा                               | रामकिसुन ठाकुर<br>बरहीसमेत वि. हरिश्चन्द्र<br>ठाकुर बरही  | ३४      |
| ४२.         | कर्तव्य ज्यान                            | नरकुमार भन्ने सुमन राई<br>वि. नेपाल सरकार   | ३४      |
| ४३.         | अदालतको<br>अवहेलना                       | चमेलीदेवी रौनियार वि.<br>नेपाल आयल निगम<br>लिमिटेड, केन्द्रीय<br>कार्यालय बबरमहल,<br>काठमाडौंसमेत | ३५      |
| ४४.         | मानाचामल                                 | गणेश सुवेदी वि. प्रेस<br>सुवेदी गिरी (गिरी)   | ३६      |
| ४५.         | दोहोरो नक्सा<br>दर्ता लिखत<br>बदर        | अङ्गबहादुर कुँवर वि.<br>शाही शुक्लाफाँटा<br>वन्यजन्तु आरक्ष<br>कार्यालय,<br>कञ्चनपुरसमेत          | ३७      |

|              |                           |  |         |
|--------------|---------------------------|--|---------|
| ४६.          | उत्प्रेषणयुक्त<br>परमादेश | राजु खरेलसमेत वि.<br>रत्नेश्वरी श्रेष्ठसमेत                            | ३८      |
| ४७.          | नाता कायम                 | संजयकुमार मण्डल<br>केवट वि. रजिनादेवी<br>मण्डल                         | ४०      |
| इजलास नं. ११ |                           |  | ४१ - ४३ |
| ४८.          | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण    | सरोज गौतम वि. नेपाल<br>सरकार, गृह<br>मन्त्रालयसमेत                     | ४१      |
| ४९.          | उत्प्रेषणयुक्त<br>परमादेश | विष्णुप्रसाद थारू वि.<br>काठमाडौं जिल्ला<br>अदालत, बबरमहल,<br>काठमाडौं | ४१      |
| ५०.          | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण    | डोल्मा तामाङ वि.<br>काठमाडौं जिल्ला<br>अदालत, बबरमहल,<br>काठमाडौंसमेत  | ४२      |

|              |                        |   |         |
|--------------|------------------------|---|---------|
| ५१.          | बन्दी<br>प्रत्यक्षीकरण | जियालाल महतो वि.<br>उच्च अदालत<br>पाटनसमेत  | ४२      |
| इजलास नं. १५ |                        |   | ४३ - ४४ |
| ५२.          | परमादेश                | सिम्रन मानन्धर वि.<br>नेपाल सरकार, गृह<br>मन्त्रालय, सिंहदरबार,<br>काठमाडौंसमेत         | ४३      |
| ५३.          | उत्प्रेषणसमेत          | नानीहेरा बज्राचार्य वि.<br>नेपाल सरकार, गृह<br>मन्त्रालय, सिंहदरबार,<br>काठमाडौंसमेत    | ४३      |
| ५४.          | बहुविवाह               | सरस्वती तिमिल्सिना<br>लोहनी वि. रेणुका<br>कुमारी पाण्डे लोहनीको<br>जाहेरीले नेपाल सरकार | ४४      |

इजलास नं. १

१

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७६-RC-०१४९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. तिर्थ घले

यस अदालतको आदेश अनुसार निजको पुनः मानसिक स्वास्थ्य परीक्षणमा निज प्रतिवादीले Olanzapine 5 mg. नियमित सेवन गरिरहेको तर निजको मानसिक अवस्था सामान्य रहेको भन्ने प्रतिवेदन देखिन्छ । तथापि प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष आफ्नो शारीरिक अवस्था ठिक छ । सोधिएका प्रश्नको सही उत्तर दिन सक्छु भनी घटनाको बारेमा सिलसिलेवार रूपमा बयान गरेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीको मौकामा गरेको बयान र मौकामा कागज गर्ने प्रतिवादीका आमा रहेका हिमचुली घलेसमेतले गरेको बकपत्रको मूल बेहोरासँग मेल खाने देखिन्छ । यसबाट अनुसन्धानको क्रममा निजलाई सोधिएका प्रश्नहरूको आसय अनुसारको जवाफ दिएको मिसिलबाट देखियो । यसबाट वारदातको समयमा प्रतिवादी मानसिक रोगबाट ग्रसित रहेको भन्ने पुष्टि भएको देखिँदैन । आफ्नै बाबु र काकालाई कर्तव्य गरी मारेको अवस्थापश्चात् त्यसको जरियाबाट प्रतिवादी मानसिक रोगबाट थप ग्रसित हुन सक्ने सम्भावना रहेको देखिन्छ । यसर्थ प्रतिवादीको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन, निजले मौकामा गरेको बयान बेहोरासमेतका प्रमाणहरूबाट निजले कामको प्रकृति र परिणाम थाहा नपाउने गरी मानसिक सन्तुलन ठिक थिएन भन्ने पुष्टि हुन नसकिने ।

आवेशप्रेरितको कडीबाट सुरुवात भएको अवस्थामा पनि प्रस्तुत वारदातमा अर्को व्यक्ति धन घलेसमेतको टाउको जस्तो संवेदनशील स्थानमा ताकेर प्रहार गर्नु र सो क्रममा अन्य व्यक्तिहरूसमेत

घाइते हुने अवस्था भई मिनराज घले र धन घलेलाई कर्तव्य गरी मारेको देखिएबाट प्रतिवादीको आपराधिक कार्य मनसाय प्रेरित हत्या भएको मान्नुपर्ने देखियो । यस अवस्था भएबाट यस अदालतको प्रत्यर्थी झिकाउने आदेश बेहोरा र प्रतिवादीको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् वैतनिक अधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

सुरु लमजुङ जिल्ला अदालतबाट अभियोग मागदाबीबमोजिम प्रतिवादी तिर्थ घलेलाई दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. विपरीत कसुरमा निज प्रतिवादीलाई सोही ऐनको सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्मकैद सजाय हुने गरी फैसला भई साधक जाँचको लागि उच्च अदालत पोखरामा पेस भएकोमा मिति २०७५।१।५ मा निज प्रतिवादीलाई सजायको हकमा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४० को उपदफा (२) एवं फौजदारी कसुर सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन ऐन, २०७४ को दफा ५ मा भएको कानूनी प्रावधानबमोजिम सर्वस्वको सजाय नहुने हुँदा जन्मकैदको सजाय हुने भनी सुरु फैसला सदर गरी यस अदालतमा साधक जाँचको लागि पेस भएकोमा उक्त फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : शिवबहादुर थापा

कम्प्युटर - कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७८ साल माघ १७ गते रोज २ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७१-CI-११५७, निषेधाज्ञा, मिनादेवी वैश्यसमेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय, बबरमहल, काठमाडौंसमेत

सामान्यतः निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुनको लागि निवेदकको कानूनप्रदत्त हकमा आघात हुने गरी गैरकानूनी तवरले कुनै काम कारबाही हुन लागेको अवस्थामा सो काम कारबाही तत्काल अगाडि

नबढाउनु र यथास्थितीमा राख्नु भनी जारी हुने आदेश हो । निषेधाज्ञाको आदेश काम सम्पन्न भइसकेको अवस्थामा जारी हुने होइन । काम सम्पन्न भइसकेको अवस्थामा उक्त कार्यबाट मर्का परेको पक्षले स-प्रमाण कानूनबमोजिमको वैकल्पिक उपचारको मार्ग अवलम्बन गर्न सक्ने नै हुन्छ । यी पुनरावेदकहरूको पुनरावेदन जिकिरमा २०४४ सालको रावल आयोगबमोजिमको बाटो विस्तारमा आफूहरूको कुनै आपत्ति नरहेको भन्नेसमेत उल्लेख गरेको पाइन्छ । सोही २०४४ सालको रावल आयोगबमोजिमको नापी नक्सालाई नै आधार मानी कानूनबमोजिम सडक विस्तार, ढल निर्माणलगायतका विकास निर्माणको काम कारबाही भएको देखिएको भन्नेसमेतका आधारमा निषेधाज्ञाको रिट खारेज गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको आदेशलाई अन्यथा मान्न नमिल्ने ।

काठमाडौं उपत्यका विकास प्राधिकरणले शंखमुल नयाँ बानेश्वर खण्डमा गरेको सडक विस्तार तथा ढल निर्माणको कार्यबाट निवेदकहरूको घरजग्गामा कुनै क्षति पुगेको वा पुग्न सक्ने भन्ने कुराको विश्वसनीय र वस्तुनिष्ठ आधार, कारण र प्रमाण यी पुनरावेदकहरूले देखाउन नसकेको र जुन कार्यको आशङ्का गरिएको हो सो कार्य नै सम्पन्न भइसकेको भन्ने देखिँदा निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदकहरूको पुनरावेदन जिकिर एवम् यस अदालतबाट प्रत्यर्थी झिकाउने भनी भएको आदेशसँग सहमत हुन नसकिने ।

निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदन खारेज गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७१।१।३० मा भएको आदेश मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : कुबेर पाण्डे

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७८ साल पुस १६ गते रोज ६ शुभम् ।

- यसैसाथ ०७१-CI-११५६, परमादेश,

मिनादेवी वैश्य वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय, बबरमहल, काठमाडौंसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७५-CR-०७२१, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. सुरेशबहादुर विश्वकर्मा**

प्रस्तुत घटनामा पीडितका पति परिवर्तित नाम उ बहादुर प्रत्यक्षदर्शी रहेको र निज कोठाभित्र जाँदा प्रतिवादी भागी गएको भन्ने देखिन्छ । मिसिल सामेल रहेका माथि उल्लिखित आधार, प्रमाणहरूबाट पीडित परिवर्तित नाम दमौली-८ लाई यी प्रतिवादी सुरेशबहादुर विश्वकर्माले करणी गर्ने उद्देश्यले निज पीडित सुतिरहेको कोठाभित्र प्रवेश गरी पीडितलाई करणी गर्न निजले ओडेको कम्मल तान्न खोजे पनि पीडितले हारगुहार गर्दा सोही समयमा पीडितको श्रीमान् कोठाभित्र आएबाट जबरजस्ती करणी हुन नपाएको भन्ने वारदातको अवस्था र स्थिति पुष्टि हुन आएको देखिन्छ । तसर्थ पीडित परिवर्तित नाम दमौली-८ उपर जबरजस्ती करणी भई नसकेको, सोको उद्योगसम्म गरेको देखिएको अवस्था भई निज प्रतिवादी सुरेशबहादुर विश्वकर्माले जबरजस्ती करणी उद्योगको कसुर गरेको ठहर्‍याई निजलाई ३ वर्ष कैद सजाय गरेको सुरु तनहुँ जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत पोखराको फैसलालाई मिसिल प्रमाणको रोहबाट अन्यथा भन्न मिल्ने स्थिति देखिएन । उच्च अदालतको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा बदर गरी प्रतिवादीलाई सुरु अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर एवं विद्वान् सहन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादी सुरेशबहादुर विश्वकर्माले जबरजस्ती करणीको उद्योगको कसुर गरेको ठहर्‍याई

निज प्रतिवादीलाई ३ वर्ष कैद सजाय गरेको सुरु तनहुँ जिल्ला अदालतको मिति २०७४।३।१५ को फैसला सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत पोखराको मिति २०७५।१।७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : तारादत्त बडु

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल आषाढ ४ गते रोज ५ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७३-CR-१५१७, जबरजस्ती करणी उद्योग, नेपाल सरकार वि. दिनेश ढकाल**

पीडित भनिएकी महिला वृद्धा, मानसिक सन्तुलन ठिक नभएको, सुस्त मनस्थितिकी रहे भएको कुरामा विवाद देखिँदैन । पीडित महिला वृद्धा र सुस्त मनस्थिति भएको कारण निजको अदालतमा बकपत्र हुन सकेको पनि देखिँदैन । जाहेरवालीले अदालतमा गरेको बकपत्रमा पनि सुनिल वि.क. भन्ने व्यक्ति आएर एउटा मान्छेले मकैबारीमा पीडितलाई कुटपिट गरेको थियो भनी भनेपछि चनौली प्रहरीमा गई प्रहरी र सुनिल वि.क.समेतका मानिसले दिनेशको घरमा गई सोधपुछ गर्दा निज दिनेश घरमा नभेटिएको र भोलिपल्ट पानी ट्याङ्कीनेर सुतिरहेको देखेपछि गाउँका केटाहरूले दिनेशलाई प्रहरीमा बुझाएका हुन् भनी बकपत्र बेहोरा लेखाएको देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दाको वारदात मिति २०७१।२।११ गते घटेको भनिएको र प्रतिवादी दिनेश ढकाललाई मिति २०७१।२।१५ मा पक्राउ गरी थुनुवा पुर्जी दिएको देखिन आउँछ । प्रस्तुत घटनाको प्रत्यक्षदर्शी कोही रहे भएको देखिँदैन । प्रतिवादीले अदालतसमक्ष बयान गर्दा आरोपित कसुरमा इन्कार रही मैले त्यस्तो नराम्रो काम गरेको भए मलाई तत्कालै गाउँलेहरूले समाती पाता कसेर राख्ने थिए भनी गरेको बयानलाई उल्लिखित तथ्यहरूबाट अन्यथा मान्न सकिने देखिएन । यस प्रकार मिसिल संलग्न प्रमाणबाट शंकारहित तवरले तथ्यगत आधारमा निज प्रत्यर्थी

प्रतिवादीले पीडितउपर जबरजस्ती करणीको उद्योगको कसुर गरेको भन्ने अभियोग दाबी समर्थित हुनसकेको देखिँदैन । पीडित र प्रतिवादी दुवैका यौनाङ्गमा सङ्घर्षका कुनै लक्षण नदेखिएको र प्रतिवादीले मैले मादक पदार्थ सेवन गरिराखेको थिएँ, नसाको सुरमा करणी गर्ने मनसायबाट निज वृद्ध महिलालाई देखेपछि समाएको हुँ भनी मौकामा बयान गरेको देखिएकोले प्रतिवादी दिनेश ढकालले जबरजस्ती करणीको उद्योगको आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने र प्रस्तुत मुद्दा आशय करणीमा परिणत गरिदिने गरी सुरु चितवन जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने देखिएन । तसर्थ पुनरावेदन अदालतको फैसला बदर गरी निज प्रत्यर्थी प्रतिवादी दिनेश ढकाललाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर एवं विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रत्यर्थी प्रतिवादी दिनेश ढकाललाई जबरजस्ती करणीको उद्योगको आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने र प्रस्तुत मुद्दा आशय करणीमा परिणत हुने गरी सुरु चितवन जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।३।२० मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौँडाको मिति २०७१।१२।२० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :- तारादत्त बडु

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल असार ४ गते रोज ५ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७७-CR-०२५४, कर्तव्य ज्यान, माया मगर शेरपासमेत वि. नेपाल सरकार**

तीनै जना प्रतिवादीहरूले अदालतसमक्ष बयान गर्दा, कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिए

तापनि मौकामा प्रतिवादीहरूले गरेको बयानलाई अन्यथा पुष्टि गर्न सकेको देखिएन । प्रतिवादीहरूले अनुसन्धानमा बयान गर्दा घटना क्रमलाई मालाकार रूपमा खुलाएको पाइन्छ । Autopsy report मा The cause of death is ascertained to be due to Blunt chest injury. भन्ने उल्लेख भएको र प्रतिवादीहरूले मृतक अम्बरबहादुर मगरलाई लुप्चे खोलाछेउको घुम्तीबाट कुमारी मगरले ढाँडतिर, मैले दाहिने हात र माया शेर्पाले बायाँ हात समाती खोलो तरेर अलि पर डिलमा पुगेर डिलबाट खोलातिर हुत्याइदिएको हो । त्यसपछि निज मृतक घोटो परेकोले मनिका रेग्मी मगर, कुमारी मगरले चुप्पीले टाउकोमा हानेको र माया शेर्पाले मुड्कीले हानेको हो । कति चोट लाग्यो थाहा भएन, भनी मौकामा प्रतिवादीहरूले गरेको बयानको बेहोराबाट मृतकको खुलेको वारदातको प्रकृति र मृतकको घटनास्थल लास प्रकृति मुचुल्काको विवरणसमेतबाट जाहेरवालाले यिनीहरू निर्दोष छन् भनी जाहेरी दरखास्तलाई खण्डन गरी गरिदिएको बकपत्र र निज प्रतिवादीहरूको इन्कारी विश्वासलायक नदेखिने ।

प्रतिवादीहरू मनिका रेग्मी मगर, कुमारी मगर र माया मगर शेर्पा मिली एकआपसमा सल्लाह गरी अम्बरबहादुर मगरलाई भिर बाटोबाट हुत्याई, धकेली लडाई, छुरी (चक्कु) ले समेत टाउकोको पछाडि प्रहार गरी मारेको पुष्टि भएकोले प्रस्तुत दफा आकर्षित हुने भई निज प्रतिवादीहरू मनिका रेग्मी मगर, कुमारी मगर र माया मगर शेर्पालाई अभियोग दाबीबमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने नै देखिएको यस अवस्थामा अभियोग दाबीबाट सफाई पाउँ भन्ने प्रतिवादीहरूको पुनरावेदन जिकिरसँग यो इजलास सहमत हुन नसकिने ।

मृतक अम्बरबहादुर राईको मृत्यु प्रतिवादीहरू मनिका रेग्मी मगर, कुमारी मगर र माया मगर शेर्पासमेतको कर्तव्यबाट भएकोले प्रतिवादीहरू मनिका

रेग्मी मगर, कुमारी मगर र माया मगर शेर्पासमेतलाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा १७७(१) बमोजिम कर्तव्य गरी ज्यान मारेको कसुरमा सोही ऐनको दफा १७७ (२) बमोजिम जन्मकैदको सजाय हुने गरी भएको सोलुखुम्बु जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत विराटनगर, अस्थायी इजलास ओखलढुङ्गाबाट मिति २०७६।११।०७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :- राजकुमार दाहाल

कम्प्युटर :- रमला पराजुली

मिति २०७८ साल माघ २३ गते रोज १ शुभम् ।

### इजलास नं. ४

६

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-RC-००७५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. आइतबहादुर तामाङ

प्रतिवादी स्वयंमूले अदालतमा भएको बयानमा समेत आफू र मृतकबिच जग्गासम्बन्धी विषयमा वादविवाद भएको थियो भन्ने तथ्यलाई स्वीकार गरेको देखियो । यी प्रतिवादीले पहिलेदेखि कमाउँदैआएको मृतक पूर्णबहादुरको खरबारी जग्गा निज पूर्णबहादुरले यी प्रतिवादीका छोरा काजी तामाङलाई भोग बन्धकीमा कमाउन दिएको र सोही विषयमा विवाद उठान भई दुवैबिच वादविवाद र झगडा भएको तथा सो क्रममा एक अर्काबिच बोलचालसमेत बन्द भएको तथा मृतकसँग आउजाउ नरहेको भन्ने देखियो । प्रतिवादीले मृतकलाई यसै विषयको रिसइवी लिई काट्छु मार्छु भन्दै गाउँघरमा धम्की दिने गरेका देखियो । यी प्रतिवादीले वारदातको दिन बजारमा आलु लगेर बेची प्राप्त रकमसमेतबाट गाउँकै डिल्ली भुजेलसँग खुकुरी किनेर ल्याएको देखियो । वारदात भएको दिन बिहान आलु लिई बजार जाने क्रममा

मृतकसँग बाटोमा भेट हुँदा वादविवाद भएको तथा बेलुका आलु बेचेर घर फर्कने क्रममा नरबहादुर तामाङको घरमा पुगेपछि मृतक पूर्णबहादुर निजको पछि लागि वादविवाद गर्दै सँगै घरतर्फ हिँडेको भन्ने नरबहादुर तामाङको भनाइसमेतबाट देखियो । यसरी मृतकसँग भएको रिसझवीका कारण निजलाई खुकुरीले काटी मार्ने योजना अनुसार यी प्रतिवादीले मृतकलाई गाउँकै एकान्त ठाउँको कोदोबारीमा आक्रमण गरेका र सो क्रममा मृतकले प्रतिकार गर्दा यी प्रतिवादीको चिउँडोमा चोट लाग्न गएको भन्ने निजकै बयानबाट देखियो । यसरी मृतकले प्रतिकार गर्दाकै क्रममा प्रतिवादीले आफूसँग रहेको खुकुरीले मृतकका दुवै हात काटी छिनाल्नुका साथै मृतकको खुट्टामा समेत तुलो घाउ चोट लाग्ने गरी प्रहार गरी मृतकलाई सोही अवस्थामा कोदोबारीमा फालिदिएपछि पुनः निजको अवस्था बुझी जीवितै रहेकोजस्तो देखेपछि मृतकलाई बारीको दुई तीन गरा तल फालेको अवस्थामा यी प्रतिवादीले मनसायपूर्वक नै मृतकको कर्तव्य गरी ज्यान लिएको देखिने ।

मृतक तीनकाने भन्ने पूर्णबहादुर तामाङको मृत्यु कर्तव्यबाट भएको र निजलाई प्रतिवादी आइतबहादुर तामाङले जग्गासमेतको विषयमा भएको रिसझवीसमेतका कारणले मिति २०७१।६।४ गते बेलुका खुकुरीले काटी अर्थात् कर्तव्यबाट मारी अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको पुष्टि भएका यी प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७३।१।२७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने । प्रतिवादी आइतबहादुर तामाङलाई सर्वस्वको सजाय नहुने हुँदा जन्मकैदको सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत : लिलाधर सुवेदी

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७९ साल आश्विन ३० गते रोज १ शुभम् ।

७

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना, ०७७-WO-०९२२, उत्प्रेषण / परमादेशसमेत, डा.गणेश रेग्मी वि. नेपाल सरकार प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत

शक्तिपृथकीरणको सिद्धान्तअनुरूप कानून निर्माण गर्ने कार्य विधायिकाको विशुद्ध एकलौटी अधिकारक्षेत्रभित्र पर्दछ । तर संविधानको प्रतिकूलको कानून निर्माण भए यस अदालतले Ultra Virus गर्न सक्छ र समय सापेक्ष कानून तर्जुमा गर्न पनि यस अदालतले आदेश निर्देशन दिन सक्ने कुरा शक्ति सन्तुलनको सिद्धान्तको विषय भए पनि आवश्यक कानून निर्माण गर्ने काम भने विधायिकाको नै हो । यसै गरी राज्य सञ्चालनका क्रममा जारी गर्नुपर्ने नीतिका विषयहरू सरकारको अधिकारक्षेत्रभित्र पर्ने हुन्छ । नेपालको संविधानको धारा ५५ मा पनि राज्यका निर्देशक सिद्धान्त, नीति तथा दायित्वका विषय कार्यान्वयन भए वा नभएको सम्बन्धमा कुनै अदालतमा प्रश्न उठाउन नपाइने गरी बन्देज लगाएको देखिन्छ भने धारा १०३ ले संसद्को विशेषाधिकारका विषयमा अदालतमा प्रश्न उठाउन बन्देज लगाइएको पाइन्छ । यसै सन्दर्भमा यस अदालतबाट ने.का.प. २०६४ अङ्क ६ नि.नं. ७८५५ मा "कुनै पनि निजामती कर्मचारी, संस्थानका कर्मचारी, शिक्षक वा सुरक्षा निकायका कर्मचारी हुन् ती निकायमा कार्यरत पदाधिकारीहरूको पदोन्नतिको प्रयोजनको लागि सर्त अवस्थाहरू तोक्ने वा बनाउने कार्यहरू नीतिगत कार्यहरू भएकाले यस्ता नीतिगत कार्यहरू नियमावलीमा समावेश गर्दा संविधानविपरीत नहुने" भनी प्रतिपादित सिद्धान्त प्रस्तुत रिटका सन्दर्भमा पनि दुई भिन्न प्रकृतिका प्रहरी सङ्गठनको सञ्चालन व्यवस्थाका सम्बन्धमा भएको बढुवासम्बन्धी प्रावधान

फरक फरकसङ्गठनको नीतिगत विषय देखिनुका साथै सोअनुरूप कानून तर्जुमा गर्ने विषय पनि संसद्को विशेषाधिकार विषय भएकाले सो सम्बन्धमा यस अदालतले हस्तक्षेप गर्न मिल्ने देखिँदैन। एकातिर समानताको हकले समानहरूकाबिच असमानता व्यवहार गर्न नपाइने संविधानवादको जगमा उभिएको पाइन्छ भने अर्कोतिर असमानहरूका बिच समान व्यवहार हुनुपर्छ भन्ने संवैधानिक हक पनि कसैको रहँदैन। फरक फरक उद्देश्यका साथ गठन भएका र कार्यप्रकृतिमा समेत फरक फरक रहेका सङ्गठनका समान तहका व्यक्तिहरूको समान किसिमले सेवा सुविधा प्राप्त हुनुपर्छ भन्नु न्यायसङ्गत र औचित्यपूर्ण नदेखिने। अतः प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत - निरज पोखरेल

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७९ साल आषाढ २० गते रोज २ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७८-WH-०२१४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, नवल किशोर साह वि. जिल्ला सरकारी वकिलको कार्यालय, मोरङसमेत**

गम्भीर कसुर र जघन्य कसुरको सम्बन्धमा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ३(च) र (छ) मा परिभाषा पाइन्छ। उक्त दफा ३(च) मा “३ वर्षभन्दा बढी १० वर्षसम्म कैद सजाय हुने कसुरलाई गम्भीर कसुर” र दफा ३(छ) मा “जन्मकैद वा १० वर्षभन्दा बढी कैद सजाय हुने कसुरलाई जघन्य कसुर” भनी परिभाषित गरेको अवस्था छ। यसरी निवेदकउपर दाबी लिइएको बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(२) मा अधिकतम छ महिनासम्म कैदको सजाय हुन सक्ने उल्लेख भएको देखिएको अवस्थामा यी निवेदकउपर लगाइएको अभियोग मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ३(च) र (छ) मा पर्ने “गम्भीर” र “जघन्यअन्तर्गतको कसुर रहेको देखिँदैन। साथै,

यी रिट निवेदकले पटके रूपमा कसुर गरेको भनी विपक्षीबाट कुनै प्रमाण पेस हुन सकेको पनि छैन भने निवेदन संलग्न कागजातबाट सो कुरा खुलेकोसमेत नदेखिने।

बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(२) र ३६(७) तथा मुलुकी अपराधसंहिता, २०७४ को दफा ३(च) र (छ) को परिभाषालाई सामञ्जस्यतात्मक (Harmonious) रूपमा बालबालिकाको सर्वोत्तम हितलाई ध्यानमा राखी व्याख्या गरिनु नै न्यायोचित हुने हुन्छ। वस्तुतः यी रिट निवेदक १२ वर्षको बालक रहेको देखिएको र पटके कसुरदारसमेत नरहेकोले निज निवेदकलाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(७) अनुसार कैदको सजाय हुन सक्ने अवस्था देखिँदैन। तसर्थ, रिट निवेदकको सर्वोत्तम हितको कोणबाटसमेत हेर्दा निजलाई ३ महिना बाल सुधार गृहमा राख्न पठाउने गरी भएको मोरङ जिल्ला अदालतको मिति २०७८।१२।२० च.नं.२८४६ को कैदीपुर्जा, पत्राचारलगायतका सम्पूर्ण कार्य कानूनसङ्गत देखिन नआएकोले प्रस्तुत रिट निवेदनमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिने।

रिट निवेदक साङ्केतिक नाम पथरी १००५ लाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(७) अनुसार कैदको सजाय नहुने भएबाट निजलाई कैदमा राख्न नमिल्ने हुँदा निवेदकलाई ३ महिना बाल सुधार गृहमा राख्न पठाउने गरी भएको मोरङ जिल्ला अदालतको मिति २०७८।१२।२० च.नं.२८४६ को पत्राचारलगायतका सम्पूर्ण कार्य कानूनसङ्गत देखिन नआएकोले बदर गरिदिएको छ। निवेदकलाई कानूनविपरीत थुनामा राख्न पठाएको देखिँदै यी निवेदकको थुना गैरकानूनी भएको हुँदा निज निवेदकलाई अविलम्ब बालसुधार गृहबाट मुक्त गरी निजको अभिभावक वा संरक्षकको जिम्मा लगाइदिने सम्बन्धमा आवश्यक काम कारबाही तत्काल अघि

बढाउनु भनी मोरङ जिल्ला अदालतको नाउँमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : मनिता गुरुङ

कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७९ साल जेठ ६ गते रोज ४ शुभम् ।

९

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७५-CR-०७२८, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. अमुल थापा मगरसमेत**

मिति २०७९।१२।२६ को जाहेरी दरखास्त तथा अभियोगपत्रसमेतमा पीडितको उमेर १४ वर्ष भनी उल्लेख गरिएको देखिन्छ । पीडितले मिति २०७२।०९।२५ मा अदालतमा गरेको बकपत्रमा निजले आफ्नो उमेर १६ वर्ष भनी लेखाइदिएको देखिन्छ । उक्त बकपत्रमा जाहेरवाला रोहबरमा बसेकोसमेत अवस्था छ । यसरी, वारदातका बखत पीडितको वास्तविक उमेर नै यकिन हुन सकेको छैन । वादी पक्षबाट पीडितको उमेर विवादरहित तवरले यकिन गर्न सकेको पनि देखिँदैन । तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. को कानूनी प्रावधानले पीडित १६ वर्ष उमेर पुगेकी र निजको सहमतिमा करणी लिनुदिनु भएको भए सो अवस्थाको वारदातलाई जबरजस्ती करणीको कसुर नै मान्न नमिल्ने ।

प्रतिवादी र पीडितबिच विगतमा प्रेम सम्बन्ध रहेको र विवाह गर्ने कुरासमेत भएको पनि मिसिलबाट देखिएको छ । जाहेरवालाको अदालतसमक्षको बयान हेर्दा, अमुल थापामगरसँग छोरीले विवाह गर्छ भनेर जाहेरी दिएको प्रतिवादी र छोरीको बिचमा विगत एक दुई वर्षबाट माया प्रेम थियो भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । प्रतिवादीले अदालतमा गरेको बयान, जाहेरवाला र पीडित एवं प्रतिवादीका साक्षीले गरेको बकपत्रबाट पनि यो कुरा उजागर भएको छ । जाहेरवालालाई तपाइँलाई भन्न अरु केही छ भनी

अदालतबाट सोधपुछ गर्दा, भोलिपर्सि प्रतिवादीले मेरो छोरीलाई हेला नगरोस् भन्न चाहन्छु, यदि हेला गरेमा यी प्रतिवादीलाई सजाय हुनुपर्छ भनी लेखाइदिएसमेतबाट जाहेरवालाले आफ्नी छोरीको विवाहपश्चात्को सुखद जीवनको सुनिश्चितताको खातिर चिन्तित रही विवाह गर्ने विषयमा कुनै कुरा नमिलेको कारणले प्रतिवादीउपर जाहेरी दरखास्त दिएको हुन सक्ने अवस्थासमेत देखिन्छ । आजै यस इजलाससमक्ष प्रतिवादी र पीडित हाल वैवाहिक सम्बन्धमा रही सामान्य रूपमा जीवनयापन गरिरहेको र निजहरूका तर्फबाट छोरीको जायजन्मसमेत भइसकेको भनी प्रतिवादीका विद्वान् अधिवक्ताले निज छोरीको जन्मदर्ताको प्रमाणपत्रको प्रतिलिपि पेस गरेका छन् । पेस भएको उक्त जन्मदर्ताको प्रमाणपत्र हेर्दा, बर्दघाट नगरपालिका वडा नं. ५ बाट दर्ता नम्बर १००२०९, दर्ता मिति २०७५।०६।०२ उल्लेख भई उक्त जन्मदर्ताको प्रमाणपत्र जारी भएको देखिन्छ । यिनै प्रतिवादी अमुल थापा मगर र यिनै पीडित परिवर्तित नाम दाउन्नेदेवी “यु” बाट शिखा थापामगरको मिति २०७५।०५।०९ मा जन्म भएको भन्ने तथ्य खुल्न आउने ।

वादी पक्षले पीडितको उमेर यकिन गराउन नसकेको, प्रतिवादीले कसुर गरेको भन्ने जाहेरवाला, पीडित र प्रतिवादीको मौकाको भनाइ अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेकोमा अझै निजहरूले अदालतसमक्ष मौकाको भनाइ प्रतिकूल बकपत्र गरेको अवस्था छ । अर्कोतर्फ, प्रतिवादी र पीडितका बिचमा प्रेम सम्बन्ध रहेको, विवाहको कुरा चलिरहेको, निजहरूका बिचमा हाल वैवाहिक सम्बन्धमा रही बच्चाको जन्मसमेत भएको तथ्यहरू उजागर भएको छ । यसरी, मिसिल संलग्न गरेका सम्पूर्ण प्रमाण कागजबाट प्रतिवादी कसुरदार हुन् कि भन्नेसम्मको शंका र अनुमानको आधार मात्र खडा भई प्रतिवादी जबरजस्ती करणीको कसुरदार नै हुन् भनी यकिन गर्न सकिने प्रकृतिका कुनै पनि प्रमाण मिसिल संलग्न

नदेखिने ।

प्रतिवादी अमुल थापा मगरउपरको अभियोग दाबी शंकारहित तवरले पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा, शंकाको सुविधा प्रतिवादीले पाउने फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्त अनुसार प्रतिवादी अमुल थापा मगरले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर गरेको सुरु नवलपरासी जिल्ला अदालतको मिति २०७२।०२।०५ को फैसला सदर हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७४।०३।०९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : वसन्तप्रसाद मैनाली

कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७९ साल जेष्ठ १३ गते रोज ६ शुभम् ।

१०

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा, ०७६-CI-०२०९, निर्णयसमेत बदर, सरिता ठाकुर वि. देवनारायण चौधरी**

वादी सरिता ठाकुरले विवादित जग्गाको स्वामित्व प्राप्त गर्नुभन्दा अगाडि नै उक्त कि.नं. ९३ को जग्गामा साबिकका जग्गाधनी ठाकुरप्रसाद अधिकारी र प्रतिवादी रामलखन चौधरीबिच मोहियानी हकको सम्बन्धमा मुद्दा परी निज प्रतिवादी मोही कायम भएको २०५४ सालको निर्णय अन्तिम भई कार्यान्वयनसमेत भइसकेको अवस्थामा अहिले आएर सो निर्णय हुँदाका बखत सरोकारवाला पक्ष नै नभएका यी वादीलाई प्रस्तुत मुद्दा गर्ने हकद्वैया हुँदैन । २०६८ सालमा मात्र सो जग्गामा पुनरावेदक वादीको हक प्राप्त भएको पाइन्छ । वादीको दाताले मुद्दा गरी मोहियानी हकको बारेमा आधिकारिक निकायबाट प्रतिवादी रामलखन चौधरी मोही कायम हुने निर्णय गरेकोमा सो निर्णय अन्तिम भइरहेको तथ्य प्रमाण रहेको छ । दाताले स्वीकार गरिसकेको निर्णयपछि जग्गा खरिद गर्ने यी वादीले बदर गर्न पाउने हकाधिकार रहँदैन । जो जस्तो स्थितिमा जग्गा खरिद गर्दा मोहीको बारेमा टुङ्गो

लागेको छ सो निर्णय यी वादीको लागि अनिवार्य रूपमा प्रभावकारी नै हुन्छ । साथै, उक्त जग्गामा २०५४ सालमा नै मोही कायम निर्णय भई अन्तिम भइसकेको अवस्थामा सो निर्णयलाई पुनः चुनौती दिई बदर गरिपाउँ भन्ने वादीको माग निर्णयको अन्तिमताको सिद्धान्त (Doctrine of Finality of Decision) को समेत प्रतिकूल देखिने ।

जहाँसम्म साबिक जग्गाधनी ठाकुरप्रसाद अधिकारीबाट उक्त जग्गा खरिद गर्दा साबिक जग्गाधनीको जग्गाधनी प्रमाणपुर्जामा मोहीको नाम नभई निज वादीको स्वतन्त्र हकभोगको जग्गामा कहिले मोही नकमाएको व्यक्तिको मोहियानी हक सिर्जना भएको भन्ने पुनरावेदकको जिकिर छ, सो सम्बन्धमा यिनै पुनरावेदक वादीले उक्त कि.नं. ९३ को जग्गा मोहीसहित नै खरिद गरी निज प्रतिवादीलाई मोही स्वीकार गर्दै भूमिसुधार कार्यालय, सिराहामा कुत दिलाई मोही निष्कासन मुद्दासमेत दर्ता गरेको स्थिति देखिँदा उक्त जिकिर परस्पर विरोधी देखिन्छ । विबन्धनको सिद्धान्त अनुसार परस्पर विरोधी कुरा गर्ने अधिकार कसैलाई पनि हुँदैन र परस्पर विरोधी कुरा गर्नेको कुरा नसुनिन पनि सक्छ भन्ने यस सिद्धान्तको मान्यता हो । उक्त सिद्धान्त अनुसार वादीले तथ्यलाई बङ्ग्याएर पेस गरेबाट निजले सफा हात लिई अदालत प्रवेश गरेको नदेखिँदा निजको सो जिकिरलाई ग्रहण गर्न नमिल्ने ।

पुनरावेदक वादी सरिता ठाकुरले उक्त कि.नं. ९३ को जग्गाको स्वामित्व प्राप्त गर्नुपूर्व नै मोही प्रतिवादी रामलखन चौधरी र साबिक जग्गाधनी ठाकुरप्रसाद अधिकारीका बिचमा मोही सम्बन्धमा निर्णय भई निज प्रतिवादी मोही कायम भई सो निर्णय अन्तिम भइसकेको अवस्था हुँदाहुँदै सो जग्गा खरिद गरेपश्चात् यिनै पुनरावेदक वादीले यिनै प्रत्यर्थी प्रतिवादीलाई मोही स्वीकार गरी निजउपर कुत दिलाई मोही निष्कासन गरिपाउँ भनी भूमिसुधार कार्यालय,

सिराहामा फिराद दर्ता गरेको साथै निज प्रतिवादीलाई मोही कायम गर्ने मिति २०५४।१०।०८ को निर्णय बदर गरिपाउँ भन्ने वादी दाबी पुन नसक्ने फिराद दाबी खारेज हुने ठहर्‍याएको उच्च अदालत जनकपुर, राजविराज इजलासको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

सुरू सिराहा जिल्ला अदालतबाट वादी दाबीबमोजिम भूमिसुधार कार्यालय, सिराहाबाट मिति २०५४।१०।०८ मा भएको मोही कायम निर्णय बदर गरी सो निर्णयबमोजिमको काम कारबाहीसमेत बदर हुने ठहर्‍याई भएको फैसलालाई उल्टी गरी फिराद दाबी खारेज हुने भनी उच्च अदालत जनकपुर, राजविराज इजलासबाट मिति २०७६।०४।२८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : मनिता गुरुङ

कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७९ साल जेठ ६ गते रोज ६ शुभम्।

११

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७६-WO-१०७८, उत्प्रेषण, सुनिलभक्त श्रेष्ठ वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय सिंहदरबारसमेत**

नेपाल ट्रस्ट ऐन, २०६४ को दफा ५(१) मा ट्रस्टको सम्पत्ति व्यापक र सर्वोत्तम सार्वजनिक लाभ हुने गरी राष्ट्रिय हितमा प्रयोग हुने छ" भन्ने व्यवस्था रहेको छ। महानगरपालिकाबाट प्रदान हुने सेवा र उसको आवश्यकताको औचित्यलाई हेरी सर्वसाधारणको हित तथा सहजताको लागि काठमाडौं प्लाजा भवन काठमाडौं महानगरपालिकालाई लिजमा दिने सिफारिस भनी नेपाल ट्रस्टको सञ्चालक समितिबाट भएको देखिन्छ। काठमाडौं महानगरपालिकाको हाल आफ्नो एउटै सिङ्गो र तुलो भवनको अभावमा विभिन्न ११ वटा स्थानहरूबाट सेवा दिन बाध्य भइरहेकोले आगामी दिनहरूमा एकै ठाउँबाट सम्पूर्ण सार्वजनिक

सेवा सञ्चालन गरी सर्वसाधारणलाई छिटोछरितो, सर्वसुलभ तथा सहज सेवा उपलब्ध गराउने आधारहरू उल्लेख गरी नेपाल ट्रस्टको कार्यालयमा प्रस्ताव पेस गरेको र नेपाल ट्रस्टको कार्यालयले सर्वसाधारणको हित तथा सहजताको लागि न्यायसङ्गत रूपमा काठमाडौं प्लाजाको भवन काठमाडौं महानगरपालिकालाई लिजमा दिन सिफारिस गरेको हो भन्ने देखिन्छ। राज्यको एउटा सरकारी निकायमा रहेको भवन तथा सम्पत्ति अर्को सरकारी निकायलाई आवश्यक परेको बखत उपलब्ध गराउनु सरकारी निकायको कर्तव्य तथा दायित्वभित्रको विषय भन्नेसमेत देखियो। यसरी सरकारी निकायहरूबिच असल मनसाय राखी भएको निर्णयलाई अन्यथा भन्न मिल्ने देखिएन। यसरी काठमाडौं महानगरपालिकाले नेपाल ट्रस्टको भवन लिजमा लिनको लागि मिति २०७६।१०।२० मा नै निवेदन दिई मिति २०७६।१२।०३ मा आर्थिक प्रस्ताव पेस गरेको र महानगरले नेपाल ट्रस्टको कार्यालयबाट निकालेको न्यूनतम मूल्याङ्कित रकम प्रतिमहिना रु. ५९,१८,८९३।- भन्दा बढी रकमको प्रस्तावसमेत पेस भएको आधारमा नेपाल ट्रस्टले राष्ट्रलाई सार्वजनिक, सामाजिक तथा आर्थिक लाभ हुने भन्नेसमेतका आधारमा महानगरलाई उक्त भवन लिजमा दिने भनी निर्णय गरेको देखिने।

नेपाल ट्रस्ट ऐन २०६४ को दफा ५(३ख) मा उपदफा (३क) मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए पनि अवधि तोक्यो लिजमा दिइएको सम्पत्तिको उपभोग गर्ने पक्षले थप पुँजी लगानीसहित विद्यमान संरचनालाई मर्मत सम्भार गरी सञ्चालन गर्न चाहेमा र सोबाट ट्रस्टलाई थप आर्थिक लाभ हुने सुनिश्चित भएमा त्यस्तो अवधि समाप्त हुनुअगावैसमेत आवश्यकता अनुसार ट्रस्टको सिफारिसमा नेपाल सरकारले लिजको अवधि थप गर्न सक्ने छ" भन्ने व्यवस्था गरेको देखिन्छ। यस व्यवस्थाले साबिकको उपभोगकर्तालाई दिनुपर्ने भन्ने बाध्यकारी कानूनी व्यवस्था भएको

भन्ने देखिँदैन । साबिकवालाले ट्रस्टलाई थप आर्थिक लाभ दिने नियतबाट सफाहात लिई व्यवहार गरेको नभई आफ्नो मात्र हित गर्ने उद्देश्यका आधारमा रूप विचार गरी आर्थिक प्रस्ताव पेस गरेको देखिन्छ । निवेदकको प्रस्ताव स्वाभाविक र असल नियतबाट हो भन्ने देखिँदैन । तसर्थ महानगरपालिकाले भवन लिजमा लिन मिति २०७६।१०।२० मा निवेदन दिएको, मिति २०७६।१२।०३ मा आर्थिक प्रस्ताव पेस गरेको र नेपाल ट्रस्टबाट कायम गरेको न्यूनतम मूल्याङ्कित रकम रु. ५९,१८,८९३।- भन्दा बढी रु. ६०,५०,०००।- प्रतिमहिना प्रस्ताव गरेको आधार, कारणबाट महानगरलाई नै भवन लिजमा दिने निर्णय गरेको भन्ने देखिन्छ । उक्त निर्णय नेपाल ट्रस्ट ऐन, २०६४ को दफा ५(३क) मा उल्लेख भएबमोजिम आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य सार्वजनिक हितको उद्देश्य पूरा हुने भन्ने कानूनको मनसाय अनुसार कानूनले दिएको अधिकार प्रयोग गरी १० वर्षको लागि लिज/भाडामा दिने सिफारिस भएको नेपाल ट्रस्टको सञ्चालक समितिको मिति २०७७।०३।०१ को ५८ औँ बैठकले सिफारिस गरी विभागीय मन्त्रीले मिति २०७७।०३।०२ मा प्रस्ताव पेस गरेबमोजिम नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्बाट मिति २०७७।०३।०२ मा निर्णय भएको देखियो । यसरी नेपाल ट्रस्टको सञ्चालक समितिको मिति २०७७।०३।०१ को ५८ औँ बैठकले गरेको सिफारिस सोका आधारमा विभागीय मन्त्रीले गरेको प्रस्तावबमोजिम मन्त्रिपरिषद्बाट मिति २०७७।०३।०२ मा भएको निर्णय कानूनबमोजिम भए गरेको देखिँदा निवेदन माग अनुसार उत्प्रेषणको आदेशबाट उपर्युक्त निर्णयहरू बदर गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने ।

प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयबाट मिति २०७७।०३।०२ मा नेपाल ट्रस्टको नाउँमा रहेको का.म.न.पा. ३१ कमलादीस्थित कि.नं. २३३५ को जग्गा र सोमा रहेका भवन

काठमाडौँ महानगरपालिकालाई १० वर्षको लागि लिज/भाडामा दिने गरी भएको निर्णय कानूनको रीत र प्रक्रिया पुऱ्याई कानूनबमोजिम भएको देखिएको र सो निर्णयका लागि नेपाल ट्रस्टको सञ्चालक समितिको मिति २०७७।०३।०१ को सिफारिस र विभागीय मन्त्रीको निर्णयसमेत कानूनसम्मत देखिएको, मिति २०५०।०३।०३ को सम्झौतालाई नै निरन्तरता दिनका लागि मिति २०६६।०९।२३ मा भएको पूरक सम्झौतासमेतमा उल्लेख भएको लिजको समयवधी समाप्त भई निवेदकको करारीय हैसियत कानूनतः समाप्त भएपश्चात् काठमाडौँ महानगरपालिकालाई लिजमा दिने भनी निर्णय भएको देखिँदा निवेदन माग अनुसार उत्प्रेषणसमेतको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने

कम्प्युटर : विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७९ साल माघ २६ गते रोज ५ शुभम् ।

- यसै लगाउका ०७७-WO-०२८६, उत्प्रेषणसमेत, सुवासराज काफ्ले वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय सिंहदरबारसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

१२

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०६९-WO-१३७७, उत्प्रेषण, सरोजकुमार सिंह वि. मध्यक्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय हेटौँडा, मकवानपुरसमेत**

निवेदक प्रहरी हवलदार पदमा कार्यरत रहेकामा आफ्नो कार्यालयमा तोकिएको कमान्डरको अनुमति लिई बिदा स्वीकृत गराई घर गएको वा अत्यावश्यक कार्य परी समयमा कार्यालयमा उपस्थित हुन नसकेको भन्ने कुनै जिकिर लिनसकेको पाइँदैन । विनासूचना कार्यालयमा १४१ दिनसम्म गैरहाजिर हुने प्रहरी कर्मचारीलाई प्रहरी ऐन, नियमबमोजिमको

कार्यविधि पूरा गरी सेवाबाट बर्खास्त गर्ने निर्णय भएको कार्यलाई अन्यथा भन्न मिलेन । अतः निजको घर ठेगानामा हाजिर हुन आउने सूचना पठाई, म्यादभित्र हाजिर नभएकाले अख्तियार प्राप्त अधिकारीबाट सेवाबाट हटाउने गरी भएको निर्णय कानूनसम्मत नै देखिने ।

निवेदकको पुनरावेदन दर्ता नगरेको तथा हुलाकबाट प्रेषित पुनरावेदनउपर सुनुवाइ नभएको भन्ने अर्को जिकिरतर्फ हेर्दा, प्रहरी नियमावली, २०४९ को नियम ९२ मा पुनरावेदनको कार्यविधिबारेमा व्यवस्था गरिएको छ । "जसमा १. पुनरावेदन गर्ने कर्मचारीले आफ्नो नामबाट पुनरावेदन दिनुपर्ने । २. पुनरावेदनमा सजाय भएको आदेशको नक्कल राख्नुपर्ने छ ३. पुनरावेदन दिने व्यक्ति जुन कार्यालयको हो सोही कार्यालय प्रमुख वा जसको आदेशको विरुद्ध पुनरावेदन गरिएको छ सो अधिकारीमार्फत दिनुपर्ने छ ४. सजायको सूचना पाएको पैंतिस दिनभित्र पुनरावेदन दिनुपर्ने छ र ५. पुनरावेदन तहबाट भएको निर्णय अन्तिम हुने छ" भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ । यी निवेदकले आफूलाई भएको कारबाहीमा चिन्त नबुझी कानूनका म्याद ३५ दिनभित्र पुनरावेदन दर्ता गराएको भन्ने देखिँदैन । हुलाकमार्फत पठाएको भनिएको पुनरावेदनबाट सुनुवाइ हुन नसक्ने भनी निवेदकलाई मिति २०६५।४।१३ मा जानकारी दिएकोसमेत देखिन आयो । उक्त पत्र बुझेपछि आफैं सम्बन्धित निकायमा उपस्थित भई रीतपूर्वक पुनरावेदन दर्ता गर्न गएको पनि नदेखिने ।

हुलाकमार्फत पठाएको पुनरावेदनमा सुनुवाइ नहुने भनी जानकारी पाएको ५ वर्षपछि मिति २०७०।३।२० मा मात्र प्रस्तुत रिट निवेदन दायर भएको देखिँदा मार्का पर्ने पक्षले समयमै न्यायिक उपचार खोज्नुपर्ने लामो समय व्यतीत गरेर अदालत प्रवेश गरेको हुँदा विलम्बको सिद्धान्तले समेत प्रस्तुत रिट

निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : शिवहरी पौडेल

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७९ साल भदौ १९ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ६

१३

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७३-WO-०९७६, उत्प्रेषण, ज्ञानु पौडेल अर्याल वि. प्रिमियर फाइनेन्स कम्पनी लिमिटेडसमेत

प्रस्तुत विवादको मूल विषय निवेदक ज्ञानु पौडेलको नाममा रहेको काठमाडौं जिल्ला धापासी गा.वि.स. वडा नं. ८(क) कि.नं.४०४ को क्षेत्रफल ०-४-०-० को जग्गा हाल कायम धापासी वडा नं.८ सिट नं.१०२-०९८५-०३ कि.नं.७८ को जग्गा प्रिमियर फाइनेन्स लिमिटेडमा दृष्टिबन्धक राखी रु.१६,००,०००।- ऋण लिएकोमा निवेदकले सावाँ ब्याज बुझाइराखेको अवस्थामा निजलाई थाहा जानकारी नदिई उक्त जग्गा लिलामको लागि सूचना निकाली उक्त बैंक तथा मालपोत कार्यालय, चाबहिलले निर्णय गरी निज पुरुषोत्तम विडारीको नाममा हस्तान्तरण गरेको हुँदा उक्त गैरकानूनी तरिकाले प्राप्त गरेको जग्गा निज निवेदकको नाममा यथावत कायम राख्नुपर्ने भन्ने रहेको छ ।

रिट निवेदकले यसै धापासी गा.वि.स. वडा नं.८ सिट नं. १०२-०९८५-०३ कि.नं.७८ कै जग्गा सम्बन्धमा प्रिमियर फाइनेन्समा धितो राखी ऋण लिएकोमा सो को ऋण ब्याज तिर्दा तिर्दै मिति २०७२।४।१९ मा ३५ दिने सूचना निकाली बोलपत्र प्रकाशन गरेको, उक्त सूचनामा कसैको बोलपत्र नपरेको भनी संस्था आफैँले सकार गरी लिएको र

कानूनको रीत नपुऱ्याई बिक्री गरेको हुँदा उक्त मिति २०७२।४।१ को लिलाम सूचना, मिति २०७२।५।४ मा संस्था आफैँले सकार गरी लिएको निर्णय, मिति २०७२।१।१२७ को कायमी स्नेस्तालगायतका विषयमा ५ थान मुद्दाहरू क्रमशः दूषित लिखत दर्ता बदर दर्ता (०७२-CP-३०४५), जालसाजी (०७२-PC-६२४२), दूषित कपटपूर्ण लिलाम सकार मुचुल्का र निर्णयसमेत बदर (०७२-CP-३०४६), दा.खा. निर्णय बदर दर्तासमेत(०७२-CP-३०४७) र दूषित कपटपूर्ण मुचुल्का र निर्णयसमेत बदर (०७२-CP-३०४८) मुद्दाहरू यसै रिट निवेदनको विपक्षीहरूलाई प्रतिवादी बनाई काठमाडौँ जिल्ला अदालतमा मिति २०७३।१।१२ मा फिराद दर्ता गरी हालसम्म विचाराधीन अवस्थामा नै रही अन्तिम निर्णय फैसला हुने स्थितिमा रहेको छ भनी विपक्षीहरूको लिखित जवाफ तथा बहसको क्रममा विपक्षीका तर्फबाट उपस्थित कानून व्यवसायीहरूले जानकारी गराएको देखियो । यस अवस्थामा प्रस्तुत निवेदनमा उठाइएको विवादको विषय काठमाडौँ जिल्ला अदालतमा साधारण क्षेत्राधिकारअन्तर्गत मुद्दा चलेको स्थिति हुँदा सोही मुद्दाबाट विवादको समाधान हुनुपर्ने देखियो । यसरी वैकल्पिक उपचारको विद्यमानता भएका अवस्थामा यस अदालतले असाधारण अधिकारक्षेत्रको माध्यमबाट हस्तक्षेप गरी उक्त विचाराधीन मुद्दालाई असर पर्ने गरी केही बोल्न नमिल्ने र निवेदकले सोही विचाराधीन मुद्दाबाट उपचार पाउने अवस्था बाँकी नै रहेको देखिने ।

कानूनले साधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत उपचार प्राप्त गर्ने मार्ग प्रशस्त गरिरहेको विषयमा सामान्यतः असाधारण अधिकार क्षेत्र आकर्षित हुन नसक्ने र प्रस्तुत विषयका सम्बन्धमा यी रिट निवेदकले काठमाडौँ जिल्ला अदालतमा यसै विषयमा ५ थान मुद्दा परी सो मुद्दा विचाराधीन रहेको स्थितिमा सोही मुद्दाको रोहबाट प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी निर्णय हुने नै हुँदा रिट क्षेत्रबाट आदेश गर्न उपर्युक्त नदेखिँदा

निवेदकको रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : दिप्ती पौडेल

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०८० साल आश्विन २३ गते रोज ३ शुभम् ।

१४

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७३-CI-०९४६, ०७३-CI-१५९१, उत्प्रेषण, सुन्दर कार्की वि. रामेश्वर मानन्धर**

मिति २०७३।१।११ मा सम्पन्न भएको दोलखा उद्योग वाणिज्य सङ्घको कार्यसमितिको निर्वाचनमा मिति २०७३।१।१२ मा मतगणना हुँदा अध्यक्ष पदका उम्मेदवारहरू पुनरावेदक सुन्दर कार्की र विपक्षी रामेश्वर मानन्धरमध्ये १ मतको फरकमा पुनरावेदक सुन्दर कार्की अध्यक्ष पदमा बिजयी घोषणा गरेकोमा सो मतगणना निष्पक्ष तवरमा सम्पन्न नभई धाँधलीपूर्ण र एकपक्षीय तवरले भएको भन्ने जिकिर लिई परेको विवादमा दोलखा उद्योग वाणिज्य सङ्घको कार्यसमितिको अध्यक्ष पदको निर्वाचन नै मूल विषय बनेको देखिन्छ । सो सम्बन्धमा मिसिल संलग्न रहेको दोलखा उद्योग वाणिज्य सङ्घको विधानको व्यवस्था हेर्दा दफा ६.७ मा “कार्य समितिको पदावधि” भन्ने उल्लेख भई देहाय (क) मा “कार्य समितिको पदावधि दुई वर्षको हुने छ” भन्ने उल्लेख गरेको देखिन्छ । उक्त व्यवस्थालाई हेर्दा, यस मुद्दामा दोलखा उद्योग वाणिज्य सङ्घको कार्यसमितिको अध्यक्ष पदको लागि मिति २०७३।१।११ मा निर्वाचन भएकोमा सो मितिबाट अध्यक्ष पदको पदावधि २ वर्षको लागि अर्थात् २०७५ सालसम्म अध्यक्ष पदमा रहन पाउने भन्ने देखियो । सो सन्दर्भमा हेर्दा, विपक्षी रामेश्वर मानन्धरले उच्च अदालत पाटनमा दायर गरेको रिटउपर पुनरावेदक सुन्दर कार्कीले यस अदालतमा पुनरावेदन दायर गरेको भए पनि अध्यक्ष पदको पदावधि नै पूरा भइसकेको देखिन्छ । पदावधि समाप्त भइसकेबाट मुख्य रिटको नै औचित्य समाप्त भइसकेको हुँदा

पुनरावेदक सुन्दर कार्कीले यस अदालतमा गरेको पुनरावेदनसमेत प्रयोजनविहीन रहेको देखिन्छ । अतः यस मुद्दामा उठाइएको विषयवस्तुको सान्दर्भिकता हालको अवस्थामा कायम नरहने हुँदा प्रस्तुत मुद्दाको पुनरावेदनमा उठाइएका अन्य जिकिरउपर विचार गरिरहनुपर्ने देखिएन ।

मिति २०७३।१।२० मा उच्च अदालत पाटनबाट भएको निर्णयको विषयवस्तुमा प्रवेश गरी अन्यथा गर्नुपर्ने नहुँदा उक्त निर्णय सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : दिप्ती पौडेल

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०८० साल आश्विन २३ गते रोज ३ शुभम् ।

१५

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०६७-WO-०९७२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत, कस्तुरीमैया श्रेष्ठ वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय डिल्लीबजार, चारखाल, काठमाडौंसमेत**

विवादित जग्गाको विषयमा मिसिल संलग्न कागजहरू केलाउँदा विक्रम संवत् १९२१ को शिलालेख, भारदारीका फैसला, खड्ग निसाना, स्वयम् गुठीको सञ्चालनकर्ता पुतलीनानी श्रेष्ठले दिएको विवरणसमेतबाट रिट निवेदनमा उल्लिखित पुरानो नैकाप गा.वि.स. वडा नं ८ (ख) का कि.नं. १०४ समेतका २१ कित्ता जग्गाहरूसमेत राजगुठीअन्तर्गतका छुट गुठीको जग्गा देखिन आयो । तसर्थ उक्त जग्गामा निजी गुठी भनी रैकर कायम गर्ने गरी मालपोत कार्यालयबाट भएका निर्णयहरू बदर गर्ने गरी गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा ३९ (१) बमोजिम अधिकार प्राप्त निकाय गुठी संस्थानबाट मिति २०६७।०८।०३ मा भएको निर्णय कानूनअनुरूप भए गरेको देखिएको हुँदा सो निर्णय बदर हुनुपर्छ भन्ने निवेदकहरूको जिकिर स्वीकारयोग्य देखिएन । प्रस्तुत

रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : विनिता भारती / परीक्षा ढकाल

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०८० साल वैशाख ११ गते रोज २ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७४-CI-०४७३, गुठी धर्म लोप निर्णय बदर, पुतलीनानी श्रेष्ठ वि. कस्तुरी मैया श्रेष्ठ भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

१६

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री नहकुल सुवेदी, ०७०-CR-०८५८, दूरसञ्चार सञ्चार प्रणालीमा प्रतिकूल असर परेको, नेपाल सरकार वि. अकवर मोहम्मद गद्दी**

प्रतिवादीले गरेको कार्य दूरसञ्चार ऐन, २०५३ को दफा ४७(५) बमोजिमको कसुर भन्ने स्थापित हुन आएकोले अभियोग दाबीबमोजिम कसुर ठहर गरेको सुरु फैसला उल्टी गरी दूरसञ्चार ऐन, २०५३ को दफा ४७(५) र सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूची -१ भित्र नपर्ने भनी अभियोगदाबी खारेज गर्ने ठहर्‍याएको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत बुटवलको फैसला मिलेको देखिएन ।

प्रतिवादीले गरेको कसुरजन्य कार्यको बिगो के कति कायम हुने हो भन्ने सम्बन्धमा हेर्दा, अभियोजन पक्षले नेपाल टेलिकमलाई प्राप्त हुने सेवा शुल्क र नेपाल सरकारलाई नोक्सानी भएको राजस्वसमेत भनी रु.५,५१,२०,०००।- को बिगो दाबी गरेको देखिए तापनि के कुन आधारमा उक्त बिगो निर्धारण गरिएको हो ? प्रतिवादीको उल्लिखित कार्यबाट नेपाल टेलिकम र नेपाल सरकारलाई के कति हानि नोक्सानी पुग्न गएको हो वा निज प्रतिवादीले आफ्नो घरमा VOIP कल वाइपास गरेबापत के कति रकम आर्जन गरेको भन्ने सम्बन्धमा विस्तृत र गम्भीर अनुसन्धान गरी तथ्यपरक र वैज्ञानिक पद्धतले बिगो निर्धारण नगरी हचुवा

र गोश्वारा ढङ्गले बिगो दाबी गरेको देखियो । मिसिल संलग्न प्राविधिक प्रतिवेदनमा उल्लिखित कार्यबाट निज प्रतिवादीले रु.१,०००।- को रिचार्जमा रु.७,००।- मुनाफा प्राप्त गर्ने भन्ने देखियो र सो बाट बरामद हुन आएको जम्मा रु.६,७५,३४२।- को रिचार्जमा रु.४,७२,७३९।०४ मुनाफा आर्जन हुन सक्ने देखिई सोही बराबरको रकम नेपाल टेलिकम र नेपाल सरकारलाई हानि नोक्सानी पुऱ्याएको मानी बिगो कायम गर्नु न्यायोचित देखिँदा प्रस्तुत मुद्दामा हुन गएको हानि नोक्सानीको बिगो रु.९,४५,४७८।०८ (नौ लाख पैँतालिस हजार चार सय अठहत्तर रूपियाँ आठ पैसा) कायम भई प्रतिवादीलाई दूरसञ्चार ऐन, २०५३ को दफा ४७(५) बमोजिम बिगोबमोजिम जरिवाना र २ वर्ष ७ महिना १६ दिन कैद सजाय हुने ।

प्रतिवादी अकबर मोहम्मद गद्दीले अभियोगदाबीबमोजिम दूरसञ्चार ऐन, २०५२ को दफा ४७(५) बमोजिमको कसुर गरेको पुष्टि हुन आएकोले अभियोगदाबीबमोजिम कसुर ठहर गरेको सुरु फैसला उल्टी गरी उक्त कसुर तत्कालीन सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूची १ भित्रको नपरेको भनी अभियोग दाबी खारेज हुने ठहऱ्याएको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६९।१२।२७ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई प्रतिवादीलाई २ वर्ष ७ महिना १६ दिन कैद र रु.९,४५,४७८।०८ (नौ लाख पैँतालिस हजार चार सय अठहत्तर रूपियाँ आठ पैसा) जरिवाना हुने ।

इजलास अधिकृत : शारदादेवी पौडेल

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०७९ साल माघ २२ गते रोज १ शुभम् ।

१७

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.डा.श्री नहकुल सुवेदी, ०७६-CR-००३८, ०७६-CR-००४०, कर्तव्य ज्यान, शान्ता प्रजापति वि. नेपाल सरकार, शिव भन्ने कृष्णकुमार प्रजापति वि. नेपाल

सरकार

प्रतिवादी शान्ता प्रजापतिकै कर्तव्यबाट श्रीकृष्ण प्रजापतिको मृत्यु भएको नदेखिए पनि निज प्रतिवादी वारदातस्थलमा उपस्थित रहेको तथा मुख्य अभियुक्तलाई वारदात घटाउन सहयोगीको भूमिका निर्वाह गरेको भन्ने जाहेरी, जाहेरवालाको एवं प्रत्यक्षदर्शीको बकपत्रसमेतबाट देखिएको अवस्था छ । तसर्थ निज प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं.बमोजिमको कसुर कायम गरी सजाय गरेको फैसला निजको हकमा मिलेको देखिएन । प्रतिवादी शान्ता प्रजापतिले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १७(२) नं. बमोजिमको कसुर गरेको देखिने ।

प्रतिवादी शिव भन्ने कृष्णकुमार प्रजापतिको हकमा साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. बमोजिमको कसुरमा ऐ. १३(३) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको भक्तपुर जिल्ला अदालतको मिति २०७५।५।२० को फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७५।१२।२६ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । अर्का प्रतिवादी शान्ता प्रजापतिको हकमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको भक्तपुर जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७५।१२।२६ को फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई प्रतिवादी शान्ता प्रजापतिलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७ (२) नं. बमोजिमको कसुरमा सोही नं. बमोजिम ५ (पाँच) वर्ष कैद सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत :- रामु शर्मा

कम्प्युटर :- पद्मा आचार्य

इति संवत् २०८० साल भदौ २९ गते रोज ६ शुभम् ।

१८

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७२-WO-११७७, उत्प्रेषण,

नवराज गिरी वि. सशस्त्र प्रहरी बल, सशस्त्र प्रहरी प्रधान कार्यालय, हलचोक, काठमाडौंसमेत

सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०७२ को नियम ११३ को उपनियम १ मा "देहायको कुनै अवस्थामा सशस्त्र प्रहरी कर्मचारीलाई भविष्यमा सरकारी सेवाको निमित्त अयोग्य नठहरिने गरी सेवाबाट हटाउन सकिने छ भनी उक्त उपनियमको खण्ड (ग) मा "आचरणसम्बन्धी कुरा बराबर उल्लङ्घन गरेमा", खण्ड (घ) मा " बराबर अनुशासनहीन काम गरेमा" र खण्ड (झ) मा "आफ्नो पदको जिम्मेवारी बराबर बेवास्ता गरेमा" भन्ने व्यवस्था रहेको पाइन्छ। यी निवेदकलाई मिति २०७२।७।१९ र मिति २०७२।७।२५ मा उक्त आरोपको विषयमा स्पष्टीकरण सोधिएको र निजले स्पष्टीकरण पेश गरेपश्चात् सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०७२ को नियम ११० को खण्ड (ख)(१) बमोजिम भविष्यमा सरकारी सेवाको लागि सामान्यतः अयोग्य नठहरिने गरी सेवाबाट हटाइएको देखियो। सो गर्दा विगतको आचरणसमेतलाई मध्यनजर गर्दै तथ्यमा आधारित भई स्पष्टीकरण सोधी सफाइको मौका दिइएकै देखियो। एउटा फौजी सङ्गठनमा चाहिने न्यूनतम अनुशासन र कर्तव्यपरायणताको अभाव रहेको अवस्थामा विभागीय कारबाही र सजाय गर्ने गरी भएका निर्णय कानूनसम्मत नै देखिने।

रिट निवेदक नवराज गिरी जस्ता सशस्त्र प्रहरी कर्मचारीलाई सङ्गठनमा राखिरहँदा अन्य सशस्त्र प्रहरी कर्मचारीहरूलाई नकारात्मक असर पर्न जाने भन्दै निवेदकलाई मिति २०७२।८।७ बाट लागु हुने गरी सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०७२ को नियम ११३ को खण्ड (ग),(घ) र (झ) को कसुरमा नियम ११५ ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी नियम ११० को खण्ड (ख)(१) बमोजिम भविष्यमा सरकारी सेवाको लागि अयोग्य नहुने गरी सेवाबाट हटाउने गरी मिति २०७२।८।७ मा निर्णय भएकोमा सुरु निर्णय सदर हुने गरी मिति २०७३।२।२० मा महानगरीय

सशस्त्र प्रहरी कार्यालय, बलम्बुका सशस्त्र प्रहरी नायब महानिरीक्षकबाट पुनरावेदन तहको निर्णय भई सेवाबाट हटाइएको कार्य निवेदकले दाबी गरेजस्तो नदेखिई कानूनसम्मत नै देखियो। तसर्थ निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न नमिलेकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : दिप्ती पौडेल

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०८० साल चैत्र १ गते रोज ५ शुभम्।

१९

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७३-CI-१५१३, दर्ता बदर सार्वजनिक कायम, विजयप्रताप पुरीसमेत वि. राजेन्द्रकुमार वर्मा, अखिलेश्वर पुरीसमेत वि. राजेन्द्रकुमार वर्मा

मालपोत ऐन, २०३४ को दफा २४ को सरकारी, सार्वजनिक वा सामुदायिक जग्गा दर्ता गर्न वा आवाद गर्न नहुनेसम्बन्धी दफाको उपदफा १ मा त्यस्तो जग्गा व्यक्ति विशेषका नाउँमा दर्ता वा आवाद गर्न गराउन नहुने, ऐ. उपदफा २ मा "कसैले यो दफा प्रारम्भ हुनुभन्दा अघि वा पछि सरकारी, सार्वजनिक वा सामुदायिक जग्गा व्यक्ति विशेषको नाउँमा दर्ता गरी आवाद गरेकोमा त्यस्तो दर्ता लगत स्वतः बदर हुने छ। त्यस्तो जग्गाको व्यक्ति विशेषका नाउँमा रहेको दर्ता लगतसमेत मालपोत कार्यालय वा नेपाल सरकारले तोकेको अधिकारीले कट्टा गर्ने छ।" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको हुँदा उक्त जग्गा प्रतिवादीहरूको जिकिरबमोजिम दर्ता वा मन्दिरको व्यवस्थापकको हैसियतले भोग गरेको भन्ने विवादास्पद कुरालाई वैधता प्रदान गर्ने गरी र २०० वर्षको प्रामाणिक इतिहास र कैयौँ साताब्दीको पौराणिक इतिहास रहेको र तौलिहवा बजारको मुटुमा अवस्थित देश विदेशका लाखौँ भक्तजनको आस्थाको केन्द्र रहेको सम्पदा नासिने, मासिने र क्षत विक्षत हुने धर्म, संस्कृति र

सम्पदा संरक्षणको न्यायिक दायित्व नै परास्त हुने गरी त्यस्तो पछिबाट सिर्जित प्रमाणलाई मान्यता दिन नमिल्ने ।

सुरु कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी वादी दाबीबमोजिमको बाल बिटौरी नं. २६८/१ र २६८/२ को दुई कित्ता जग्गाबाहेक मिति २०६७।१२।२७ मा भएको नाप नक्साको न.नं. १, २, ३४ र ३५ मा रहेको बाटोको चौकिल्लाभित्र रहेका सम्पूर्ण घरजग्गा तौलेश्वरनाथ मन्दिरको सार्वजनिक सम्पत्ति कायम हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६९।१२।१८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :- उमेशप्रसाद पाण्डेय

कम्प्युटर :- पद्मा आचार्य

इति संवत् २०८० साल फागुन २२ गते रोज ३ शुभम् ।

२०

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७१-८१-१५६०, लिलाम बदर टिप्पणी आदेश बदर, जग्गा खिचोला हक कायम, लिखत बदरसमेत, गणपति चौधरी थारुसमेत वि. घुरनीदेवी थरुनी**

मिति २०६४।१।२८ मा भएको नक्सा मुचुल्का हेर्दा, विवाद जनिएको न.नं.४, न.नं.६, न.नं.१० भित्रको जग्गाहरू साबिक कि.नं.४५९ भित्रका जग्गाहरू हुन् भनी वादीले नक्सामा जिकिर लिएको तर सो विवादित जग्गाहरू साबिक कि.नं.४६० भित्रको हो भनी प्रतिवादीहरूले जिकिर लिएको देखिन्छ । वादीले सुरु दाबी र पुनरावेदन जिकिर लिँदासमेत उक्त जग्गा साबिक कि.नं.४६० भित्रको जग्गा हो भनी जिकिर लिएको देखिँदा वादी दाबी आफैँमा अस्पष्ट र प्रतितलायक देखिन आएन । साथै नक्सा मुचुल्कामा न.नं.१-१३ सम्मका जग्गाहरू गाउँ ब्लक नं.२५३ मध्येका जग्गा हुन भन्ने कुरामा वादी प्रतिवादीको नक्सामा मुख मिलेको देखिन्छ । यस अवस्थामा

विवादित जनिएको जग्गा गाउँ ब्लक नं. २५३ मा परेको भन्ने नदेखिने ।

यसै लगाउको "जग्गा खिचोला घर उठाई चलन" मुद्दामा मिति २०६७।२।३० मा भएको नक्सा मुचुल्कामा विवाद जनिएको न.नं.४,१० र ११ को घर जग्गाको नक्सा कैफियतमा नं. न. ४ को जग्गामा फुसको घर र दुई वटा नरिवलको रूख भएको प्रतिवादी फणिन्द्र चौधरीले भोग गरिरहेको भन्ने, त्यसै गरी न.नं.१० मा २ वटा घर प्रतिवादी गणपति चौधरीको भोगमा रहेको भन्ने र न.नं.११ मा एउटा फुसको घर अर्को आधी घरसमेत प्रतिवादी गणपति चौधरीले भोग गरिरहेको भन्ने देखिएको र सो विवादको न.नं. ४, १० र ११ का घर जग्गामा प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको ठहरी फैसला भएकोले सो मुद्दाका प्रतिवादी एवं यो मुद्दाका यी वादीहरूको हक पुग्ने देखिन नआउने ।

वादीले दाबी लिएको जग्गाहरू नक्सामा निजहरूको दर्ता भोगको कि.नं.२६१, २६२, २६९समेतका जग्गाका वरिपरि नभई अन्यत्रै अलिक पर फड्को मारी गएर हक कायमको दाबी लिएको देखिन्छ । प्रतिवादी घुरनीदेवी थरुनीले लिलाम सकार गरेको जग्गा वादीका नाममा दर्ता भएको जग्गालाई कुनै रूपले नछोई अन्यत्रै रहेको देखिन्छ । यसरी कित्ता नै फड्केर अन्यत्रै गई दाबी गरेको विवादित जग्गा यी वादीहरूको अंश हकको जग्गा हुन् भन्न मिल्ने देखिन नआउने ।

यसरी हक नै स्थापित नभएको जग्गामा दाबी लिँदैमा हक स्थापित हुने होइन । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २६ ले "देवानी मुद्दामा आफ्नो दाबी प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ । वादी दाबीको जग्गा गाउँ ब्लक नं.२५३ मा रहेको र आफूहरूको अंश हक लाग्ने जग्गा तथा आफ्नो हक स्थापित हुने जग्गा हो भन्नाका लागि सोही अनुसारको आधिकारिक लिखत, प्रमाण, दर्ता स्वेस्ताबाट पुष्टि गर्न सक्नुपर्दछ । सो कुराको प्रमाण वादीहरूबाट गुजार्न

सकेको देखिन नआउने।

यस सन्दर्भमा “हकको स्वामित्वको प्रमाण पेस हुन नसकेको अवस्थामा अन्य कुनै पनि आधारले एकाको हकभोगको जग्गामा अन्य व्यक्तिको अधिकार रहेको भन्नु प्रमाण र कानूनको रोहमा उपयुक्त नहुने” (ने.का.प. २०६४ माघ, नि.नं. ७८८९) भनी यस अदालतबाट व्याख्यासमेत भएको परिप्रेक्ष्यमा यी पुनरावेदक वादीको दाबीको घर जग्गाको हक भोगको स्वामित्व हामी वादीहरूको हो भनी वादीहरूले कानूनसम्मतता लिखत प्रमाण पेस गरी पुष्टि गर्न सकेको छैन। यस स्थितिमा वादी दाबी नपुग्ने ठहराएको पुनरावेदन अदालतको इन्साफलाई अन्यथा भन्नुपर्ने नदेखिने।

वादी दाबीबमोजिम लिलाम बदर, लगत बदर, लिखत बदर भई वादीहरूको हक कायम हुने ठहर गरेको सुरु सप्तरी जिल्ला अदालतको मिति २०६७।६।१४ को फैसला उल्टी गरी वादी दाबी पुन नसक्ने ठहर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७०।१।१७ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: भरतकुमार दाहाल

कम्प्युटर : पद्मा आचार्य

इति संवत् २०८० साल चैत २० गते रोज ३ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७१-सी-१५६९, जग्गा खिचोला घर उठाई चलन, गणपति चौधरी थारुसमेत वि. घुर्नीदेवी थरुनी भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

२१

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा, ०८०-WH-०२७३, बन्दीप्रत्यक्षीकरणसमेत, गणेश गौतम वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहल, काठमाडौंसमेत**

प्रस्तुत रिट निवेदन बेहोरासमेतका उल्लिखित तथ्यहरूबाट सञ्जय मोक्तानको जाहेरीले

नेपाल सरकार वादी र प्रतिवादी यी रिट निवेदक गणेश गौतम प्रतिवादी भएको ०७९-CB-१८३६ को बैकिङ कसुर मुद्दामा निजले आफ्नो ठेगाना फरक उल्लेख गरी गोरखापत्रमा समाह्वान म्याद सूचना प्रकाशन गरी एकतर्फी रूपमा भएको फैसलाको आधारमा ठहर भएको कैद र जरिवानाबापत थुनामा राखिएको गैरकानूनी भएकोले बन्दी प्रत्यक्षीकरणसमेतको आदेश जारी हुनुपर्दछ भन्ने जिकिर रहे तापनि हाल निजले उक्त फैसलाबमोजिमको कैद र ठहरेबमोजिमको जरिवाना र पीडित राहत कोषको क्षतिपूर्तिसमेत भुक्तान गरी रिट निवेदक सो मुद्दामा थुनाबाट मुक्त भई फैसलासमेत कार्यान्वयन भइसकेको स्थिति देखियो। यस स्थितिमा रिट निवेदन मागबमोजिम उक्त बैकिङ कसुर मुद्दामा म्याद सूचनाको बैधतामा प्रवेश गर्नुको औचित्य नै समाप्त भइसकेकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत :- उमेशप्रसाद पाण्डेय

कम्प्युटर :- रेखा भट्टराई

इति संवत् २०८१ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम्।

२२

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री अब्दुल अजीज मुसलमान, ०७१-सी-१३७८, ०७१-सी-१६४१, ०७२-सी-०००५, धितो बदर रोक्का पत्र बदर, कृषि विकास बैंक लि. शाखा कार्यालय, गौर, रौतहट वि. शान्तिदेवी गिरीसमेत, तनुजा कुमारी मुखिया भन्ने तनुजादेवी वि. शान्ति देवीसमेत, शान्ती देवीसमेत वि. तनुजा कुमारी मुखिया भन्ने तनुजा देवीसमेत**

रूपनारायण गिरीले मिति २०६१/२/३२ मा ट्याक्टर खरिद गर्नका निम्ति प्रतिवादी कृषि विकास बैंक लि. शाखा कार्यालय गौरबाट जग्गा धितो राखी रु. ४,९१,५६०/- कर्जा लिएको र हालसम्म पनि सो कर्जा निज वा निजको अपुताली खाने हकदारले तिरे बुझाएको नदेखिँदा प्रतिवादी बैंकले धितो राखिएको जग्गाहरूको लिलामीबाट आफ्नो कर्जा असुल गर्न

सक्ने भए पनि धितो राखिएकोमध्ये कि.नं. २६९, ४१८, ३४१ र ४३५ को जग्गाहरू धितो राखिनुपूर्व नै ऋणीबाहेक अन्य अंशीहरूकोसमेत हक स्थापित भइसकेको देखियो । बैंकको लेनामा जग्गा लिलाम गर्दा ऋणीको धितो रहेको र सोबाट असुलउपर नभए निजको अन्य जग्गाबाट असुलउपर हुन सक्ने हो । यहाँ बैंकको कर्जा लगानीभन्दा अधिकतम मूल्याङ्कन रहेको सम्पूर्ण धितो लिलाम गरी बैंकले साँवा ब्याजभन्दा बढी रकम असुल गरेको देखिन्छ भने बैंकले लिनुपर्ने रकम कट्टा गरी बाँकी हुन आउने रकम हालसम्म पनि सरोकारवालालाई फिर्ता नगरेको अवस्था पनि प्रस्तुत मुद्दामा विद्यमान रहे भएको देखिन्छ । यसरी हेर्दा प्रस्तुत मुद्दामा कच्चा देखिएकोबाहेक धितो राखिएको अन्य जग्गाहरूको लिलामीबाट मात्र बैंकले कर्जा असुल गर्न पाउने देखियो । तसर्थ धितो राखिएकोमध्ये कच्चा देखिएको कि.नं. २६९, ४१८, ३४१ र ४३५को जग्गाहरूको हदसम्म मिति २०६१/२/३२ को धितो, मिति २०६१/२/२४ को रोक्का तथा मिति २०६८/४/१५ को लिलामीसमेत बदर हुने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट भएको फैसलालाई अन्यथा गर्नु नपर्ने ।

वादी दाबी पुग्ने भनी रौतहट जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९/३/२१ मा भएको फैसलालाई केही उल्टी गरी कि.नं. २६९, ४१८, ३४१ र ४३५ को हकसम्म मिति २०६८/४/१५ को लिलाम तथा सो लिलामबाट भएको दर्तासमेत आंशिक बदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०७१/८/१५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : सदिक्षा राउत

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०८१ साल वैशाख ३१ गते रोज २ शुभम् ।

- यसैसाथ लगाउ भई निम्न मुद्दा फैसला भएका छन्- ०७१-CI-१३७७, ०७१-CI-१६४०,

०७२-CI-०००६, ऋण असुलीसम्बन्धी सम्पूर्ण प्रक्रिया बदर, लिलाल डाँक बढाबढ मुचुल्का बदर दर्ता बदर दर्ता, कृषि विकास बैंक लि. शाखा कार्यालय, गौर रौतहट वि. रामविनोद कुमार गिरी, तनुजा कुमारी मुखिया भन्ने तनुजा देवीसमेत वि. रामविनोद कुमार गिरी, रामविनोद कुमार गिरी वि. तनुजाकुमारी मुखिया भन्ने तनुजा देवीसमेत

२३

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री अब्दुल अजिज मुसलमान, ०७६-CR-०५४८, ०७६-CR-०४०३, ०७९-RC-०१७२, कर्तव्य ज्यान / ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. कालु भन्ने संजोग लिम्बूसमेत, चैते भन्ने सुनिल किस्कु वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. परिवर्तित नाम ४-०१-त

वारदातपश्चात् प्रतिवादीहरू सुनिल किस्कु, ४-०१-ड, ४-०१-त भागी फरार भई भारतको सिलिगुडीतर्फ गएको भन्ने मिसिल संलग्न तथ्य प्रमाणबाट देखिन्छ । तर, यी प्रतिवादी संजोग लिम्बू सुतिरहेको स्थानबाटै पक्राउ भएको भन्ने देखिँदा केवल शंकाको भरमा मात्र यी प्रतिवादीलाई अभियोग लगाएको अवस्था देखियो । प्रतिवादी संजोग लिम्बू ज्यान मार्ने मतलबमा पसेको तथा वारदातस्थलमा गएको अवस्थासमेत पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन । केवल शंकाको भरमा मात्र निजलाई ज्यानसम्बन्धीको कसुरमा सजाय गर्नु न्यायसङ्गत हुँदैन । यी प्रतिवादीको अभियोग दाबी ठोस, प्रत्यक्ष तथा विश्वसनीय परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूबाट पुष्टि हुनसमेत नसकेको अवस्थामा निज प्रतिवादी संजोग लिम्बूका हकमा कसुरदार ठहर गर्न नमिल्ने ।

प्रतिवादीहरू चैते भन्ने सुनिल किस्कु, ४-०१-त समेतले मार्ने नै सम्मको पूर्वयोजना बनाई मार्ने मनसाय राखी धारिलो हतियार छुरीले राजन

मगर, संजय लिम्बू र संजय उराउलाई मरणासन्न हुने गरी घाँटीमा प्रहार गरी घाइते बनाई राजन मगरको अस्पताल लाने क्रममा मृत्यु भएको पुष्टि भएको हुँदा प्रतिवादीहरू साकाम भन्ने सुनिल किस्कुलाई ज्यानसम्बन्धीको १३(४) नं. बमोजिम जन्म कैद र परिवर्तित नाम ४-०१-त लाई ज्यानसम्बन्धीको १३(४) को कैद सजायमा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम दश वर्ष कैद सजाय तथा ज्यानसम्बन्धीको १५ नं. को ज्यान मार्ने उद्योगको कैद सजायमा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम तीन वर्ष कैद सजाय भएको र प्रतिवादी कालु भन्ने संजोग लिम्बूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी भएको झापा जिल्ला अदालतको मिति २०७३।१२।२८ को फैसला सो हदसम्म सदर हुने ठहर्‍याएको उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासको मिति २०७५।१०।२३ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत :- गेहेन्द्र राज रेग्मी

कम्प्युटर :- पद्मा आचार्य

इति संवत् २०८० साल माघ १८ गते रोज ५ शुभम् ।

२४

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल, ०७४-CI-१००४, खिचोला मेटाई दिवाल घर भत्काई चलन चलाइपाऊँ, अछैवर अहिर वि. काशिराम अहिरसमेत**

जिल्ला कपिलवस्तु नन्दनगर गा.वि.स. वडा नं. ९ख कि.नं. १११६ को ०-०-१६ को विवादित जग्गा वादी अछैवर अहिरको नाममा कायम रहेको भन्ने तथ्यमा विवाद रहेको देखिँदैने । उक्त जग्गामध्ये उत्तरतर्फबाट ०-०-२ जग्गा प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको भनी दाबी लिएको देखिन्छ । कपिलवस्तु जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।२।२२ मा भई आएको नक्सा तथा सरजमिन मुचुल्काबाट विवादित जग्गामा

प्रतिवादीहरू लामो समयदेखि बसोबास गर्दैआएको र पुरानो घर भत्काई नयाँ घर बनाएको भनी सरजमीन बेहोरा लेखाएको देखिन्छ । प्रतिवादीहरूले उक्त घर बनाई भोगचलन गर्दैआएको जग्गा मिन्हीडिह गाउँ ब्लकको आफ्नो हो भनी जिकिर लिएको र उक्त नक्सा मुचुल्काको न.नं. ९, ११ र १३, १५ को जग्गा प्रतिवादी काशीराम अहिरको घर जग्गा रहेको भनी कैफियत बेहोरा लेखिएकोबाट विवादित जग्गाको उत्तरतर्फ प्रतिवादीहरूको घर जग्गा रहेको भन्ने तथ्य पुष्टि हुन्छ र यी वादीले आफ्नो जग्गाको उत्तरतर्फबाट ०-०-२ जग्गा प्रतिवादीहरूले घर बनाई खिचोला गरेको भनेको तथ्यबाट समेत यी प्रतिवादीहरूको घर वादीको घर जग्गाभन्दा उत्तरतर्फ रहेको भन्ने नै देखिन आयो । उक्त नक्सा मुचुल्काको न.नं. १९ र न.नं. १० को जग्गा तथा तत्कालीन पुनरावेदन अदालत बुटवलको आदेशानुसार मिति २०७२।१।१९ मा भईआएको नक्सा मुचुल्काको न.नं. २३ मा कि.नं. १११६ मध्येकै जग्गा भनी लेखिएको र न.नं. १५ को जग्गाको प्रकृति पहिलो नक्साको न.नं. १० अनुसारकै समान देखिएको अवस्थासमेत छ । सो न.नं. १९ र १० को जग्गा प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको ठहर्‍याई सुरु जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलाउपर यी प्रतिवादीहरूले पुनरावेदन नगरी चित्त बुझाई बसेको अवस्थासमेत देखिन्छ । यस अवस्थामा दोस्रो नक्सा मुचुल्काको न.नं. १५ र न.नं. २३ को जग्गा वादीले नै चलन गर्न पाउने भन्ने विषयमा थप बोलिरहनु नपर्ने ।

कपिलवस्तु जिल्ला अदालतबाट भएको पहिलो नक्सा मुचुल्काको न.नं. १० र १९ तथा दोस्रो नक्सा मुचुल्काको न.नं. १५ र २३ का जग्गासम्ममा वादीले प्रतिवादीसमेतको खिचोला मेटाई चलनसमेत पाउने ठहर्‍याएको सुरु कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको मिति २०७१।५।५ को फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०७३।३।२६

को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।  
इजलास अधिकृत : गेहेन्द्रराज रेग्मी  
कम्प्युटर - पद्मा आचार्य  
इति संवत् २०८० साल चैत २५ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ७

२५

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७४-CR-१८१५, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. अल्लाहकोन गेडारा अमिला गिहानसमेत

विनय टेक्निकल इन्स्टिच्युट कम्पनी प्रा.लि. कम्पनी रजिस्ट्रारको कार्यालयमा कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा ५ को उपदफा (१) बमोजिम दर्ता नं. १४१८७७ दर्ता भएको कम्पनी स्वशासित संस्था रहेको छ । यसको छापा, नियमावली र प्रबन्ध-पत्रसमेत आफ्नै रहेको देखिन्छ । कम्पनीको प्रबन्ध-पत्रको प्रकरण ५ मा यस संस्थाको उद्देश्यको विषयमा उल्लेख भएको छ । उक्त प्रकरण ५ को (क) मा “विभिन्न किसिमका सिपमूलक तालिम, पेसागत तालिम, व्यावसायिक तालिम, व्यक्तित्व विकास, पेसागत विकाससम्बन्धी तालिम, विदेश जानेहरूका लागि विभिन्न तालिम, Care Giver सम्बन्धी तालिम तथा अभिमुखीकरणसम्बन्धी तालिम आदि सञ्चालन गर्ने गराउने” उद्देश्य रहेको देखिन्छ । विनय टेक्निकल प्रा.लि. ले विभिन्न अभिमुखीकरण र सिपमूलक तालिम सञ्चालन गर्नको लागि व्यक्तिहरूको नागरिकताको प्रमाण पत्रको प्रतिलिपि, फोटो, पासपोर्टको प्रतिलिपि, बायोडाटासमेतका कागजातहरू राखी फाराम भरी इच्छुक व्यक्तिहरूले नियमपूर्वक तालिममा सहभागी भएको देखिन्छ । यसरी यिनै तालिममा सहभागी व्यक्तिको कागजात बरामद गरेकै आधारमा वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ बमोजिम वैदेशिक रोजगारीमा विदेश पठाइदिन्छु

भनी कसैसँग कुनै रकम लिएको, विदेश पठाएको वा वैदेशिक रोजगारमा लगाइदिन्छु भनी झुठो आश्वासन वा प्रलोभन दिएको भन्ने आधारमा प्रतिवादीहरूलाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ बमोजिमको कसुर गरेको भन्न नमिल्ने ।

माथि विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादीहरू पुरनलाल चौधरी र चन्देश्वर चौधरी कार्यरत रहेको विनय टेक्निकल इन्स्टिच्युट कम्पनी ऐनबमोजिम स्थापित भएको एक स्वसाशित संस्था भएको र आफ्नो उद्देश्यबमोजिम विभिन्न व्यक्तिहरूको पासपोर्टलगायतका कागजात जम्मा गरी फाराम भराई सीपमूलक तालिम सञ्चालन गर्दै सेवा प्रवाह गरिरहेको अवस्थामा अल्लाहकोन गेडारा अमिला गिहान, पुरनलाल चौधरी र चन्देश्वर चौधरिसमेतबिच के कुन विषयमा छलफल भएको थियो भन्ने कुरा कहींकतै खुल्न आउँदैन । कसैले उजुर गरेको भन्ने अवस्था देखिँदैन । यस्तो आशङ्का को भरमा मात्र उक्त इन्स्टिच्युटमा मानिसहरूलाई विदेश पठाउन छलफल भइरहेको भन्ने आधारमा वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ बमोजिमको कसुर विपरीतको कार्य भएको भनी अनुमान गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन । वैदेशिक रोजगारको लागि अन्तरवार्ता लिएको भन्ने शंकाको आधारमा कसुर कायम गर्न नमिल्ने ।

विनय टेक्निकल इन्स्टिच्युटको प्रबन्ध पत्र र नियमावली हेर्दा वैदेशिक रोजगारमा जानको लागि आवश्यक पर्ने सिपमूलक तालिम दिने उद्देश्यले स्थापना भएको र तालिम लिन इच्छुक व्यक्तिले आफ्नो पासपोर्ट, नागरिकताको प्रमाण पत्र, बायोडाटा र फोटोसमेत साथै राख्नुपर्ने व्यवस्था नियमावलीमा रहेको र सोही अनुसार प्रक्रिया पूरा गरी तालिम सञ्चालन गर्ने गरेको देखिन्छ । कानूनबमोजिम स्थापित संस्था जसको आफ्नै प्रबन्ध पत्र र नियमावलीसमेत रहेको र सोही अनुसार आफ्नो गतिविधि सञ्चालन गरेको कार्यलाई अवैधानिक भन्न मिल्ने देखिएन । फौजदारी मुद्दामा

शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउने फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्त अनुसार यी प्रतिवादीहरूलाई कसुरदार कायम गरी सजाय गर्न मिलेन भनी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७४।३।२७ मा भएको फैसलालाई परिवर्तन गर्नुपर्ने अवस्था नहुँदा विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताले प्रत्यर्थी झिकाइनुपर्दछ भनी गर्नुभएको बहससँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, प्रतिवादीहरू विरुद्धको अभियोगदाबी प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ बमोजिम वादी पक्षबाट पुष्टि हुने प्रमाण पेस हुन सकेको नदेखिँदा अभियोगदाबी पुग्न सक्दैन भनी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७४।३।२७ मा भएको फैसला सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : मधुसुदन आचार्य

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

संवत् २०७८ साल पौष ७ गते रोज ३ शुभम् ।

२६

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७३-CR-१५५२, कर्तव्य ज्यान, जेठा अम्बर भन्ने ध्रुवबहादुर तामाङ वि. नेपाल सरकार**

पुनरावेदक प्रतिवादीले मृतकसँग झगडा भएको र निजले नै आफूलाई लडाईं घाँटी थिचेकाले आत्मरक्षा गर्दा बाँसको भाटाले हानेको हो भनी जिकिर लिएको भए तापनि मृतकको शरीरमा धारिलो हतियारले शरीरका विभिन्न भागमा प्रहार गरेको भन्ने कुरा मृतकको शरीरमा लागेको चोटबाट देखिएको तथा मृत्युको कारण Sharp Force Injury to Head and Neck भन्ने शव परीक्षण प्रतिवेदनमा उल्लेख भएको अवस्थामा प्रतिवादीले आत्मरक्षाको लागि मृतकलाई प्रहार गरेको नभई मान्ने उद्देश्यले नै प्रहार गरेको देखिन्छ । वारदातस्थलमा प्रतिवादी र मृतकबाहेक तेस्रो व्यक्तिको उपस्थिति नदेखिएको तथा मृतकको शरीरमा लागेको चोटको प्रकृति हेर्दा बाँसको भाटाले हुने प्रकृतिको नभई धारिलो हतियारको प्रहारबाट हुने प्रकृतिको देखिएको अवस्थामा उक्त हतियार बरामद

नभएकै कारणले पुनरावेदकले कसुरबाट सफाइ पाउने आधार बन्न सक्दैन । तसर्थ, अभियोग मागदाबीबाट सफाइ पाउँ भन्ने पुनरावेदकको माग दाबीसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादीले अदालतसमक्ष कसुर स्वीकार गरेको अवस्था र घर छाडी दुःख गरेर कमाएको रकम मासी आफ्नै श्रीमतीसँग नाजायज सम्बन्ध कायम गरेको थाहा पाएपछि सोही विषयमा छलफल गर्दाका अवस्थामा मृतकले पैसा पनि दिन्न, श्रीमती पनि लान्छु भनी प्रतिवादीलाई भनेकाले वारदात भएको भन्ने देखिन्छ । यसरी प्रतिवादी आफैँ पनि मृतकबाट पीडित भएको देखिएको अवस्थामा १५ वर्ष कैद गर्दा पनि ऐनको मकसद पूरा हुने नै हुँदा सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्न जाने देखी १५ वर्ष कैद सजाय गर्ने गरी मुलुकी ऐन, अ.बं. को १८८ नं.बमोजिम व्यक्त गरेको रायसमेत मनासिब नै देखिने ।

अतः यी पुनरावेदक प्रतिवादी जेठा अम्बर भन्ने ध्रुवबहादुर तामाङलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. विपरीत ऐ. १३(१) नं. बमोजिमको कसुर गरेकाले ऐ.१३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने तर सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्दा चर्को पर्ने देखी १५ वर्ष कैद सजाय गर्ने गरी मुलुकी ऐन, अ.बं. को १८८ नं. बमोजिम व्यक्त गरेको सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको रायसहितको फैसला सदर गर्ने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७३।१०।२४ भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : अञ्चन भट्टराई

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७९ साल भाद्र २६ गते रोज १ शुभम् ।

२७

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी, ०७६-WO-०३९५, उत्प्रेषणसमेत, कल्पना कपाली वि. नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत**

रिट निवेदिकाको जग्गा बुढीगण्डकी जलविद्युत् आयोजनाभित्र परेको हुँदा मुआब्जा निर्धारण समितिले निर्धारण गरेबमोजिमको मुआब्जा लिन जाँदा निर्धारित मूल्यको ३०% (तिस प्रतिशत) रकम कट्टा गरेको हुँदा सो रकम केबापत कट्टा गरिएको हो भनी मुआब्जा वितरण पुनर्वास तथा पुनःस्थापना इकाइसमक्ष निवेदन दिएकोमा सो सम्बन्धमा जानकारी यी निवेदिकाले पाउन नसकेको अवस्था मिसिल प्रमाणबाट देखिन्छ। आफ्नो सम्पत्तिको सम्बन्धमा यस्तो जानकारी पाउन नसकेको अवस्थालाई कानून र न्यायसम्मत मान्न सकिँदैन। विपक्षीहरूबाट निवेदिकाले यतिका समय व्यतीत हुँदासम्म आफ्नो जग्गाको मुआब्जाबाट ३०% (तिस प्रतिशत) किन कटाएको हो भनि निवेदनसमेत दिई उपर्युक्त निवेदनउपर हालसम्म केही निर्णय नभएको अवस्था देखिन आएबाट बुढीगण्डकी योजनाको लागि अधिग्रहण गरिएका जग्गाको कानूनबमोजिमको मुआब्जा यी निवेदिकाले पाउनुपर्ने अवस्थालाई मध्यनजर गरी यथाशीघ्र उक्त निवेदनउपर सम्बोधन हुन आवश्यक देखिने।

अतः यी निवेदिकाले मिति २०७६।३।२४ मा बुढीगण्डकी जलविद्युत् आयोजनाको वातावरण मुआब्जा विवरण पुनर्वास तथा पुनःस्थापना इकाइसमक्ष दिएको निवेदनउपर हालसम्म कुनै कारबाही नभएको र मिति २०७६।०४।२८ गते जिल्ला प्रशासन कार्यालयसमक्ष निर्धारित, छुट मुआब्जा दिलाई भराइपाउँ भनी पुनः निवेदन दिएकोमा मिति २०७६।०४।२८ गते च.नं. ६१७ बाट जिल्ला प्रशासन कार्यालयले इकाइलाई केवल सक्कल निवेदन पठाउने कार्यसम्म गरेको देखिँदा जग्गा प्राप्त ऐन, २०३४ अन्तर्गत नागरिकको सम्पत्तिजस्तो आधारभूत विषयमा निवेदन परिसकेपछि कानूनअनुरूप समयमा नै निर्णय गर्नुपर्नेमा निर्णय भएको नदेखिएको हुँदा अविलम्ब निर्णय गरी गराई निवेदिकालाई जानकारी दिनु दिलाउनु भनी विपक्षीहरूका नाममा परमादेश

जारी हुने।

इजलास अधिकृत : सोनी श्रेष्ठ

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७९ साल भाद्र १९ गते रोज १ शुभम्।

२८

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७५-CR-०११८, ०७५-CR-१७९४, कर्तव्य ज्यान, नरेन्द्र थापा मगर भन्ने नरबहादुर थापा वि. नेपाल सरकार, किशोर थापा मगर वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादीमध्येका नरेन्द्र थापा भन्ने नरबहादुर थापा मगरले मौकामा बयान गर्दा मिति २०६४।७।२१ गते राति जाहेरवालाको छोरा किरणकुमार मल्ललाई मसमेतले लखेट्दै जाँदा घटनास्थलमा पुग्दा निज किरणकुमार मल्ल लडेपछि निजलाई विकास गुरुङ र रिषिराम चौधरीले धारिलो हतियार प्रहार गरिसकेपछि मसमेत सो ठाउँबाट आ-आफ्नो घरतर्फ गई सुतेको हो। मैले कुनै हतियार प्रहार गरेको छैन भनी र अदालतमा आई बयान गर्दा म नाच्ने कलाकार भएकोले मोतिबस्तीमा साँस्कृतिक कार्यक्रममा थिएँ। मैले किरणकुमार मल्ललाई खुकुरी लिई लखेटी हत्या गरेको होइन म नाच्न नै व्यस्त थिएँ। वारदातमा मेरो कुनै संलग्नता छैन भनी आफ्नो बयान बेहोरा लेखाएको देखिन्छ। अर्का प्रतिवादी किशोरकुमार थापा मगरले मौकामा बयान गर्दा मृतक किरणकुमार मल्ललाई मसमेतका प्रतिवादीहरू मिली लखेट्दै जाँदा निज लडेपछि विकास गुरुङ र रिषिराम चौधरीले हतियार प्रहार गरेको हो। म सो ठाउँबाट आफ्नो घर आई सुतेको हो। मैले कुनै हतियार प्रहार गरेको छैन भनी र अदालतमा बयान गर्दा मैले किरण मल्ललाई लखेटेको तथा कुटपिट गरेकोसमेत होइन वारदातको बारेमा मलाई केही थाहा छैन। घटनाबारेमा मैले अर्को दिन मात्र थाहा पाएको हुँ भनी घटना वारदातलाई आफ्नो संलग्नता नभएको भनी इन्कारी बयान गरेको देखिने।

प्रतिवादीहरूसमेतउपर जाहेरवाला कर्णबहादुर मल्लले किटानी जाहेरी दिएको र प्रत्यक्ष देख्ने मानिसहरू केशरबहादुर मल्ल, समिर रानासमेतका मानिसहरूले मौकामा गरिदिएको कागजमा सिलसिलाबद्धरूपमा किरणकुमार मल्लको कर्तव्य गरी प्रतिवादीहरूले हत्या गरेको हो भनी लेखाइदिएको बेहोरालाई अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गर्दा मौकाको कागजलाई अस्वीकार गरी हामीले शंकाको भरमा यी प्रतिवादीहरूले कुटपिट गरी किरणकुमार मल्ललाई मारेका हुन् भनी गरिदिएको कागज झुठ्ठा हो । पछि बुझ्दा यी प्रतिवादीहरू निर्दोष रहेछन् । उक्त कुरा १०/१५ दिनपछि मात्र थाहा भएको हो भनी बकपत्र गरेको देखिए पनि मौकामा नै कागज गर्ने विमला रानाले मिति २०६४।७।२१ गतेको राति मेरो पसलमा रक्सी खाई मेरो पसलकै सिसा फुटेको विषयमा विवाद भई होहल्ला झगडा गरेका थिए । मेरो पसलमा भएको चुच्चो फलामे दाउ हराएको थियो । उक्त दाउ देखाउँदा देखेँ भनी सनाखतसमेत गरिदिएको र किरणकुमारको मृत्यु यिनै प्रतिवादीहरूले कुटपिट गरी धारिलो हतियारसमेतले प्रहार गरी मारेका हुन् भनी लेखाइदिएको देखिने ।

बरामदी मुचुल्कामा यी प्रतिवादीमध्येका नरेन्द्र थापा भन्ने नरबहादुर थापामगरको फलामको काठको बिँड भएको धारिलो खुकुरी बरामद भएको देखिन्छ । मोतीबस्तीमा भएको साँस्कृतिक कार्यक्रम सकिएपछि उक्त कार्यक्रममा सहभागीहरू कार्यक्रम समाप्त भएपछि बेलुका घर फर्कने समयमा मृतकसमेतका साथीहरूले विमला रानाको होटलमा खाजा नास्ता तथा रक्सीसमेत खाई होहल्ला भएको र धकेला धकेल हुँदा होटलको सिसा फुटेको सो सिसाको सट्टा भर्ना तिर्ने विषयमा झगडा परेको हो । पछि झगडा साम्य भइसकेपछि घरतर्फ जाँदा पुनः झगडा भएको हो । विमला रानाको पसलको भान्सा कोठामा रहेको चुच्चो फलामको दाउ उक्त दिन हराएको र प्रतिवादीहरूबाट

बरामद भएको देखिन्छ । सो फलामको चुच्चो दाउ, खुकुरी र चक्कुसमेतका धारिलो हतियार र लात मुक्का लाठालगायतका हतियार प्रयोग गरी किरणकुमार मल्ललाई कुटपिट गरी हिलोमा लतपत पारी धारिलो हतियारले शरीरका विभिन्न भागमा प्रहार गरेको र सोही चोटका कारण मृत्यु भएको मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन्छ । यी प्रतिवादीहरू नरेन्द्र थापा भन्ने नरबहादुर थापा मगर र किशोरकुमार थापामगरले हामीले कुटपिट गरेका छैनौँ भनी बयान दाबी लिएको देखिए पनि यिनीहरूको उक्त दिन भएको वारदातमा उपस्थिति रहेको भनी अन्य प्रतिवादीहरूले मौकाको बयानमा पोलगरी बेहोरा लेखाइदिएबाट पुष्टि हुन आउँदछ । यी प्रतिवादीहरूले मृतकलाई धारिलो हतियार प्रहार गरेकोमा इन्कार रही अदालतमा बयान गरेको देखिए पनि अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट मौकाको बयानलाई खण्डन गरी अदालतको बयान पुष्टि गराउन सकेको देखिँदैन । किरणकुमार मल्लको मृत्युको सम्बन्धमा यी प्रतिवादीहरूको संलग्नता थियो वा थिएन भनी साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(२) नं.मा भएको कानूनी व्यवस्था हेर्दा “घेरा दिने, बाटो, गौँडा छेक्ने वा भग्न उम्कन नपाउनेसमेत गैह्र काम गरी मार्ने संयोग पारिदिनेलाई पाँच वर्ष कैद गर्नुपर्छ” भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । मृतक किरणकुमार मल्ललाई लखेट्दै लगेको अवस्थामा यी प्रतिवादीहरूले मृतक भाग्न उम्कनसमेत नसक्ने स्थिति सिर्जना गरेको देखिन्छ भने अर्काले हतियार प्रहार गर्दा आफूहरूले रोक्ने छेक्ने कार्य यी प्रतिवादीहरूले गरेको पनि देखिँदैन । ज्यान मर्दै छ बचाउ भनेर गुहार मान्ने वा कुटपिट भइरहेको ठाउँमा मृतकलाई बचाउनमा सहयोग गरेको कुनै उपाय रचेकोसमेत देखिएन । आफूसँगै हिँडे बसेका व्यक्तिले यत्रो तुलो घटना घटाउँदा आफूहरू मुकदर्शक भई हेरी बसेको अवस्था देखिँदा मुख्य अभियुक्तहरूले धारिलो हतियारले चोट छोडी निज मृतक रगतले लतपतिपछि मृत्यु भयो होला भन्ने आशंका भएपछि मात्र आफ्नो

घरतर्फ गएको भनी बयान बेहोरा लेखाएको देखिएबाट यी प्रतिवादीहरूले कसुरबाट उन्मुक्ति पाउने अवस्था नदेखिने।

साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(२) नं. बमोजिम पाँच वर्ष अर्थात् समान सजाय भएका प्रतिवादीहरू नरेन्द्र थापा भन्ने नरबहादुर थापा मगर र किशोरकुमार थापा मगरले उच्च अदालतबाट हामीलाई भएको सजाय सर्वोच्च अदालतबाट प्रतिपादित नजिर सिद्धान्त प्रतिकूल भएकोले सफाइ पाउनुपर्दछ भन्ने पुनरावेदन जिकिरतर्फ विवेचना गर्दा यी प्रतिवादीहरू घटना वारदातमा सँगै रहेका र किरणकुमार मल्ललाई लखेट्ने कार्यमासम्म सामेल भई मृतक लडेपछि अरूले लाठी ढुङ्गा तथा धारिलो हतियार खुकुरी, दाउ, चक्कु प्रहार गर्न थालेपछि मात्र घरतर्फ गई सुतेको, भोलिपल्ट मात्र घटनाको विषयमा थाहा पाएको भनी सुरु अदालतमा इन्कारी बयान गरेको देखिए पनि यी प्रतिवादीहरूले सोको यथार्थता पुष्टि हुने कुनै प्रमाण पेस गर्न सकेको पाइँदैन। आफू उक्त वारदातस्थलमा रहेका थिएनौं भनी बयान बेहोरामा जिकिर लिए पनि अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट उक्त कुरा पुष्टि गराउन सक्नुपर्नेमा सो गर्न सकेको पाइँदैन। यी प्रतिवादीहरूको उक्त वारदातमा संलग्नता थियो वा थिएन भनी सुक्ष्मरूपमा मनन गर्दा प्रतिवादीहरूमध्येकै रिषिराम चौधरीले मौकामा बयान गर्दा यी प्रतिवादीहरूउपर पोल गरी बयानसमेत गरेबाट वारदातस्थलमा यी प्रतिवादीहरूको उपस्थिति र संलग्नता रहेको देखिन्छ। वारदातस्थलमा यी प्रतिवादीहरू समूहगत रूपमा गएको मार्नमा सहयोगीको भूमिका निर्वाह गरेको देखिन आएकोले पुनरावेदन अदालत बुटवलले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(२) नं. बमोजिम ५ (पाँच) वर्ष कैद सजाय गरेको निर्णयलाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

तसर्थ, प्रतिवादीहरूबाट किरणकुमार मल्ललाई मार्नमा संयोग पारिदिनेसम्मको कार्य

गरे भएको देखिन आएकोले साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(२) नं. अनुसारको कसुर गरेको ठहर्‍याई ५ (पाँच) वर्ष कैद हुने भनी सुरु नवरपरासी जिल्ला अदालतले गरेको फैसलालाई सदर गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६७।४।१९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : मधुसुदन आचार्य

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७८ साल पौष ६ गते रोज ३ शुभम्।

२९

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७०-CR-१३५८, ०७०-CR-१६१५, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. फेकु सिंह वि. फेकु सिंह वि. नेपाल सरकार**

वादी नेपाल सरकार र प्रतिवादी वाशुदेव साउद भएको जबरजस्ती करणी मुद्दामा (०६७-CR-०७२७) “जबरजस्ती करणी मुद्दामा पीडित व्यक्ति स्वयम्ले व्यक्त गरेको कुरा महत्त्वपूर्ण प्रमाण हो। पीडित स्वयं घटनाको वा वारदातको चश्मदिद गवाह पनि हो” भनी कानूनी सिद्धान्त कायम भएको पाइन्छ। त्यसै गरी अर्जुनबहादुर पाण्डे विरुद्ध नेपाल सरकार भएको जबरजस्ती करणी मुद्दामा (फौ.पु.नं. ३३१६) “घटनाका सम्बन्धमा घटनाबाट पीडित व्यक्तिले व्यक्त गरेको कुरा तथा घटना भएको थाहा पाउने व्यक्तिले घटनाको तत्कालपछि व्यक्त गरेको कुरा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १०(१)(क) र (ख) बमोजिम अदालतले प्रत्यक्ष प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्नुपर्ने हुन्छ” भनी सिद्धान्त कायम भएको पाइन्छ। प्रस्तुत मुद्दालाई पीडितले अदालतमा गरेको बकपत्रको स.ज. ४ र ५ मा प्रतिवादीमध्येका रामकुमार सिंहले सहमतिमा करणी गरिसकेपछि प्रतिवादी फेकु सिंह र ज्ञानेन्द्र सिंहले डर त्रास देखाइ इच्छाविपरीत जबरजस्ती करणी गरेका हुन् भनी बकपत्र गरेको पाइन्छ भने वारदातको सम्बन्धमा यी पीडितले वारदात / घटनाको लगत्तै घरमा पुगी

व्यक्त गरेको सुन्ने सोमारीदेवी, सरस्वतीदेवीसमेतको बकपत्रबाटसमेत यी पुनरावेदक प्रतिवादी फेकु सिंहले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको प्रमाणित हुन आएकोले अभियोग माग दाबीबाट सफाइ पाउँ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादी फेकु सिंहको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन सकिने अवस्था नदेखिने।

वादी नेपाल सरकारले प्रत्यर्थी प्रतिवादी फेकु सिंहलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३क. नं.बमोजिम सामूहिक जबरजस्ती करणीतर्फको थप सजायसमेत गरिपाउँ भनी पुनरावेदन जिकिर लिएको पाइन्छ। पीडितका हजुरबुबा जगन्नाथ महतोले आफ्नो नातिनीलाई प्रतिवादी फेकु सिंह, रामकुमार सिंह र ज्ञानेन्द्र सिंहले जबरजस्ती करणी गरेकोले कारबाही गरिपाउँ भनी जाहेरी दरखास्त दिएकोमा प्रतिवादी रामकुमार सिंहले पीडितलाई सहमतिमा करणी गरेको हुँ भनी गरेको बयानलाई पीडितले पनि सहमतिमा नै करणी लिनेदिने कार्य भएको हो भनी बकपत्र गरेकोले निज प्रतिवादी रामकुमार सिंहको हकमा अभियोग मागदाबीबाट सफाइ दिएको सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतको फैसला पुनरावेदन अदालत जनकपुरबाट मिति २०६६।२।२७ मा सदर भई अन्तिम भइसकेको मिसिलबाट देखिन्छ। अर्का प्रतिवादी ज्ञानेन्द्र सिंह अदालतमा हाजिर नभई फरार भएकोले निजका हकमा साबिक मुलुकी ऐन, अ.व. १९० नं.बमोजिम मुलतबीमा रहनुका साथै निजका हकमा अभियोग अनुसारको कसुर स्थापित हुन बाँकी नै रहेको छ। अब, यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीको हकमा मात्र जबरजस्ती करणीको अभियोग स्थापित भएकोले यी प्रत्यर्थी प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सामूहिक बलात्कारतर्फको थप सजाय गर्नु न्यायको रोहमा उपर्युक्त नदेखिएकोले यी प्रत्यर्थी प्रतिवादी फेकु सिंहलाई सामूहिक जबरजस्ती करणीतर्फको थप सजाय गरिपाउँ भन्ने हदसम्मको वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः पुनरावेदक प्रतिवादी फेकु सिंहलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिएको सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी गरी पुनरावेदक प्रतिवादी फेकु सिंहलाई अभियोग दाबीबमोजिम साबिक मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३(४) नं. को कसुरमा सोही महलको ३(४) नं.बमोजिम ५ (पाँच) वर्ष कैद सजाय र ऐ. को १० नं. बमोजिम क्षतिपूर्तिबापत रु.३५,०००।- (पैंतिस हजार रूपियाँ) प्रतिवादीबाट पीडितले भराइपाउने ठहर्‍याई अर्का प्रतिवादी ज्ञानेन्द्र सिंह विरुद्धको अभियोग दाबी निज फरार रहेको कारणले मुलतबी नै रही रहेको अवस्थामा यी प्रतिवादीसमेत मिली जाहेरवालीउपर सामूहिक बलात्कार भयो भन्न नमिल्ने हुँदा निजलाई ऐ. महलको दफा ३(क) बमोजिम थप सजायसमेत गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर सो हदसम्म पुग्न नसक्ने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत जनकपुरको मिति २०६९।१।२७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : लोकनाथ पराजुली

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७९ साल मङ्सिर २५ गते रोज १ शुभम्।

३०

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७१-सी- ००३४, निषेधाज्ञा, रसुल मियाँ वि. कासिम मियाँसमेत**

प्रस्तुत मुद्दामा दाबीको कि.नं. २२८ को जग्गामा प्रत्यर्थीहरूले घर निर्माण गरेकाले खिचोला मेटाई घर उठाई बाटो निकास खुलाइपाउँ भनी यिनै वादीले दिएको लगाउको ०७१-सी- ००३३ को मुद्दामा कि.नं. २२८ को जग्गामा वादी दाबी पुग्न नसक्ने र न.नं. ९ बाट प्रत्यर्थी मक्की मियाँले पुनरावेदकको कि.नं. ४९५ को जग्गामा ०-०-०.२ धुर जग्गा खिचोला गरी नयाँ पक्की घर निर्माण गर्न थाली खिचोला गरेको ठहरी आज यसै इजलासबाट फैसला भएको

छ। पुनरावेदकको कि.नं. ४९५ को जग्गाको दक्षिणतर्फ रहेको कि.नं. २२८ को जग्गामा यी पुनरावेदकले बाटो निकासको रूपमा प्रयोग गर्दैआएको पुष्टि हुने कुनै प्रमाण पेस हुन भएको मिसिलमा देखिँदैन। पन्सेरा गाउँ विकास समितिको मिति २०६७।६।२१ को गाउँ सर्जमिन मुचुल्कासहितको सिफारिसबाट कि.नं. २२८ को गाउँ ब्लकको जग्गामा प्रत्यर्थी मक्की मियाँको बसोबाससमेत रहेको देखिन्छ। साथै विवादित कि.नं. २२८ को जग्गामा यी पुनरावेदक तथा निजका भाइको निर्विवाद हक स्थापित हुन नसकेको, पुनरावेदक तथा निजका भाइको दर्ता स्रेस्ताको जग्गाको पूर्वतर्फ डगर बाटो देखिई निकास नरोकिएको यस अवस्थामा निषेधाज्ञाको आदेश जारी नगरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिने।

अतः निवेदकको विवादित जग्गामा निर्विवाद हकको अभाव रहेको र घरहरू निर्माण भइसकेको स्थितिमा निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न मिल्ने नहुँदा निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदन दाबी खारेज हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७०।१०।५ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : लोकनाथ पराजुली

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७९ साल मङ्सिर २५ गते रोज १ शुभम्।

३१

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७०-CR- ११८१, जालसाज, भुटी खातुन भन्ने सविस खातुनसमेत वि. गमकलाल चौधरीसमेत**

गाउँ ब्लकको कि.नं. २२८ को जग्गामा पुनरावेदक वादीहरूको हक भोग दर्ता रहे भएको पाइँदैन। पुनरावेदक स्वयम्ले प्रस्तुत मुद्दा र लगाउका अन्य मुद्दामासमेत गाउँ ब्लकको ऐलानी जग्गा हो भनी फिराद पत्रमा उल्लेख गरेको देखिएबाट कि.नं.

२२८ को जग्गामा यी पुनरावेदक वादीहरूको हक स्वामित्वको देखिन आएन। पुनरावेदकहरूको नाममा वा निजहरूको समेत हक भोग र स्वामित्वमा नरेहको उक्त जग्गा प्रत्यर्थी प्रतिवादी मो. मक्की मियाँले दिएको निवेदनका आधारमा महेशकुमार चौधरीसमेतले गरिदिएको गाउँ सर्जमिनका आधारमा गाउँ विकास समितिको कार्यालय पन्सेराका सचिव प्रत्यर्थी प्रतिवादी गमकलाल चौधरीले गरिदिएको मिति २०६७।६।२१ को सिफारिसबाट पुनरावेदक वादीहरूको हक मेटिने, कुनै तरहले नोक्सान पर्न जाने अवस्थासमेत नदेखिएकोले सुरु फैसला उल्टी गरी प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरूलाई सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादी तथा निजका कानून व्यवसायीहरूको बहससँग सहमत नहुने।

अतः माथि उल्लिखित आधार, प्रमाण कारणहरूबाट पुनरावेदक वादीले दायर गरेको लगाउको जग्गा खिचोला घर उठाई चलन निकास बाटो खुलाइपाउँ मुद्दाबाटै घर जग्गा निकास बाटोसम्बन्धी विवादको निरूपण हुने भएबाट वादी दाबीको सर्जमिन सिफारिसबाट वादीहरूको हकमा कुनै असर पर्ने अवस्था विद्यमान रहेको नदेखिँदा साबिक पन्सेरा गाउँ विकास समितिको मिति २०६७।६।२१ को सर्जमिन मुचुल्का एवम् सिफारिसलाई जालसाजी कायम गरी प्रतिवादीहरूलाई साबिक, मुलुकी ऐन, किर्ते कागजको ७ र १० नं. बमोजिम हदैसम्म सजाय गरिपाउँ भन्ने वादीहरूको दाबी पुन नसक्ने ठहर्‍याएको मिति २०७०।७।२६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : लोकनाथ पराजुली

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७९ साल मङ्सिर २५ गते रोज १ शुभम्।

३२

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या. डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०६९-CR-०६३९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. मनोजकुमार साह सुडी**

यस अदालतको संयुक्त इजलासबाट शेरबहादुर नेपालीको जाहेरीले वादी नेपाल सरकार प्रतिवादी पदमबहादुर जुगजाली मगर भएको कर्तव्य ज्यान मुद्दामा पनि “अनुमान, आशंका र सम्भावना अनिश्चित तत्त्व भएकोले यस्ता अनिश्चित तत्त्वले ज्यान मारेको पुष्टि गर्ने प्रमाणको स्थान ग्रहण गर्न नसक्ने भन्ने सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएकोले यहाँ प्रस्तुत मुद्दामा उल्लेख गर्नु सान्दर्भिक हुने देखिन्छ। यी प्रतिवादीले कसुर गरेको तथ्यमा इन्कारी गरेको, प्रत्यक्ष रूपमा घटनाको देखी जाने साक्षी प्रमाण नभएको, स्वयं मृतक लामो समयदेखि लागु औषध सेवनकर्ता रही घटना घट्ने दिनमासमेत लागु औषध सेवन गरेको भन्ने खुल्न आएको, मृतकलाई टाउको दुखेको भनी दबाई खाएको भन्ने बेहोरा उल्लेख गरिएकोमा होटलको कोठाबाट दबाइको खोलसमेत बरामद भएको देखिएको र अत्यधिक लागु औषधको सेवनको कारणबाट पनि मस्तिष्कघात (Brain hemorrhage) हुन गई मृत्यु हुनसक्ने तथ्य मेडिकल बोर्डको प्रतिवेदनमा समेत उल्लेख गरेको देखिएको हुँदा अनुमान र शंकाकै आधारमा परिस्थितिजन्य अवस्थसँग तुलना गरी प्रतिवादीलाई सुरु अभियोग मागदाबी अनुसारको दोषी किटानी गर्दा फौजदारी न्यायको मक्सद पूरा हुन नसक्ने हुँदा यस अदालतको मिति २०७३।२।२० को आदेश एवं वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, प्रतिवादीको ध्यान शारीरिक सम्बन्धमा मात्र केन्द्रित रही सोहीअनुरूपको व्यवहार गर्दा मृतकको शारीरिक अवस्थालाई उपेक्षा गरी मृतकलाई समयमा नै उपचार गरी बचाउनेतर्फ प्रयास नगरी हेलचक्रयाई गरेको कारणबाट मृतकको मृत्यु हुन गएको ठहर गरी प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको ६(२) नं.बमोजिम १ (एक) वर्ष ९ (नौ) महिना कैद र रु. ५००।- (पाँच सय रूपियाँ) जरिवाना हुने ठहर गरी गरिएको तत्कालीन पुनरावेदन

अदालत विराटनगरको मिति २०६९।१।२७ को फैसला मिलेकै देखिँदा अन्यथा गरिरहनु परेन। वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।  
इजलास अधिकृत : बासुदेव पाण्डे, श्री सुशिला पाण्डे  
कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ  
इति संवत् २०७९ साल वैशाख २३ गते रोज ६ शुभम्।

३३

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७२-CI-०८३७, घर पर्याल भत्काई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ, विष्णुदेवी पाण्डे वि. रमेशकुमार पाण्डेसमेत**

प्रस्तुत फिरादपत्र मिति २०७०।१।२० मा दर्ता भएको देखिएको र विद्यालय भवन २०६८ सालमा नै बनाई सार्वजनिक रूपमा पठनपाठनका लागि भोग भइरहेको हुँदा उल्लिखित कानूनी व्यवस्था अनुसार हदम्यादभित्र दर्ता भएको भनी मान्न मिल्ने अवस्था देखिन नआउने।

अतः माथि उल्लिखित विवेचित आधार कारणबाट हदम्याद नघाई दर्ता भएको प्रस्तुत फिरादपत्रबाट वादीलाई उपचार प्रदान गर्न सकिने अवस्था नदेखिएको हुँदा घर, पर्याल भत्काई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ भन्ने वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्नु सुरु दाड देउखुरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।१।२१ मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०७१।६।२८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : कुलप्रसाद दाहाल

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०८० साल भाद्र १० गते रोज १ शुभम्।

३४

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७३-CR-००६७, डाँका चोरी (प्राचीन स्मारक बुद्धको मुर्ति चोरी), कुमार (थिड)**

लामा वि. नेपाल सरकार

३५

प्रतिवादीले आरोपित मूर्ति चोरीको कसुर गरेकोमा मौकामा अनुसन्धानको क्रममा बयान गर्दा साबित भए पनि अदालतसमक्ष बयान गर्दा कसुरमा पूर्णतः इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । निजउपर जाहेरवालाले चोरीको कार्यमा संलग्नता देखाई किटानी जाहेरी दिन सकेको पाइँदैन । मूर्ति चोरीको योजना बनाउने तथा चोरी गर्ने कार्यमा यी प्रतिवादीको संलग्नता रहेको मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट पुष्टि हुन सकेको पनि पाइँदैन बरामद भएको बुद्धको मूर्ति निजको साथबाट बरामद नभएको र जाहेरवालाको घर गुम्बाबाट अन्य धनमाल र लत्ता कपडासमेत यी प्रतिवादीले चोरी गरेको भन्ने शंकारहित तवरबाट पुष्टि हुन सकेको देखिन आएन । शंकारहित तवरबाट यी निवेदकलाई केवल अनुमान र प्रहरीमा भएको बयानको आधारमा दोषी कायम गर्नु न्यायोचित एवं कानूनी राज्यको मान्य सिद्धान्तबमोजिम भएको मान्न नमिल्ने हुँदा निवेदक प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी भएको हुम्ला जिल्ला अदालतको फैसलालाई अन्यथा भन्न सकिने अवस्था नदेखिने ।

अतः माथि उल्लिखित आधार, कारण र सर्वोच्च अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतबाट यी प्रतिवादी कुमार थिङ्ग लामालाई डाँका चोरीको अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी भएको सुरु हुम्ला जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी गरी यी प्रतिवादीलाई कैद, जरिवानासमेत हुने ठहर्नाई तत्कालीन पुनरावेदन अदालत जुम्लाको मिति २०७१।८।२३ को फैसला मिलेको नदेखिँदा सो फैसला उल्टी भई निज प्रतिवादी कुमार थिङ्ग लामाले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ।

इजलास अधिकृत : अमृता कुमारी शर्मा

कम्प्युटर : सुजन नेपाल

इति संवत् २०८० साल साउन ३२ गते रोज ५ शुभम् ।

मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७३-८१-१२२९, उत्प्रेषण, रामपुकार रौनियार वि. जिल्ला अनौपचारिक शिक्षा समिति, पर्सासमेत

जिल्ला अनौपचारिक शिक्षा समिति, जिल्ला प्रशासन कार्यालय पर्सासमेतको लिखित जवाफबाट यी निवेदक संस्थाले मिति २०७१।१२।२३ मा गरेको सम्झौताबमोजिम अनौपचारिक कक्षा सञ्चालन गर्दैआएका राष्ट्रिय बाल विकास र महिला कल्याण संस्थाले चलाएको ७३ वटा साक्षरता कक्षामध्ये १८ वटा सञ्चालनमा रहेका र बाँकी ५५वटा कक्षा सञ्चालनमा नरहेको भन्ने प्रतिवेदन परेकाले उक्त सञ्चालनमा नरहेका साक्षरता कक्षा रद्द गर्ने र निजहरूको पारिश्रमिकसमेत रोक्का राख्ने भनी जिल्ला अनौपचारिक शिक्षा समितिको मिति २०७२।२।२९ मा बसेको बैठकले निर्णय गरेको भनिएको छ । उक्त निर्णय बदरको लागि मिति २०७२।११।५ मा यी निवेदक प्रस्तुत रिट निवेदन दर्ता गर्न आएको देखिन्छ । यी पुनरावेदकको हक जाने कार्य भएको देखाई निवेदकले तत्कालै निवेदनसाथ सम्बन्धित कानूनका आधारमा सम्बन्धित अदालतमा उपस्थित भएको देखिँदैन । एकातिर रिट क्षेत्रको माध्यमबाट न्याय निरूपण गर्नुपर्ने प्रकृतिको विवाद नदेखिएको र अर्कोतर्फ ढिलो गरी निवेदन लिई अदालत आउनुको कारणसमेत यी निवेदकले रिट निवेदनमा खुलाउन नसकेको अवस्था हुदा विलम्ब हुनको आधार कारणबेगर निर्णय भएको मितिले ८ आठ महिनापछि निवेदन दर्ता हुन आएको देखिएबाट निवेदकले तत्कालै उपचार खोजेको देखिँदैन । आफ्नो कानूनी अधिकार र उपचारतर्फ यी निवेदक सचेत रहेको पाइँदैन । यसरी सम्झौताबाट प्राप्त भएको हकलाई कानूनी हकको संज्ञा दिन मिल्ने नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिको उत्प्रेषणको आदेश

जारी गर्न मिलेन खारेज हुने ठहर्छ भनी भएको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको उक्त फैसला पुनरावेदन जिकिर अनुसार उल्टी हुनुपर्ने मनासिब आधार कारणसमेत निवेदकले खुलाउन सकेको नदेखिने ।

तसर्थ: पुनरावेदन अदालत हेटौंडाले रिट निवेदन खारेज हुने गरी मिति २०७३।१३।१ मा गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : मधुसुदन आचार्य

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७८ साल पुस ९ गते रोज ६ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७३-CI-१२३१, परमादेश, रामपुकार रौनीयार वि. जिल्ला शिक्षा कार्यालय, पर्सा, वीरगन्जसमेत भएको मुद्दामा यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

३६

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०६७-CI-१५०५, कुत मोही, चन्द्रवती देवी कोइरीन वि. भोला सहनी मलाह**

विवादित जग्गाको मोही प्रत्यर्थी प्रतिवादी भएकोमा विवाद छैन । मोही निस्कासनको लागि उजुरी दर्ता गर्दा २०४६ सालको कुतको विवाद देखाएको र सोही विषयमा सीमित रही भूमि सुधार कार्यालय, पर्साबाट मिति २०४७।६।२७ मा निर्णय भएको, सो निर्णय पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०५१।१।१९ मा बदर भई पुनः निर्णय गर्न पठाएको देखिन्छ । मिति २०५१।१।१९ को पुनरावेदन अदालतको फैसलाबमोजिम फिर्ता भएको मिसिलमा २०६३।९।२० मा फैसला हुँदा मोही भोला साहनीले २०६३।५।१५ मा तारेख गुजारेको विषयलाई आधार बनाएको देखिन्छ । मोहीसम्बन्धी विषयमा पुनरावेदन अदालतको आदेशबमोजिम तथ्य प्रमाण बुझी फैसला गर्न भूमि सुधार कार्यालयबाट १२ वर्षभन्दा बढी समय लगाउनुको कुनै कारण आधार मिसिलबाट खुल्दैन । २०४६ सालको कुतको विषयलाई विवादको

रूपमा ग्रहण गरे पछि सोही कुतको विषयमा सिमित रही मनासिब माफिकको समयभित्र निर्णय गर्नुपर्नेमा मिति २०६३।५।१५ मा तारेख गुजारेको विषयलाई निर्णयाधार बनाउनु भूमि सुधार कार्यालयको सम्बन्धित अधिकृतको असक्षमताको उदाहरण नै मान्नुपर्छ । २०४६ सालको कुत बुझाएको भनी प्रत्यर्थीले दाबी लिएको र तत्पश्चात्का वर्षहरूमा समेत प्रत्यर्थीतर्फबाट अनवरत रूपमा जग्गा कमाएको छैन भनी प्रमाण देखाउन नसकेको अवस्थामा भूमि सुधार कार्यालयबाट निर्णय हुँदा तथ्य र मिसिल संलग्न प्रमाणहरूको विवेचना भएको नदेखिएको अवस्थामा पुनरावेदन अदालतबाट मोही निष्कासन नहुने भनी मिति २०६७।२।१० मा भएको फैसलामा कानूनतः त्रुटि नदेखिने ।

यसरी विवादित वर्षपछिको वर्षको कुत वादी जग्गाधनीले बुझी लिएको भरपाई प्रत्यर्थी / प्रतिवादीले पेस गरेको देखिएबाट पनि पुनरावेदक वादीले प्रत्यर्थी प्रतिवादीलाई मोही स्वीकार गरेको देखिन आएको हुँदा पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसला मिलेकै देखियो । यस अदालतबाट प्रत्यर्थी झिकाउँदा लिएको आधार कारणसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः माथि उल्लिखित कानूनी व्यवस्था, मिसिल संलग्न कागजातहरूको अवलोकन, मूल्याङ्कन र विश्लेषणको आधारमा प्रतिवादी भोला सहनी मलाहले सालसालको कुत बाली बुझाएको तथा धरौट राखी आएको र २०५९ सालमा पनि पुनरावेदक वादी जग्गा धनीले कुत मोही मुद्दा दिएको देखिएबाट सो वर्षसम्म पनि जग्गा धनीले मोही स्वीकार गरी आएको देखिँदा २०४६ साल १ वर्षको बाली नबुझाएको भन्ने मात्र आधारमा मोही निष्कासनसमेत हुने ठहर्‍याएको भूमि सुधार कार्यालय, पर्साको मिति २०६३।९।२० को फैसला मिलेको नदेखिँदा उक्त फैसला सो हदसम्म उल्टी गरी सो २०४६ सालको कुत बाली बुझाएको भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीले भरपाई पेस गर्न सकेको नहुँदा कुत बाली भराइदिने ठहराएको हदसम्म

भूमि सुधार कार्यालय, पर्साको फेसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति २०६७।२।१० को फेसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : निराजन पाण्डे

कम्प्युटर : सुजन नेपाल

इति संवत् २०७९ साल भदौ १४ गते रोज ३ शुभम् ।

इजलास नं. ८

३७

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल, ०७७-CI-०२७६, परमादेशसमेत, निरकुमार राई वि. षडानन्द नगरपालिका दिङ्ला, भोजपुरसमेत**

पुनरावेदक निरकुमार राई श्री सिंहदेवी प्रा. वि.मा स्थायी शिक्षकको रूपमा कार्य गर्दैआएकोमा सो विद्यालय षडानन्द उच्च मा.वि.मा समायोजन हुने भनी मिति २०७०।३।१४ मा निर्णय भएको भन्ने जिल्ला शिक्षा कार्यालय, भोजपुरको मिति २०७०।३।१८ को पत्रबाट देखिन्छ । शिक्षा विभाग, सामुदायिक विद्यालय व्यवस्थापन शाखा सानोठिमी, भक्तपुरले जिल्ला शिक्षा कार्यालय, भोजपुरलाई मिति २०७१।३।१० मा निर्देशन दिएको पत्रको फोटोकपी हेर्दा न्यूनतम विद्यार्थी भएमा हाललाई समायोजन भएको विद्यालय वा पदाधिकार रहेको विद्यालयबाट तलबभत्ता निकास गर्ने गरी एकजना शिक्षकको व्यवस्था मिलाउनु भन्ने बेहोरा उल्लेख भएको पाइयो । सो पत्रको बोधार्थमा समायोजन भएको विद्यालयको प्रक्रिया टुङ्गो लगाउनु हुन भनी क्षेत्रीय शिक्षा निर्देशनालयलाई समेत लेखिएको देखिन्छ । मिति २०७१।४।१ देखि २०७२।१।३० सम्मको निवेदकको तलब भत्तासमेत निकास नभएको र नियमित रूपमा निवेदक शिक्षकले कार्य गरेको समयको तलबभत्ता भुक्तानी गरिदिन भनी जिल्ला शिक्षा कार्यालय, भोजपुरले मिति २०७४।१।८

मा श्री षडानन्द नगरपालिका भोजपुरलाई पत्र पनि पठाएको देखियो । शिक्षा नियमावली, २०५९ को नियम १६ मा जिल्ला शिक्षा अधिकारीको काम, कर्तव्य र अधिकारअन्तर्गत सामुदायिक विद्यालयका शिक्षकहरूको तलबी प्रतिवेदन पारित गराउनेसमेत उल्लेख गरेको अवस्थामा निवेदक कार्यरत रहेको सो अवधिमा तलब भत्ता तथा अन्य सुविधासमेत जिल्ला शिक्षा कार्यालयबाट सम्बन्धित विद्यालयको खातामा जम्मा हुने र विद्यालयबाट नै खुवाउने व्यवस्था भएकोले निजको तलब भत्ता के कति कारणले भुक्तानी हुन सकेन ? भन्ने बेहोरा जिल्ला शिक्षा कार्यालय, भोजपुरले लिखित जबाफमा प्रस्ट पारेको देखिएन । साथै पुनरावेदक निरकुमार राई मिति २०७१।४।१ गतेदेखि २०७२।१।३० गतेसम्म स्थायी शिक्षकको रूपमा श्री सिंहदेवी प्रा.वि. मुलपानीमा कार्यरत रहेको देखिए तापनि निजले २१ महिनाको अवधिसम्म तलब, भत्ता, चाडपर्व खर्च र पोसाक भत्ता निकास हुन नसक्दासमेत के कुन कानूनी व्यवस्थाको अधीनमा रही जिल्ला शिक्षा कार्यालयले उक्त अवधिको तलब भत्ता भुक्तानी नगरेको हो ? भनी सम्बन्धित कार्यालयमा आवश्यक कारबाही लागि अनुरोध गरेको प्रमाण पेस गरेको पाइएन । जुन निकायबाट निवेदकको तलबभत्ता निकास हुने हो उक्त निकायलाई विपक्षी बनाएको देखिएन । बरु तत्कालीन व्यवस्थाबमोजिम सो कार्यका लागि जिम्मेवार नरहेको षडानन्द नगरपालिका दिङ्ला, भोजपुरलाई अनावश्यक रूपमा विपक्षी बनाएको देखिने ।

पुनरावेदकले आफ्नो निवेदनसाथ पेस गरेको प.सं. ०७२।०७३ च.नं.२२ मिति २०७३।१।२ को श्री सिंहदेवी प्राथमिक विद्यालय दिङ्ला, साडराड मुलपानी-६ भोजपुरको रमानापत्रको तपसिल खण्डको क्र.सं. ६ मा निवेदकले अन्तिम तलबभत्ता खाएको महिना २०७२ चैत्र मसान्तसम्मको भन्ने उल्लेख भई उक्त रमाना पत्रमा निज निवेदक स्वयं निरकुमार राई प्रधानाध्यापक भनी हस्ताक्षरसमेत गरेको पाइयो ।

पुनरावेदकले सो पत्रको तपसिल खण्डमा उल्लिखित क्र.सं. ५ सम्मको बेहोरा ठिक होइन भन्ने जिकिर नगरी क्र.सं. ६को तलब भत्ताको विवरण मात्र अन्यथा हुन गएको भन्ने जिकिर गरेको देखिँदा निवेदक सफा हातले अदालत प्रवेश गरेको देखिएन । उल्लिखित तथ्यको परिप्रेक्ष्यमा परमादेशको आदेश जारी नगरी रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्छ भनी उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट भएको आदेशमा कानूनको त्रुटि नदेखिने ।

तसर्थ, यी पुनरावेदकको रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्छाई उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट मिति २०७६।३।२६ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - ताराप्रसाद जोशी

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७८ साल असोज १० गते रोज १ शुभम् ।

३८

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या. डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०७६-CR-०२३०, ०७६-RC-००६८, कर्तव्य ज्यान तथा जबरजस्ती चोरी, दिनेश राउत वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. दनेश राउत**

प्रतिवादी दिनेश राउतलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ तथा १३(३) नं. को कसुरमा ऐ.१३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरी मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद कायम हुने गरी राय लगाई सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत जनकपुरको फैसला मिलेकै देखिए पनि मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) मा “कानूनमा कुनै कसुरबापत सर्वस्वको सजाय हुने रहेछ भने यो संहिता प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुरमा सजाय गर्दा सर्वस्व हुने गरी सजाय गरिने छैन” भन्ने कानूनी व्यवस्था अनुरूप प्रस्तुत मुद्दा उच्च अदालत

जनकपुरबाट मिति २०७५।०९।१८ मा फैसला हुँदा प्रतिवादी दिनेश राउतलाई जन्मकैदको मात्र सजाय गर्नुपर्नेमा सर्वस्वसहित जन्मकैदको फैसला सदर गरी उक्त कानूनी व्यवस्था अवलम्बन गरेको नदेखिएको हदसम्म उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाबमोजिम निज प्रतिवादी दिनेश राउतलाई जन्मकैदको सजाय मात्र हुने ।

प्रतिवादीले प्रस्तुत वारदातपूर्व मनसाय राखी सुनियोजित तवरले घटाएको भन्ने कुरामा शंका रहेको देखिएको, बुझिएसम्मका सबुद प्रमाण एवम् प्रतिवादीकै बयानबाटसमेत मृतक र यी प्रतिवादीको बिचको पूर्वसम्बन्ध सुमधुर रहेको र मृतकको घरमा आउने जाने तथा मृतकलाई आवश्यक सरसहयोग गर्दै आइरहेको व्यक्ति देखिएको, प्रतिवादी मृतकको घरमा आउने जाने गरिरहने गरेको कारणबाट मृतकको घरको सबै जानकारी राखेको व्यक्ति रहेको देखिन आएको, वारदातको दिन पनि प्रतिवादी मृतकलाई हत्या गर्ने योजनाकासाथ गएको नदेखिई चोरी गर्ने उद्देश्यले गएको अवस्था देखिएको, चोरी गर्ने क्रममा मृतक ब्युँझी प्रतिवादीलाई देखी, चिनी हो-हल्ला गर्दा आफूले गरेको अपराध सार्वजनिक भई पक्राउ पर्ने भयले एककासि परिस्थितिबस मृतकलाई मारी भान्ने निधोमा पुगी मृतकलाई प्रहार गर्न पुगेको अवस्था देखिएको, मृतकलाई प्रतिवादीले निर्दयितापूर्वक अति पीडा हुने गरी घातक हतियारले साङ्घातिक तवरले प्रहार गरेको अवस्था नदेखिएको, मृतकको मृत्यु तत्काल भएको नभई उपचारको क्रममा अस्पतालमा भएको देखिएको, प्रतिवादी भर्खर १२ कक्षामा पढ्दै गरेको अल्लारे उमेर अवस्थाको व्यक्ति रहेको देखिएको, उमेरले परिपक्वता प्राप्त गर्दै जाँदा प्रतिवादीको आपराधिक मानसिकतामा परिवर्तन आई सुधिन सक्ने सम्भावना रहेको देखिएकोसमेतका आधार र कारण एवम् प्रतिवादीले अपराध गर्दाको अवस्था र परिस्थितिसमेतलाई मध्यनजर राखी सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतबाट

प्रतिवादी दिनेश राउतलाई १०(दश) वर्ष मात्र कैद हुन राय व्यक्त भएकोमा उच्च अदालत जनकपुरबाट निज प्रतिवादीलाई १०(दश) वर्ष मात्र कैद गर्दा पनि फौजदारी न्यायले लिएको दण्डको उद्देश्य पूरा हुने भनी सो राय सदर हुने ठहर्‍याई गरेको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणहरूबाट पुनरावेदक प्रतिवादी दिनेश राउतलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय ठहर गरेको सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत जनकपुरको फैसला मिलेको देखिए तापनि मुलकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) बमोजिम प्रतिवादी दिनेश राउतलाई सर्वस्वको सजाय नहुने भएकाले जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्छ। प्रतिवादीको उमेर र आपराधिक मानसिकतामा परिवर्तन आई सुधन सक्ने सम्भावना रहेको देखिएकोसमेतका आधार र कारण एवम् प्रतिवादीले अपराध गर्दाको अवस्था र परिस्थितिसमेतलाई मध्यनजर राखी सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतबाट मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं.बमोजिम प्रतिवादी दिनेश राउतलाई १०(दश) वर्ष मात्र कैद हुन व्यक्त रायलाई उच्च अदालत जनकपुरले निज प्रतिवादीलाई १०(दश) वर्ष मात्र कैद गर्दा पनि फौजदारी न्यायले लिएको दण्डको उद्देश्य पूरा हुने भनी सदर हुने ठहर्‍याई गरेको मिति २०७५।०९।१८ फैसला मनासिब नै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : किरणकुमार सिंह

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७८ साल पौष २५ गते रोज १ शुभम्।

३९

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७४-CR-१६४१, कर्तव्य ज्यान, नरेश राई वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी नरेश राईले घरायसी विवादका कारण तत्कालै रिस उठी हातपात भएको अवस्थामा

मृतक लडी खटियामा ठोक्किएर भवितव्य परी मरेकोले कर्तव्य ज्यानको कसुरमा सजाय हुनु हुँदैन भन्ने पुनरावेदन जिकिर रहेको सन्दर्भमा हेर्दा तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलमा कस्तो अवस्था भवितव्य परी ज्यान मरेको मान्ने भन्ने सम्बन्धमा ऐ. ५ नं. मा “ज्यान लिने इविलाग वा मनसाय नभई कसैले आफूले गरेको कर्तव्यले मानिस मर्लाजस्तो नदेखिएको कुनै काम कुरा गर्दा त्यसैद्वारा केही भई कुनै मानिस मर्न गएकोमा भवितव्य ठहर्छ।” भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ। प्रतिवादीले पन्युँजस्तो वस्तुले श्रीमतीको टाउकोजस्तो संवेदनशील अङ्गमा हानी भुइँमा लडिसकेपछि पनि लात्ती मुक्काले कुटपिट गरेको अवस्था मिसिलबाट देखिन्छ। सिल्भरको पन्युँजस्तो कडा वस्तुले मानिसको अत्यन्त संवेदनशील अङ्ग टाउकोमा प्रहार गर्दा ज्यानै पनि जान सक्छ भन्ने सामान्य समझले थाहा पाउने कुरा हो। कडा वस्तुले मानिसको टाउकोमा हान्दा मृत्यु हुने सम्भावना प्रबल हुँदाहुँदै पनि यी प्रतिवादीले मृतकको टाउकोमा पन्युँले प्रहार गरी लडेपछि पनि अझै शरीरका विभिन्न भागमा लात मुक्का हिराएको देखिएकोले प्रतिवादीले भवितव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने पुनरावेदन जिकिर तथा निजको कानून व्यवसायीको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अब, सुरु तथा उच्च अदालतबाट प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय हुने भए पनि घटना परिस्थितिसमेतको विश्लेषण गरी सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय चर्को पर्ने भएकोले १० वर्ष कैद सजाय गर्न राय पेस गरेको स्थितिलाई विचार गर्दा, प्रतिवादी र मृतक श्रीमान् श्रीमती भई लामो समयसम्म सँगै बसेको देखिन्छ। निजहरूबिच सामान्य वादविवाद तथा झै-झगडा हुने गरेको भए पनि श्रीमान् श्रीमतीबिचको त्यस्ता सामान्य झै-झगडाका कारण नै आफ्नी श्रीमतीलाई मार्नुपर्नेसम्मको इवीलाग रहेको

देखिँदैन । प्रतिवादी र मृतकबिच मिति २०७१।१२।१ गते बेलुका सामान्य झगडा भए पनि सँगै सुतेको देखिन्छ । प्रतिवादीले श्रीमती सन्तोषी चौधरीलाई मार्नु नै पर्नेसम्मको मनसाय राखेको भएमा राति नै मारी फरार हुन सक्ने अवस्था रहेकोमा सो नगरी राती सँगै सुतेको देखिन्छ । मृतकले मादक पदार्थ सेवन गरी झगडा गरेपछि रिसको आवेगमा आफूले चोट छोडेको भनी प्रतिवादीले घटनाको बारेमा यथार्थ कुरा खुलाई बयान गरी अनुसन्धान तथा न्यायिक प्रक्रियालाई सहयोग गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीले आफ्नी श्रीमतीलाई मार्ने योजना तथा षड्यन्त्र गरेको भन्ने पनि मिसिलबाट देखिँदैन । निजहरूबिच सामान्य झगडा भए पनि मार्नेसम्मको कारण पनि देखिँदैन । प्रतिवादीले पन्युँजस्तो कडा वस्तुले मानिसको टाउकोमा हिकाउँदा मानिस मर्न सक्छ भनी होस नपुन्याउँदा प्रस्तुत वारदात घट्न गएको अवस्थामा मनसायपूर्वक कर्तव्य गरी मानिस मार्ने कसुरदारलाई हुनेसरह मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं.बमोजिमको सजाय गर्दा यी प्रतिवादीलाई चर्को सजाय हुन सक्ने स्थितिसमेतलाई मध्यनजर गर्दा निज प्रतिवादीलाई १० वर्ष कैद गर्दा पनि कसुरको मात्रा अनुसार सजाय पुग्ने र कानूनको मकसदसमेत पूरा हुने अवस्था देखिएकोले १० वर्ष कैद सजाय गर्नको लागि उच्च अदालत जनकपुर, राजविराज इजलासबाट पेस भएको रायलाईसमेत अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार, कारणहरूबाट प्रतिवादी नरेश राईलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं.बमोजिमको कसुर कायम गरी अ.बं. १८८ नं.बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय गर्नको लागि पेस भएको रायसहितको सप्तरी जिल्ला अदालतको मिति २०७३।५।८ को फैसला सदर गरेको उच्च अदालत जनकपुर, राजविराज इजलासबाट मिति २०७४।५।२ मा भएको रायसहितको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर

हुने ।

इजलास अधिकृत : हेमराज शर्मा

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७८ साल चैत्र २० गते रोज १ शुभम् ।

४०

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७२-८१-०३५१, लिखत बदर दर्ता बदर दर्ता कायम, पुरुषोत्तम लामिछाने वि. प्रकाशमान शाक्य**

आफूखुस गर्न पाउनेजतिमा बाहेक सगोलको सम्पत्ति बेचबिखन गर्दा वा अरू कुनै किसिमले हक छाडिदिँदा एकाघर सगोलका अंशियारको मन्जुरीलाई कानूनले अनिवार्य गरेको छ । तथापि प्रस्तुत मुद्दामा वादीसमेतको हक लाग्ने उल्लिखित कित्ता नं. ६७ को जग्गा आमा दिलकुमारीले राजीनामा गरी हक छाडिदिँदा यी वादीको मन्जुरी लिएको वा उक्त लिखतमा साक्षी राखेको अवस्था नहुँदा वादीको आफ्नो हकजति २ भागको १ भाग बदर गरी माग्न सगोलको अंशियारलाई लेनदेन व्यवहारको १० नं. ले अधिकार दिएकै देखियो । यस स्थितिमा दिलकुमारी शाक्यले मिति २०६४।०२।१३ मा सुरेशदास श्रेष्ठलाई गरिदिएको र.नं. ५६८३(क) को राजीनामा लिखतको आधारमा हक जनाई सुरेशदास श्रेष्ठले र.नं.३७३४(क) बाट मिति २०६६।०८।२३ मा यी प्रतिवादी पुरुषोत्तम लामिछानेलाई गरिदिएको राजीनामा लिखत तथा सो आधारमा प्रतिवादीको नाउँमा कायम भएको दर्तासमेत कायम रहन नसक्ने ।

यसप्रकार, यी वादीको समेत अंश हक लाग्ने र कसैलाई हक छाडिदिँदा निजकोसमेत मन्जुरी लिनुपर्ने प्रकृतिको मोरङ्ग जिल्ला, विराटनगर उपमहानगरपालिका वडा नं. १२(ख) कि.नं. ६७ को जग्गा आमा दिलकुमारीले वादीको मन्जुरी नलिई मिति २०६४।२।१३ मा सुरेशदास श्रेष्ठलाई र सोही जग्गा

मिति २०६६।८।२३ मा सुरेशदास श्रेष्ठले प्रतिवादी पुरुषोत्तम लामिछानेलाई बिक्री गरेको देखिएको र यसै लगाउको ०७२-CR-०२५५ को जालसाज मुद्दामा सोही मिति २०६४।०२।१३ र मिति २०६६।०८।२३ को लिखत जालसाज हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको फैसला आज यसै इजलासबाट सदर हुने ठहरी फैसला भएकोले सो फैसलामा लिइएका आधार प्रमाणसमेतबाट प्रस्तुत मुद्दामा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याएको सुरु मोरङ्ग जिल्ला अदालतको मिति २०६९।०६।०३ को फैसला उल्टी गरी विवादित लिखतको २ भागको १ भाग लिखत बदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०७१।१०।२० को फैसला मनासिब देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने।

तसर्थ, पुनरावेदन अदालत विराटनगरको मिति २०७१।१०।२० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : हेमराज शर्मा

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७९ साल वैशाख २८ गते रोज ४ शुभम्।

४१

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७५-CI-०४३७, निषेधाज्ञा, रामकिसुन ठाकुर बरहीसमेत वि. हरिश्चन्द्र ठाकुर बरही**

वस्तुतः निषेधाज्ञाको निवेदनबाट अचल सम्पत्तिमाथिको हक स्वामित्वको विवाद निरूपण हुने पनि होइन। निर्विवाद हक भोगको सम्पत्तिमा वैधानिक स्वामीलाई त्यस्तो सम्पत्ति भोग गर्न व्यवधान उत्पन्न गराउने आशंकाको स्थितिमा त्यस्तो व्यवधान उत्पन्न गर्न नदिनसम्म निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने गर्छ। प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदकहरूले उठाएको कि.नं. ८०४ को घरजग्गाको मोही हकको विषय प्रस्तुत निवेदनको रोहबाट विचार हुने विषय देखिएन। प्रत्यर्थीको नाउँमा

जग्गाधनी प्रमाण पुर्जा हुनु र पुनरावेदकले मोही हकको निस्सा प्रमाण पेस दाखेल गर्न नसक्नु नै निषेधाज्ञा जारी हुने पूर्वावस्था हुने।

पुनरावेदकहरू केबल आफूले दिएको लिखित जबाफ र पुनरावेदनपत्रमा आफ्ना पिता बाजेको पालादेखि नै मोहीका रूपमा भोगचलन गर्दैआएको भन्ने जिकिर लिएकै आधारमा निवेदकको निर्विवाद हक स्वामित्वमा रहेको घर जग्गा भोग चलन गर्न पाउने निजको संवैधानिक तथा कानूनी हकबाट निवेदकलाई वञ्चित गर्न मिल्दैन। विपक्षीहरूको लिखित जबाफ बेहोराबाटै निवेदन दाबीको जग्गा आफ्नो मोही हकको भनी जिकिर लिई निवेदकलाई उक्त जग्गा भोग गर्न बाधा अवरोध सिर्जना गरेको स्पष्ट देखिन आएकोले त्यस्तो कार्य रोक्नुपर्ने दायित्व अदालतको हुने सन्दर्भमा निवेदकको निर्विवाद हक स्वामित्व रहेको कि.नं. ८०४ को घरजग्गा भोगचलन गर्न निवेदक हरिश्चन्द्र ठाकुर बरहीलाई बाधा अवरोध नगर्नु, नगराउनु भनी विपक्षीहरूको नाममा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर्‍याई मिति २०७५।०२।०९ मा भएको उच्च अदालत जनकपुरको आदेश मनासिब देखिँदा अन्यथा भन्न नमिल्ने।

अतः माथि विवेचित आधार, कारणबाट निवेदन मागबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर गरेको उच्च अदालत जनकपुरको मिति २०७५।०२।०९ को आदेश मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत - शिवप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७८ साल चैत्र ९ गते रोज ४ शुभम्।

४२

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७६-CR-११३५, कर्तव्य ज्यान, नरकुमार भन्ने सुमन राई वि. नेपाल सरकार**

निजलाई के कस्तो सजाय हुनुपर्ने भन्ने

सम्बन्धमा विचार गर्दा मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ को दफा १७९(१)(ग) मा "एकाएक भएको झगडामा उठेको रिसको आवेगमा तत्काल कसैको ज्यान मरेकोमा" "त्यस्तो कसुरदारलाई १०(दश) वर्षदेखि १५(पन्ध्र) वर्षसम्म कैद र एक लाख रुपियाँदेखि एक लाख पचास हजार रुपियाँसम्म जरिवाना हुने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । माथि विवेचित वारदातको प्रकृति हेर्दा पुनरावेदक प्रतिवादीले आफ्नै सहोदर दिदीलाई मार्नुपर्ने सम्मको पूर्वरिसइवी वा कारण मिसिलबाट नदेखिएको र प्रतिवादीले पूर्वतयारी वा योजना बनाई मृतकउपर प्रहार गरेको नदेखिँदा निजमा मनसाय तत्वको अभाव देखिएको तर दुई पक्षबिच भएको विवाद र भनाभनको कारण यी प्रतिवादी रिसको आवेगमा आइ काठको फल्याकले दिदी सरिता राईलाई प्रहार गर्दा सोही चोट प्रहारका कारण निजको मृत्यु भएको देखिन आउँदा घटना प्रकृतिबाट मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ को दफा १७९(१)(ग) बमोजिमको कसुर भन्ने देखिने ।

यस अदालतबाट तत्काल उठेको रिसबाट अभियुक्त आवेशमा आई रिस थाम्न नसकी गरेको आक्रमणबाट कुनै व्यक्तिको ज्यान गएमा ज्यान मार्ने मनसाय तत्वको अभावमा आवेशप्रेरित हत्या ठहर्ने भन्ने न्यायिक दृष्टिकोणसमेत विकास भएको पाइन्छ । निमतेम्बा शेर्पा विरुद्ध नेपाल सरकार भएको कर्तव्य ज्यान मुद्दामा ज्यानसम्बन्धी मुद्दाहरूमा आवेशको अवस्थालाई अपराधको गाम्भीर्य घटाउने परिस्थितिको रूपमा लिइने हुँदा यस्तो हत्यालाई मनसायप्रेरित हत्याको वर्गमा राखेर हेरिएको पाइँदैन । यस्तो हत्यामा प्रतिवादीमा पीडितउपर आक्रमण गर्ने उत्तेजना भने तत्काल जागृत भएको हुन्छ । आवेशको उत्तेजनामा गरिने कार्यमा कर्ताले त्यसबाट उत्पन्न हुने परिणामको ख्याल नगर्ने र त्यस सम्बन्धमा कुनै सोच विचारसमेत नगर्ने हुँदा आवेशको अवस्थालाई तत्कालीन भावावेश र उत्तेजनाको रूपमा लिनुपर्ने हुन्छ । यस्तो आवेश

वा त्यस्तो उत्तेजना मृतकको क्रियाकलापबाट वा निजसँग अन्योन्याश्रित क्रियाकलापबाट प्रतिवादीको मानसिकतामा तत्काल सिर्जित गराएको हुन्छ (ने. का.प. २०७५, अड्क ११, नि.नं. १०१३९, पृ. २१०२) भनी सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएको सन्दर्भमा आवेशको उत्तेजनाका कारण गरिएको कसुर मनसाय प्रेरित हत्या नभई आवेशप्रेरित हत्या भन्ने देखिन आउँदा पुनरावेदक प्रतिवादी नरकुमार भन्ने सुमन राईलाई मुलुकी अपराध (संहिता) ऐन, २०७४ को दफा १७९ को उपदफा १(ग) बमोजिमको कसुरमा ऐ. दफा १७९(१) बमोजिम ११(एघार) वर्ष कैद र रु.१,००,०००।- (एक लाख रुपियाँ) जरिवाना गर्ने गरी सुरु भोजपुर जिल्ला अदालतले गरेको फैसलालाई सदर ठहर्‍याएको उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट भएको फैसला मनासिब देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने ।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणबाट उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट मिति २०७६।०३।२४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - शिव वाग्ले, गगनदेव महतो  
कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल  
इति संवत् २०७८ साल फागुन ३ गते रोज ३ शुभम् ।

४३

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र  
मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७८-MS-००२०,  
अदालतको अवहेलना, चमेलीदेवी रौनियार वि. नेपाल  
आयल निगम लिमिटेड, केन्द्रीय कार्यालय बबरमहल,  
काठमाडौंसमेत

यस अदालतबाट जारी भएको उल्लिखित अन्तरिम आदेश हेर्दा निवेदन मागबमोजिम अन्तरिम आदेश जारी हुने नहुने सम्बन्धमा दुबै पक्षकाबिच छलफल गरी निर्णय गर्नुपर्ने र सो अवस्थासम्म निवेदकलाई निगमको साधारण बिक्रेताबाट खारेज

गरेको निगमको मिति २०७७।१२।१२ को निर्णय तथा पत्राचारसम्म कार्यान्वयन नगर्नु नगराउनु भनी अल्पकालीन अन्तरिम आदेश जारी भएको देखिन्छ। उक्त रिट निवेदनमा माग गरिएको अन्तरिम आदेशमा मागबमोजिम पेट्रोलियम पदार्थ सप्लाई गर्ने भन्ने विषय नभई निवेदकलाई साधारण बिक्रेताबाट खारेज गर्ने निर्णयसम्म कार्यान्वयन नगर्नु नगराउनु भन्ने देखिएको र यस अदालतबाटसमेत तदनुसूचितको आदेश जारी भएकोमा उक्त अन्तरिम आदेशमा निवेदक आयल स्टोरलाई पेट्रोलियम पदार्थ सप्लाई नरोक्नु, प्रदान गर्नु भन्ने बेहोरा उल्लेख भएको देखिँदैन। वस्तुतः उक्त रिट निवेदनबाट निवेदकले लामो समयदेखि पेट्रोलियम पदार्थ सप्लाई नलिएको र निजले सप्लाई पाउने नपाउने भन्ने विषय उक्त रिट निवेदनको अन्तिम निर्णय हुँदा निरूपण हुनुपर्ने प्रकृतिको विषय देखिएको स्थितिमा सो अन्तरिम आदेशले निवेदकको पेट्रोलियम पदार्थ सप्लाई पाउने हकलाई निरन्तरता दिएको भन्ने नै देखिन आएन। यस स्थितिमा यस अदालतबाट जारी भएको अल्पकालीन अन्तरिम आदेशबमोजिम पेट्रोलियम पदार्थ आपूर्ति गरी दिनुपर्नेमा नगरी विपक्षी नेपाल आयल निगमले यस अदालतको आदेशको अवज्ञा गरी अदालतको अवहेलना गरेको भनी अर्थ गर्न मिल्ने देखिन नआउने।

साथै, निवेदकबाट विपक्षीहरूले जुन रिट निवेदनको अन्तरिम आदेश उल्लङ्घन गरेको भनी प्रस्तुत निवेदन दायर भएको हो ०७८-WO-०२१४ सो रिट निवेदन आज यसै निवेदनसाथ अल्पकालीन अन्तरिम आदेशलाई निरन्तरता दिनुपर्ने नपर्ने विषयमा छलफलको लागि पेस भएकोमा उक्त निवेदन नै खारेज हुने ठहरी आज यसै इजलासबाट आदेश भएको देखिन्छ। प्रस्तुत निवेदनमा उठान गरिएको मूल विषयवस्तु नै खारेज भई यस अदालतबाट जारी भएको अल्पकालीन अन्तरिम आदेशको औचित्य नै समाप्त भइसकेकोले विपक्षीहरूले सोही आदेशको परिपालना

नगरी अवज्ञा गरेको भन्ने निवेदन दाबी पुग्न सक्ने अवस्था देखिन नआउने।

तसर्थ, लगाउको रिट निवेदनमा यस अदालतबाट मिति २०७८।१०।१३ मा जारी भएको अन्तरिम आदेशमा निवेदक ओम आयल स्टोरलाई पेट्रोलियम पदार्थ सप्लाई गर्ने कार्य नरोक्नु भनी कुनै आदेश भएको नदेखिएको र उक्त रिट निवेदन नै आज यसै इजलासबाट खारेज हुने ठहरेको स्थितिमा विपक्षी निगमले उक्त आदेशबमोजिम पेट्रोलियम पदार्थ सप्लाई नगरी यस अदालतको आदेशको अवज्ञा गरी अदालतको अवहेलना गरेकोले सजाय गरिपाउँ भन्ने निवेदन दाबी पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत - किरणकुमार सिंह

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७९ साल आषाढ ६ गते रोज २ शुभम्।

४४

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७३-CI-१२९१, मानाचामल, गणेश सुवेदी वि. प्रेस सुवेदी गिरी (गिरी)**

नाता कायम मुद्दाको मिसिलबाट वादी प्रेस सुवेदी गिरीले प्रतिवादी गणेश सुवेदीउपर दायर गरेको नाता कायम मुद्दामा निजहरूबिच लोम्ने स्वास्नीको नाता कायम हुने गरी सुरु ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।२।३ मा भएको फैसला पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७१।२।१ मा सदर हुने ठहरी फैसला भएको देखिन आएको यी वादी प्रतिवादी लोम्ने स्वास्नी नाताका भएको तथ्यमा विवाद देखिएन। मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको १० नं. तथा लोम्ने स्वास्नीको महलको ४ नं. अनुसार लोम्नेले इज्जत आमद अनुसार खानलाउन नदिएमा वा घरबाट निकाला गरी दुःख दिएमा स्वास्नीले लोम्नेबाट आफ्नो अंश छुट्याइलिन पाउने देखिन्छ। प्रतिवादीले आफ्नो प्रतिउत्तर तथा पुनरावेदन जिकिरमा वादीलाई खान लाउन दिइराखेको छु भनी जिकिर

लिन र देखाउन सकेको अवस्था छैन । मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १० नं. अनुसार स्वास्नीलाई इज्जत आमद अनुसार खानलाउन र आवश्यकता अनुसार शिक्षा दीक्षा र स्वास्थ्य उपचारको व्यवस्था गर्नुपर्ने दायित्व लाग्नेको हुन्छ । त्यसो नगरेमा अंश दिनुपर्छ भन्ने कानूनी व्यवस्थाअनुरूप नै वादीले प्रतिवादीउपर अंश मुद्दा दायर गरेकोमा लगाउको ०७३-CI-१२९२ को अंश मुद्दामा आज यसै इजलासबाट वादीले प्रतिवादीबाट पाँच भागको एक भाग अंश पाउने ठहरी फैसला भएको अवस्था छ । तथापि अंश मुद्दाबाट ठहरेको सम्पत्ति फैसला कार्यान्वयन भई यी वादीका नाउँमा नआएसम्म यी वादीको खाना, नाना, स्वास्थ्य उपचारलगायतका जीविकोपार्जनको न्यूनतम व्यवस्थापन गर्ने जिम्मेवारीबाट प्रतिवादीले उन्मुक्ति पाउन सक्ने अवस्था रहँदैन । प्रतिवादीले आफ्नो प्रतिउत्तर तथा पुनरावेदन जिकिरमा आफ्नो नियमित आयस्रोत नभएको र व्यवसाय सञ्चालन गर्न लिएको कर्जाको सावाँ ब्याजबापत मासिक लाखौं रुपियाँ भुक्तान गर्नुपर्ने भएकोले वादी दाबीबमोजिमको मानाचामलबापत रकम भुक्तान गर्नुपर्ने होइन भनी जिकिर लिएको देखिए तापनि प्रतिवादीले लगाउको अंश मुद्दाको तायदातीमा उल्लेख गरेको विभिन्न ऋणका सम्बन्धमा यस अदालतबाट जानकारी माग गर्दा एभरेष्ट बैङ्क लिमिटेडको मिति २०७७।१२।२३ को पत्रबाट निजको नाउँको सम्पूर्ण कर्जा चुक्ता भइसकेको भन्ने देखिन आउँदा पुनरावेदन जिकिर खम्बिर हुन सक्ने देखिँदैन । यस स्थितिमा लगाउको अंश मुद्दामा प्रतिवादीले तायदाती विवरणमा उल्लेख गरेको सम्पत्तिको विवरण, प्रतिवादीले तायदाती फाँटवारीसाथ पेस गरेको निजको नाउँमा दर्ता रहेको विभिन्न फर्म तथा कम्पनीको विवरण तथा निजले पेस गरेको कर चुक्ताको प्रमाणपत्रसमेतका प्रमाणबाट देखिने निजको व्यावसायिक कारोबारसमेतलाई मध्यनजर गर्दा प्रतिवादीको आर्थिक हैसियत वादीको

जीवनयापनका लागि निजलाई मानाचामल भराउन नसक्ने स्तरको रहेछ भन्ने देखिन आउँदैन । अंश मुद्दाबाट वादीले पाउनुपर्ने सम्पत्ति प्राप्त नभएसम्म निजलाई खान लाउन नियमित मानाचामल दिनुपर्ने कानूनी दायित्वबाट वादी पन्छिन, उम्किन सक्ने आधार देखिँदैन । सुरु जिल्ला अदालतले प्रतिवादीको सम्पत्ति, वादीले पाउनुपर्ने सम्पत्तिको अनुपात, प्रतिवादीको व्यावसायिक कारोबार र आर्थिक हैसियत तथा वादीलाई जीवनयापन गर्न चाहिने न्यूनतम आवश्यकता पूरा गर्न लाग्ने खर्चसमेतलाई दृष्टिगत गरी प्रस्तुत मानाचामल मुद्दाको फिरोद परेको मितिदेखि यसै लगाउको अंश मुद्दाबाट अंश नपाएसम्म वादीले प्रतिवादीबाट मासिक रूपमा रु.१०,०००।-(दश हजार रुपियाँ) मानाचामल भराइपाउने ठहर्‍याएको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मनासिब देखिँदा अन्यथा गर्नुपर्ने देखिन नआउने ।

तसर्थ, उल्लिखित आधार, कारण, प्रमाण र कानूनी व्यवस्थाबाट सुरु ललितपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०२।२४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत - ताराप्रसाद जोशी

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७८ साल मङ्सिर १९ गते रोज १ शुभम् ।

४५

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७१-CI-०४०९, दोहोरो नक्सा दर्ता लिखत बदर, अङ्गबहादुर कुँवर वि. शाही शुक्लाफाँटा वन्यजन्तु आरक्ष कार्यालय, कञ्चनपुरसमेत

कुनै पनि मुद्दामा तथ्यमा प्रवेश गरी विवादको निरूपण गर्नुपूर्व फिरोद कानूनको म्यादभित्र परेको छ छैन हेर्नु कानूनी र प्राविधिक दृष्टिमा

समेत अनिवार्य मानिन्छ । हदम्यादको अभावमा नालेसको स्वीकारयोग्यता (Admissibility) समाप्त हुन्छ । कानूनमा छुट्टै व्यवस्था भएदेखि बाहेक जुनसुकै विवादमा जहिलेसुकै पनि उजुरी दर्ता गरी सोउपर सुनुवाइ गर्ने हो भने विवादको टुङ्गो कहिले पनि लाग्न नसक्ने र यसबाट समाजमा अनिश्चितता र संशयको वातावरण पैदा भई सामाजिक शान्ति, सुव्यवस्था र स्थिरतामा नै असर पर्ने हुनाले हदम्यादसम्बन्धी कानूनी व्यवस्थाको औचित्य स्थापित हुन्छ । उजुरी नालेस दायर गर्दा कानूनले तोकेको समयसीमाभित्र दायर गर्नुपर्ने कार्यविधि कानूनको सर्वमान्य सिद्धान्त हो । हदम्यादको प्रश्न प्रतिवादीले चुनौती नै नगरेको अवस्थामा पनि र जुनसुकै तह र अवस्थामा समेत अदालतले हेर्नुपर्ने र हेर्न सक्ने विषय हो । हदम्याद नाघी दायर भएको देखिएको अवस्थामा विलम्बले न्यायलाई पराजित गर्ने (delay defeats justice) भएकाले मुद्दा जुनसुकै तहमा विचाराधीन भए तापनि अदालतले तथ्यमा प्रवेश गरी इन्साफ गर्न नसक्ने भएकाले फिराद खारेज गर्नुपर्ने ।

दूषित दर्तामा हदम्याद नलाग्ने भन्नुको अर्थ प्रतिवादीले आफ्नो हक नपुग्ने जग्गा गुपचुप दर्ता गराई वादी वा सम्बन्धित पक्षले मौकामा थाहा जानकारी पाउन नसक्ने वा प्रतिवादीहरूले वादीले थाहा जानकारी पाउन नसक्ने गरी दर्ता व्यवहार कारोबार गरेको वा विषयवस्तुको प्रकृतिबाट त्यस्तो विषय प्रकाशमा आउन लामो समय लाग्ने देखिएको अवस्थामा ढिला गरी थाहा पाएकै कारण आफ्नो हक पुग्ने सम्पत्तिबाट वञ्चित हुन नपरोस् भन्ने हो । वादीले थाहा पाउन सक्ने अवस्था भए नभएको मुद्दाको तथ्य परिस्थितिले निर्धारण गर्ने विषय हो । हामीले अवलम्बन गर्दै आएको न्यायिक अभ्यासमा दूषित दर्तामा थाहा पाउनुपर्ने समयसीमालाई परिसीमन गरिएको छैन र गर्न पनि मिल्दैन । तथापि, कुनै घटना विशेष वा नक्कल सारी थाहा पाएपछि भने वादीले कानूनद्वारा तोकिएको

समयसीमाभित्र फिराद लिई अदालत प्रवेश गरिसकेको हुनुपर्छ । दूषित दर्ता नामकरण गर्दैमा जहिले सुकै थाहा पाए पनि हुने वा वादीले इच्छित समयसम्म नालेस गर्न पाउने सीमाविहीन अवस्था होइन । दूषित दर्तामासमेत फिरादीले सोअघि नै उक्त तथ्यको जानकारी पाएको वा पाउन सक्ने मनासिब अवस्था थियो वा थिएन भनी निक्क्यौल गरी यथार्थमा थाहा पाएको मिति यकिन भएपछि सोही मितिको आधारमा ऐनले तोकेको हदम्यादभित्र अदालत प्रवेश गरेको हुनु अनिवार्य हुने ।

तसर्थ वादी दाबीबमोजिम दोहोरो नक्सा स्वेस्ता बदर हुने गरी सुरू कञ्चनपुर जिल्ला अदालतले गरेको फैसला उल्टी गरी हदम्याद नघाई फिराद दायर गरेको आधारमा मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको १८० नं.बमोजिम वादी दाबी खारेज गर्ने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत महेन्द्रनगरको मिति २०७०।१०।५ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने । पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्ने ।

इजलास अधिकृत - किरणकुमार सिंह  
कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७९ साल पौष ५ गते रोज ३ शुभम् ।

- यसै लगाउका ०७१-CI-०४१०, जग्गा खिचोला हक कायम चलन चलाइपाऊँ, अङ्गबहादुर कुँवर वि. बासुदेव भट्टसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

४६

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७२-CI-१९५३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, राजु खरेलसमेत वि. रत्नेश्वरी श्रेष्ठसमेत

मिति २०७२।०४।२४ मा भगवान थापा र रत्नेश्वरी श्रेष्ठसमेतले साबिकमा रहेको सार्वजनिक बाटोमा छिमेकी राजु खरेलले पर्खाल लगाई सो बाटोमा पर्खाल निर्माण गरी बाटो अवरोध गरेकोमा काठमाडौँ जिल्ला प्रशासन कार्यालयमा समेत सहमति भएको

हुँदा सोही सहमतिसमेत पालना नगरेकाले आवश्यक कारबाहीको लागि काठमाडौं महानगरपालिकाको कार्यान्वयन महाशाखामा निवेदन दिएको देखिन्छ । उक्त विवादको सन्दर्भमा स्थलगत निरीक्षण भई राजु खरेलले नयाँ करिब ३ फिटको वाल निर्माण गरी अवरोध गरेको भन्ने बेहोराको प्रतिवेदन परेको देखिन्छ । साथै का.म.पा.३४ नं. वडा कार्यालयबाट फिल्ड निरीक्षण गराइएअनुसार नापी नक्सामा बाटो नदेखिए तापनि फिल्डमा बाटोको रूपमा आवतजावत भएको भनी मिति २०७२।०४।२५ मा कार्यान्वयन महाशाखालाई पत्र पेश गरेको देखिन्छ । सोही मिति र पत्रमा पछि नियमानुसार हुने गरी हाललाई तत्काल निकास खोल्न मनासिव देखिएको भनी निर्णयसमेत भएको मिसिल संलग्न पत्रबाट देखिने ।

मिसिल संलग्न नक्सामा कि.नं.१८६ मा बाटो रहेको नदेखिए तापनि निरीक्षण प्रतिवेदनबाट फिल्डमा बाटोको रूपमा प्रयोग भएको भन्ने उल्लेख भएको देखिँदा उक्त बाटो निवेदक र प्रत्यर्थाहरूले आवतजावत गर्नका लागि प्रयोग गर्दै आएको बाटो भएको देखिन्छ । निरीक्षण प्रतिवेदन र विपक्षीहरूको लिखित जवाफबाट समेत उक्त विवादित जग्गा बाटो लामो समयदेखि सार्वजनिक बाटोको रूपमा प्रयोग गर्दै आएकोमा विवाद देखिँदैन । तत्काल प्रचलनमा रहेको मुलुकी ऐन, जग्गा आवाद गर्नेको महलको ४ नं. मा परापूर्वदेखि हिँडी आएको बाटो, वस्तुभाउ निकासने निकास, आफ्नो जग्गामा पर्ने भए पनि त्यस्तो जग्गा र वस्तु भाउ र खरकाउने चौर, पाटी घाट, पोखरीको ढीक, गौचर, मूलबाट, सडक, पाटी, पौवा, चिहान र त्यस्तै अरु कुनै सार्वजनिक स्थान र नेपाल सरकारबाट कमोट नगर्नु बुझ्याउनु भन्ने सरकारी जग्गा कसैले बिराउनु हुँदैन भन्ने कानूनी व्यवस्थासमेत रहेको देखिन्छ । यस प्रकार चलनचल्तीको बाटोमा कुनै पनि प्रकारको अवरोध सिर्जना गर्न ऐनले निषेध गरेको देखिने ।

यसैगरी स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, २०५५ को दफा १४९ मा नगरपालिका क्षेत्रमा नगरपालिकाका प्रमुखबाट भवन निर्माण गर्ने अनुमति नलिई कसैले पनि भवन निर्माण गर्नु हुँदैन भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । भवन निर्माण भन्नाले नयाँ भवन बनाउने, पुरानो भवन भत्काई पुनः निर्माण गर्ने, तल्ला थप गर्ने, मोहडा फेर्ने वा साबिकमा थपघट गरी झ्याल, ढोका, बार्दली, कौशी, दलान, टहरा, तबेला वा ग्यारेज बनाउने वा कम्पाउन्डवाल लगाउने कार्य सम्झनु पर्ने गरी परिभाषित गरेको देखिन्छ । उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाको सन्दर्भमा कम्पाउन्ड वाल लगाउँदासमेत नगरपालिकाको स्वीकृति लिनुपर्ने देखिन्छ । तर निवेदक राजु खरेलले कम्पाउन्ड वाल लगाउँदा काठमाडौं महानगरपालिकाको स्वीकृति लिएको मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातबाट देखिँदैन । यसरी चलन चल्तीको बाटो आफ्नो निजी जग्गाअन्तर्गत रहेको हो भने जग्गावाला व्यक्तिले कम्पाउन्ड वाल निर्माण गर्नु अघि महानगरपालिकाबाट अनुमति लिनुपर्नेमा सो बमोजिमको अनुमति लिएको नदेखिँदा त्यस्तो निर्माण कार्यलाई कानूनसङ्गत मान्न नमिल्ने ।

माथि उल्लेख भए अतिरिक्त सोही ऐनको दफा १६५(२) मा नगरपालिका क्षेत्रभित्र कसैले अर्कालाई अठ्ठेरो पार्ने नियत राखी रूख लगाउने वा पर्खाल लगाउने वा घर टहरा निर्माण गर्ने जस्ता काम गरेमा नगरपालिकाले त्यस्तो रूख, पर्खाल वा घर, टहरा हटाउन आदेश दिन सक्नेछ र सो आदेशबमोजिम नहटाएमा नगरपालिकाले मानिस पठाई हटाउन सक्नेछ भन्ने कानूनी व्यवस्थासमेत रहेको देखिन्छ । यो कानूनी व्यवस्थालाई आधार मान्दा नगरपालिका क्षेत्र भित्र बिना अनुमति बनाएको कम्पाउन्ड वाल भत्काउन आदेश दिने अधिकार नगरपालिकालाई नरहेको भन्न मिल्ने देखिएन । साथै नगरपालिकाले गरेको निर्णयउपर जिल्ला अदालतमा पुनरावेदन लाग्ने व्यवस्थासमेत कानूनमा भएको पाइन्छ । सोबमोजिमको

कानूनी उपचारको मार्ग पनि यी पुनरावेदक / निवेदकले अवलम्बन गरेको देखिँदैन । सम्बन्धित साधिकार निकायबाट उपचार नपाइएला कि भनेर अनुमान गरी सम्बन्धित निकायबाट उपचार नखोजी असाधारण क्षेत्राधिकारअन्तर्गत उपचारको लागि प्रवेश गरेको कार्य रिट क्षेत्राधिकारको प्रयोगको सामान्य सिद्धान्तानुरूप रहेको समेत नदेखिने ।

पुनरावेदक / निवेदकले महानगरपालिकाको जुन निर्णयलाई बदर गरी पाउन भनी प्रस्तुत रिट निवेदन गरेको हो सो निर्णयउपर पुनरावेदनको वैकल्पिक कानूनी उपचारको मार्ग उपलब्ध रहेको अवस्थामा सो मार्ग अवलम्बन नगरी रिट क्षेत्राधिकारअन्तर्गत प्रवेश गरेको देखिएको हुँदा रिट निवेदन खारेज हुने ठहराई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७२।०६।१३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने । पुनरावेदकहरूको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रद्धा विष्ट

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०८० साल साउन २९ गते रोज २ शुभम् ।

- यसै लगाउका ०७२-CI-१९५४, निषेधाज्ञा, राजु खरेलसमेत वि. रत्नेश्वरी श्रेष्ठसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

४७

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल, ०७२-CI-०४८६, नाता कायम, संजयकुमार मण्डल केवट वि. रजिनादेवी मण्डल**

DNA परीक्षण माता पितासँग सन्तानको जैविक सम्बन्ध (Genetic Relationship) निर्धारण गर्ने वा मानिसहरूको बिचमा जैविक सम्बन्ध रहेको छ वा छैन भन्ने विवादको निराकरण गर्ने वा पितृत्व परीक्षण पद्धतिमा पिता पुत्रको जैविक सम्बन्ध निर्धारण गर्ने हालसम्मकै सर्वोत्तम पद्धतिको रूपमा मानिएको छ । यस हालको अवस्थामा सबैभन्दा प्रामाणिक, वास्तविक, यथार्थ (Accurate) एवं

वैज्ञानिक (Scientific) पद्धतिको रूपमा रहेको छ । Deoxyribonucleic Acid (DNA) परीक्षण पद्धतिमा बाबु आमा तथा सन्तानको रगतमा रहेको आनुवंशिक उत्पत्तिबारे प्रयोगशालामा छुट्टाछुट्टै Profile को विकास गरिन्छ र पिता भनिएको व्यक्तिको Profile लाई सन्तान भनिएको व्यक्तिको Profile सँग तुलना गरी अधिकतम लक्षणको आधारमा पितृत्व वा मातृत्वको निर्धारण गर्ने गरिन्छ । योग्य र तालिम प्राप्त कुशल विशेषज्ञबाट परीक्षण गरिएमा तथा परीक्षण विधि र Profile को तुलना गर्दा कुनै त्रुटि नगरी निष्कर्ष र परिणाम ज्ञात गरिएमा DNA परीक्षण पद्धति हालसम्म उपलब्ध पद्धतिहरूमध्ये सबैभन्दा बढी यथार्थ रहेको र यसको प्रामाणिकता लगभग शतप्रतिशत रहेको मानिने ।

कुनै पनि व्यक्तिको पहिचान तथा निजका व्यक्तित्वसम्बन्धी अधिकारको प्रत्याभूतिका लागि नातासम्बन्धी विवाद पर्ने हुन्छ । यसैले नातासम्बन्धमा पर्न आएका विवादमा अदालतले अत्यन्तै संवेदनशील तथा गम्भीरतापूर्वक विवादलाई हेर्ने गरी आएको छ । यस्तो विवादलाई सामान्य र सतही आधारमा हेर्ने हो भने व्यक्तिको पहिचान र अधिकारको सुनिश्चिततामा आघात पर्ने हुन्छ । कुनै पनि नारीले आफैँलाई कलंक लाग्ने गरी कसैलाई पति भनी निजसँगको संसर्गबाट आफू गर्भवतीसमेत भएको भनी दोषारोपण गर्नु हाप्रो सामाजिक संरचना र परिवेशमा स्वाभाविक र प्रतीतलायक नदेखिने ।

वादी र प्रतिवादीबिच नाताकायम गरेको हदसम्म सुरु फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको मिति २०७०।०८।१६ को फैसला केही उल्टी भई वादी र प्रतिवादीबिच पति पत्नीको नाता कायम गरिरहनु पर्ने देखिएन । वादी प्रतिवादीका छोरा प्रतिवादीका छोरा नाता कायम हुने ठहरेको हदमा सुरु फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेको हुँदा सो हदमा सदर हुने । फिराद दाबी पूर्ण रूपमा खारेज गरिपाउँ भन्ने हदमा प्रतिवादीको

पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।  
इजलास अधिकृत - तिर्थ लक्ष्मी महर्जन  
कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल  
इति संवत् २०८१ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं. ११

४८

मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७९-WH-०२६९, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, सरोज गौतम वि. नेपाल सरकार, गृह मन्त्रालयसमेत

निवेदन बेहोराबाटै निवेदकलाई स्वास्थ्य उपचारको लागि अस्पताल भर्ना गराएको उल्लेख भएबाट बन्दीलाई उचित व्यवहार गरिएको र लिखित जवाफसाथ पेस गरिएको भेटघाटसम्बन्धी लगबुकको बेहोराबाट आफन्त तथा परिवारजनलाई भेटघाट गर्न दिएकोसमेत देखिन्छ । मुद्दा अनुसन्धानको क्रममा अनुसन्धानकर्ताले न्यायोचित व्यवहार गर्नुपर्छ भन्ने कुरामा दुई मत हुन सक्दैन । कहिलेकाहीं हिरासतमा राखिएको थुनुवामाथि जानी नजानी अमानवीय व्यवहार वा कानूनले बर्जित गरेको कार्य हुन गएमा म्याद थपको लागि साधिकार निकायसमक्ष पेस गरेका बखत अदालतलाई जानकारी गराएमा अदालतबाट तत्कालै त्यसको सम्बोधन हुन सक्ने हुँदा त्यसतर्फसमेत थप विवेचना गरिरहनु परेन । प्रस्तुत विवादमा निवेदकका तर्फबाट र विपक्षीका तर्फबाट उपस्थित हुनुभएका विद्वान्हरूबाट आ-आफ्नो पक्षको हकमा यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तहरू आ-आफ्नै हिसाबले उल्लेख गरेको देखिन्छ । ती सबै उल्लिखित सिद्धान्तहरू विविध प्रकृतिको निवेदन, विवाद, समय सीमा र अवस्थाको वर्णनमा केन्द्रित हुँदा सबैलाई जानकारीमा राखी आत्मसात गरिनु पर्ने ।

तसर्थ, माथि विवेचित निवेदन माग दाबी, लिखित जवाफको बेहोरा, सम्बद्ध प्रचलित कानून

एवम् यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतबाट यी रिट निवेदक धर्मप्रसाद गौतमउपर लगाइएको कसुरमा अनुसन्धान गर्न मिति २०८०।०३।१२ मा कानूनबमोजिम पक्राउ पुर्जी दिई प्रचलित कानूनको अधीनमा रही अधिकारप्राप्त अधिकारीले अनुसन्धानको क्रममा पक्राउ गरी हिरासतमा राखेको देखिँदा निजको थुनालाई गैरकानूनी थुना भनी मान्न मिल्ने अवस्था देखिएन । निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : नीति उप्रेती

कम्प्युटर : मिलन राणा

इति संवत् २०८० साल साउन ५ गते रोज ६ शुभम् ।

४९

मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना र मा.न्या.डा.श्री नहकुल सुवेदी, ०७८-WO-१२४८, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, विष्णुप्रसाद थारू वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहल, काठमाडौं

रिट निवेदकसमेत प्रतिवादी भएको मु.नं.०७४-CR-१४४० नं.को सरकारी छाप दस्तखत कित्ते मुद्दामा विपक्षी काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट यिनै रिट निवेदकको नागरिकतामा भएको वतन तथा हालको स्थायी वतन एउटै भएकोमा उक्त वतनमा म्याद जारी नगरी निवेदकको स्थायी बसोबास नै नभएको वतनमा म्याद जारी गरेबाट निवेदकलाई आफू विरुद्ध चलेको मुद्दाको सुनुवाइको जानकारी हुन नसकी सुनुवाइको मौकाबाट वञ्चित भएको देखिएकोले यी निवेदकको नाउँमा तामेल भएको म्याद कानूनबमोजिम रीतपूर्वक तामेल भएको मान्न मिल्ने देखिएन । काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०४।०४ को बेरितपूर्ण बेपत्ते तामेली म्याद, सोको आधारमा भएको मिति २०७७।०९।२९ को फैसला र सोसँग सम्बन्धित काम कारबाही यी निवेदकको हकमा प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त तथा यस अदालतबाट

प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको विपरीत देखिँदा कायम रहन सक्ने अवस्था नदेखिने ।

तसर्थ, माथि उल्लिखित निवेदन मागदाबी, लिखित जवाफको बेहोरा, प्रचलित कानून तथा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट निवेदकको स्थायी वतनमा म्याद जारी नगरी निवेदकको स्थायी बसोबास नै नभएको जिल्ला बर्दिया शाही गाउँको पिपलको रूखमा काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०४।०४ मा बेपत्ते तामेल भएको म्याद रीतपूर्वकको नदेखिएकोले उक्त बेपत्ते म्याद र सोको आधारमा मिति २०७७।०९।२९ मा ०७४-CR-१४४० नं. को मुद्दामा भएको फैसला निज निवेदक विष्णुप्रसाद थारूको हकमा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब, यी निवेदक प्रतिवादी विष्णुप्रसाद थारूलाई अड्डाको रोहबरमा म्याद बुझाई जे जो बुझ्नुपर्ने हो बुझी पुनः फैसला गर्नु भनी विपक्षी काठमाडौं जिल्ला अदालतको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : जोवन काफ्ले

कम्प्युटर : मिलन राणा

इति संवत् २०८० साल असोज २४ गते रोज ४ शुभम् ।

५०

**मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७९-WH-००३६, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, डोल्मा तामाङ वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहल, काठमाडौंसमेत**

बिगो वा जरिवानाबापत कैदमा बस्नुपर्ने भन्ने विषयसँग सम्बन्धित प्रचलित कानूनी व्यवस्था हेर्दा, मुलुकी देवानी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा २४४ मा “बिगो वा जरिवानाबापत कैद गर्ने सम्पत्ति लिलाम बिक्री गर्दासमेत बिगो पर्याप्त नभएमा, सम्पत्ति नदेखाएमा वा सम्पत्ति लिलाम गर्न नसकिने भएमा भराउन बाँकी बिगोमा बिगो भरिपाउनेले बिगो भराउनुपर्ने व्यक्तिलाई कैद गराउन इच्छा गरी सम्पत्ति लिलाम बिक्री भएको वा यस उपदफाबमोजिमको

अवस्था परेको पन्ध्र दिनभित्र निवेदन दिएमा अदालतले त्यसको पर्चा खडा गरी बिगो भरिदिनुपर्ने व्यक्तिलाई कानूनबमोजिम कैदमा पठाउनुपर्ने छ” । भनी उल्लेख भएको पाइन्छ । प्रस्तुत कानूनी व्यवस्थाबमोजिम नै निज निवेदक डोल्मा तामाङलाई बिगो रकम बुझाउन १५ (पन्ध्र) दिनको म्याद दिइएको र म्यादभित्र तिर्न नसकेको कारणले कानूनबमोजिम लाग्ने सिधा खर्च वादीलाई दाखिला गर्न लगाई मुलुकी देवानी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा २४४ बमोजिम प्रतिवादीलाई थुनामा राख्न पठाइएको अवस्था देखिन्छ । यसरी काठमाडौं जिल्ला अदालतको आदेशबमोजिम नै बिगो असुलीको क्रममा कानूनसम्मत प्रक्रिया अवलम्बन गरी निवेदकलाई कैदमा राखिएको हुँदा निजको थुना गैरकानूनी थुना भन्न मिल्ने अवस्था नदेखिने ।

तसर्थ, माथि विवेचित निवेदन माग दाबी, लिखित जवाफको बेहोरा एवम् सम्बन्धित प्रचलित कानूनी व्यवस्थासमेत बाट यी रिट निवेदक डोल्मा तामाङलाई बिगोको रकम बुझाउन १५ (पन्ध्र) दिनको म्याद दिएको र उक्त म्यादभित्र बिगो असुल हुन नसकेको अवस्थामा बिगो भरिपाउने पक्षले सिधा खर्च राखी कैदमा राख्न माग गरेको अवस्थामा मुलुकी देवानी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा २४४ बमोजिम निज निवेदक डोल्मा तामाङलाई थुनामा राख्न पठाएको देखिँदा निजको थुना गैरकानूनी थुना भन्न मिल्ने अवस्था देखिएन । यस दृष्टिकोणबाट निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : नीति उप्रेती

कम्प्युटर : मिलन राणा

इति संवत् २०७९ साल माघ ६ गते रोज ६ शुभम् ।

५१

**मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा, ०८०-WH-००८८, बन्दीप्रत्यक्षीकरण,**

जियालाल महतो वि. उच्च अदालत पाटनसमेत

निवेदकले यस अदालतमा प्रस्तुत गरेको रिट निवेदन दर्ता गर्दाको अवस्थामासमेत आफ्नो ठेगाना बारा जिल्ला, हाल सिम्रौनगढ नगरपालिका वडा नं. ७ भनी उल्लेख गर्नुका साथै निवेदकले बारा जिल्ला अदालतमा २०७५ सालमा दर्ता गरेको अन्तरिम आदेशसहितको निषेधाज्ञा जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदनमासमेत आफ्नो ठेगाना बारा जिल्ला, सिम्रौनगढ नगरपालिका वडा नं. ७ भनी उल्लेख गरेको देखिन आएको हुँदा निवेदकको समग्र निवेदन जिकिरसँग सहमत हुन सक्ने अवस्था नदेखिने।

तसर्थ, माथि विवेचित निवेदनको तथ्य, लिखित जवाफको बेहोरा तथा सम्बद्ध कानूनी व्यवस्थासमेतका आधारमा निवेदनमा उल्लेख गरेजस्तो अवस्थाको विद्यमानता नदेखिई निज निवेदक जियालाल महतोलाई उच्च अदालत पाटनको बैंकिङ्ग कसुर मुद्दा ०७५-CB-१२९० नं. मा भएको फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा कानूनबमोजिमको प्रक्रिया अपनाई पक्राउ गरी कैदी पुर्जो दिई थुनामा राखिएको देखिँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : निरज पोखरेल

कम्प्युटर : विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०८० साल कार्तिक १५ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. १५

५२

मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७८-WO-०६९२, परमादेश, सिम्रन मानन्धर वि. नेपाल सरकार, गृह मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत

निवेदकहरू नेपालमा जन्मिई आमाको सँगसाथमा रहे बसेका भन्ने देखिएको र निवेदकहरूकी

आमाले वंशजको आधारमा नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र प्राप्त नेपाली नागरिक भन्ने देखिएबाट नेपाली नागरिक बुबा वा आमाबाट नेपालको कुनै भू-भागमा जन्मिएको व्यक्तिले नेपालको नागरिकताको प्रमाणपत्र प्राप्त गर्ने अधिकार रहने नै हुँदा बुबा पत्ता नलागेको कारण देखाई नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र जारी नगर्दा निवेदकहरूको मौलिक हक प्रभावित हुने देखिएकाले उल्लिखित संवैधानिक तथा कानूनी व्यवस्था र यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतका आधारमा अन्य सम्बद्ध कागज हेरी निवेदकहरू सिम्रन मानन्धर र साजन मानन्धरलाई आमाको नामबाट नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र प्रदान गर्नु गराउनु भनी विपक्षी जिल्ला प्रशासन कार्यालय, काठमाडौंसमेतका नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत : देवी चौधरी / दामोदर घिमिरे

कम्प्युटर - प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७९ साल फागुन १७ गते रोज ४ शुभम्।

५३

मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७६-WO-०४७९, उत्प्रेषणसमेत, नानीहेरा बज्राचार्य वि. नेपाल सरकार, गृह मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत

बुबाको नागरिकताको प्रमाणपत्र पेस नभएको र बुबा विदेशी वा स्वदेशी भन्ने यकिन नभएको भन्ने कारण देखाई नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र जारी नगर्दा कानूनानुरूप नेपाली नागरिकता प्राप्त गर्ने निवेदकको मौलिक हकमा प्रतिकूल असर पुग्न जाने अवस्था रहन्छ। यी निवेदक श्रीजा बज्राचार्य वंशजको आधारमा नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र प्राप्त नेपाली नागरिक नानीहेरा बज्राचार्यकी छोरी भएको कुरामा विवाद नरहेको अवस्थामा आमाले प्राप्त गरेको नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्रको आधारमा निज श्रीजा बज्राचार्यलाई नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्रका लागि आवश्यक पर्ने सिफारिस दिनुपर्ने दायित्व स्थानीय

तहको रहेकोमा बुबा आमाको विवाह दर्ता, निवेदकको जन्मदर्तालगायतका कागजात पेस नभएको र बाबु उल्लेख भएको श्याम बज्राचार्य ब्यञ्जनकार नेपाली नागरिक हो होइन ? भन्ने यकिन प्रमाण कागजात पेस भएको नदेखिँदा वंशजको आधारमा श्रीजा बज्राचार्यको नागरिकता सिफारिस गर्न नसकिने भनी मिति २०७६।०४।०८ मा ललितपुर महानगरपालिका वडा नं.९ को कार्यालयले गरेको दरपिठ आदेश कानूनसम्मत नदेखिएकाले उक्त दरपिठ आदेश उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने ठहर्छ । अब, निवेदक श्रीजा बज्राचार्यलाई नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र प्रदान गर्नका लागि आवश्यक सिफारिस प्रदान गर्नु भनी विपक्षी ललितपुर महानगरपालिका वडा नं.९ को वडा कार्यालयका नाममा र निवेदकका अन्य सम्बद्ध कागज हेरी निवेदक श्रीजा बज्राचार्यलाई आमाको नामबाट नेपालको नागरिकता प्रदान गर्नु गराउनु भनी जिल्ला प्रशासन कार्यालय, ललितपुरसमेतको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : देवी चौधरी / दामोदर घिमिरे

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७९ साल फागुन १७ गते रोज ४ शुभम् ।

५४

**मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७५-CR-१३६९, बहुविवाह, सरस्वती तिमिल्सिना लोहनी वि. रेणुका कुमारी पाण्डे लोहनीको जाहेरीले नेपाल सरकार**

मिसिल संलग्न प्रमाणबाट पुनरावेदक / प्रतिवादी रविन्द्र लोहनीको घरमा जेठी श्रीमती एवं छोरासमेत छन् भन्ने कुरा जानी बुझीकन विवाह

गरेको हो भन्ने तथ्य निर्विवादरूपमा पुष्टि हुन सकेको देखिन्छ । प्रतिवादी सरस्वती तिमिल्सिना लोहनीले प्रतिवादी रविन्द्र लोहनीसँग विवाह गरेको कुरालाई स्वीकार गरेकी भए पनि निज रविन्द्र लोहनीकी जेठी श्रीमती भएको कुरा थाहा थिएन भनी अदालतमा बयान गरेको देखिएको र निजलाई प्रतिवादी रविन्द्र लोहनीकी पहिलो श्रीमती रहेको थाहा भएको भन्ने कुरा पुष्टि हुने प्रमाण अभियोजन पक्षबाट पेस हुन आएकोसमेत नदेखिँदा निज प्रतिवादी सरस्वती तिमिल्सिना लोहनीलाई अभियोग दाबीबमोजिम कसुरदार कायम गरी सजाय गरेको उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेको देखिन नआउने ।

तसर्थ, माथि उल्लिखित तथ्य, कानूनी व्यवस्था र गरिएका विवेचनासमेतको आधारमा यी पुनरावेदक/प्रतिवादी सरस्वती तिमिल्सिना लोहनीलाई मुलुकी ऐन, बिहाबारी महलको ९ नं. र १० नं. बमोजिमको कसुरमा सोही महलको १० नं. बमोजिम १ वर्ष ६ महिना कैद र रु.१५,०००।- (पन्ध्र हजार) जरिवानाको सजाय हुने ठहर्‍याई काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।१०।२७ मा भएको फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।११।११मा भएको फैसला पुनरावेदक / प्रतिवादीको हकमा मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई पुनरावेदक / प्रतिवादी सरस्वती तिमिल्सिना लोहनीले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ।

इजलास अधिकृत : अनु याकामी

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७९ साल मङ्सिर १३ गते रोज ३ शुभम् ।